अंतस

अर्धवार्षिक पत्रिका अंक-30, 15 अगस्त 2026

ISSN : 3107-7757

समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका

पृथ्वी 1990

औसत वैश्विक तापमान
15.3 डिग्री सेल्सियस
औद्योगिक क्रांति से पहले के स्तर से लगभग 1 डिग्री से. अधिक

वैश्विक वन आवरण
30.7%
वन आवरण आज की तुलना में अधिक था

ताजे पानी की उपलब्धता
5,000 मी^{3}
प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष मीठे जल की उपलब्धता

विश्व की जनसंख्या
5.3 अरब
प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम था

CO_2 सांद्रण
354 पीपीएम
CO_2 का स्तर आज की तुलना में कम

पृथ्वी 2026

औसत वैश्विक तापमान
16.1 डिग्री सेल्सियस
औद्योगिक क्रांति से पहले के स्तर से लगभग 1.8 डिग्री से. अधिक

वैश्विक वन आवरण
29.2%
वन आवरण 1990 की तुलना में कम हुआ

ताजे पानी की उपलब्धता
4,300 मी^{3}
प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष मीठे जल की उपलब्धता
1990 की तुलना में कम

विश्व की जनसंख्या
8.2 अरब
प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव अधिक

CO_2 सांद्रण
422 पीपीएम
CO_2 का स्तर
1990 की तुलना में कम

एआई द्वारा निर्मित

- पेड़ों का संरक्षण करें अधिक से अधिक वृक्ष लगाएं
- जल की बचत करें भविष्य को सुरक्षित बनाएं
- स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग करें प्रदूषण को कम करें
- नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाएं
- कचरे को कम करें पुनर्चक्रण को अपनाएं

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

नियम-निर्देश

- अंतस के आगामी अंक के प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएं भेजने का कष्ट करें।
- रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आंकड़ों से संबंधित आरेख होना चाहिए।
- अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने वाले अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु किसी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल अथवा राजभाषा प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।
- रचनाएं अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

साभार
संपादक मंडल

अंतस परिवार

संरक्षक
प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल

निदेशन
प्रोफेसर ब्रज भूषण

कुलसचिव
श्री विश्व रंजन

मुख्य संपादक
प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र

संपादक
श्री विजय कुमार पाण्डेय

संपादन सहयोग
प्रोफेसर शिखा दीक्षित
प्रोफेसर कांतेश बालानी
प्रोफेसर अर्क वर्मा
प्रोफेसर ललित सारस्वत
प्रोफेसर अमर कुमार बेहेरा
प्रोफेसर हिमांशु यादव

अनुवाद एवं साहित्यिक सहयोग
श्री जगदीश प्रसाद
श्री दुर्गेश कुमार मिश्र

वर्तनी शोधन
श्री अरविन्द कुमार सैनी

अभिकल्प
श्री नितेश कुमार

छायाचित्र
श्री गिरीश पंत

पूर्व छात्र पुनर्मिलन
1966 बैच
23 फरवरी 2026

नराकास बैठक- 22 मई 2026

गहन हिंदी कार्यशाला
04 मई से 08 मई 2026

भारतीय भाषा उत्सव- 11 दिसंबर 2025

विशेष सहयोग: प्रस्तुत अंक के सभी रचनाकार, समस्त संस्थान कर्मी एवं छात्र हिंदी साहित्य सभा।

संकेतक

शुभेच्छा

निदेशक 03

उप निदेशक 04

कुलसचिव 05

संपादकीय

मुख्य संपादक 06

प्रतिवेदन

59वां दीक्षान्त समारोह 07

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ग्यारहवीं बैठक 09

साक्षात्कार

डॉ. अजित कुमार चतुर्वेदी 10

गुरु दक्षिणा

श्री प्रखर बंसल 13

साहित्यिक यात्रा

समसामयिक वैश्विकी की ओर हमारी भूमिका 17

भारतः विश्व का प्राचीन ज्ञान केंद्र 18

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में फुलब्राइट-नेहरू स्कॉलर प्रोफेसर क्रिस्टोफर काजमारेक का शानदार कार्यकाल 19

समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका (छवि श्रीवास्तवा) 21

समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका (गोविन्द शर्मा) 22

अड़ेगा और लड़ेगा 24

स्याही, सपने और स्क्रीन 25

आईआईटी कानपुर स्टाफ और इंटर आईआईटी प्रतियोगिता का सफर 27

जम्मू-कश्मीर विधान सभा चुनाव-2002 की कुछ अविस्मरणीय पल 29

बुझती लौ 30

शिवानीः हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का संपोषण एवं समन्वय केंद्र 31

ऐसे मिले हम 33

मौन साधु की... बृहत्कथा 34

भाषा-विमर्श

लोकनाट्य 38

तकनीकी लेख

आण्विक संरचना का अनावरणः एकल क्रिस्टल एक्स-रे विवर्तन 39

विरासत

आलस्य-भक्त 43

अतिथि रचनाकार

समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में साहित्यकार की भूमिका 46

बाल बत्तीसी

शर्म की बात 47

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकगण,

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर की हिंदी पत्रिका 'अंतस' के इस नूतन अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस बार का विषय 'समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका' वर्तमान समय की उन चुनौतियों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कराता है, जो मानव सभ्यता के समग्र भविष्य को प्रभावित करती हैं। जलवायु परिवर्तन, बढ़ता वैश्विक तापमान, जल एवं ऊर्जा संसाधनों का तीव्र क्षरण, वन क्षेत्र में निरंतर ह्रास, प्रदूषण तथा जैव विविधता में कमी आज मानव विकास की दिशा और गति दोनों के समक्ष एक चुनौती बने हुए हैं। ऐसे समय में यह उल्लेखनीय है कि विकास और प्रकृति के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए हम अपने वर्तमान के साथ-साथ भावी पीढ़ियों के भविष्य के प्रति भी समान रूप से उत्तरदायी बनें।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का सदैव यह विश्वास रहा है कि विज्ञान, अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी का वास्तविक उद्देश्य समाज के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का उचित समाधान उपलब्ध कराना है। इसी दृष्टि से संस्थान स्वच्छ एवं सतत ऊर्जा, जल संसाधन प्रबंधन, जलवायु विज्ञान, पर्यावरणीय अभियांत्रिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उन्नत विनिर्माण, स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी तथा अन्य बहुविषयक अनुसंधान क्षेत्रों में निरंतर उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। सतत ऊर्जा अभियांत्रिकी विभाग, कोटक स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी तथा गंगा नदी बेसिन प्रबंधन एवं अध्ययन केंद्र (सीगंगा) जैसी पहलें इस दिशा में संस्थान की दूरदर्शी सोच और दीर्घकालिक प्रतिबद्धता का परिचायक हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य केवल नई तकनीकों का विकास करना ही नहीं, बल्कि ऐसे व्यावहारिक और स्थायी समाधान उपलब्ध कराना है, जो समाज, राष्ट्र और वैश्विक समुदाय के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध हों।

प्राकृतिक संसाधन मानव सभ्यता की अमूल्य धरोहर हैं। इनका संरक्षण, शासन एवं तकनीकी संस्थानों के साथ-साथ, प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है। आज आवश्यकता इस बात की है कि वैज्ञानिक सोच, तकनीकी नवाचार और उत्तरदायी जीवनशैली को हम अपने व्यक्तिगत एवं संस्थागत आचरण का अभिन्न अंग बनाएं। छोटे-छोटे प्रयास भी सामूहिक रूप से बड़े-बड़े परिवर्तन का आधार बन सकते हैं।

संस्थान केवल ज्ञान के केंद्र ही नहीं होते, बल्कि वे समाज के भविष्य का निर्माण करने वाले विचारों, मूल्यों और नेतृत्व का भी सृजन करते हैं। यह संस्थान अपने विद्यार्थियों, शोधार्थियों और संकाय सदस्यों में तकनीकी उत्कृष्टता के साथ-साथ पर्यावरणीय संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना विकसित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। मुझे विश्वास है कि हमारे युवा अपनी सृजनात्मकता, नवाचार और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के माध्यम से ऐसी तकनीकों एवं समाधानों का विकास करेंगे, जो मानव जीवन को अधिक सुरक्षित एवं समृद्ध बनाएंगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'अंतस' का यह अंक पाठकों को समकालीन वैश्विक चुनौतियों पर गंभीर चिंतन करने के लिए प्रेरित करेगा तथा यह विश्वास भी सुदृढ़ करेगा कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नवाचार, पर्यावरणीय चेतना और मानवीय मूल्यों के समन्वय से ही हम एक सुरक्षित, समृद्ध, समावेशी और सतत भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

अंत में, 'अंतस' के इस अंक के सफल एवं समयबद्ध प्रकाशन हेतु मैं सभी रचनाकारों, संपादक मंडल तथा प्रकाशन से जुड़े समस्त सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका भविष्य में भी समसामयिक विषयों पर सार्थक विमर्श को प्रोत्साहित करते हुए इस संस्थान के साहित्यिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को समृद्ध करेगी तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

धन्यवाद!

मणीन्द्र अग्रवाल
निदेशक

शुभेच्छा

उप निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

'समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका' विषय पर केंद्रित, विविध समसामयिक एवं उपयोगी रचनाओं से समृद्ध संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' का 30वां अंक आपके समक्ष पाठन हेतु प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। साहित्य मानव जीवन का दर्पण होने के साथ-साथ समाज को दिशा प्रदान करने वाला सशक्त माध्यम भी है। साहित्यिक रचनाएं न केवल मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देती हैं, बल्कि समसामयिक चुनौतियों के समाधान की प्रेरणा भी प्रदान करती हैं।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का परिसर अपनी प्राकृतिक सुंदरता, हरित वातावरण एवं जैव विविधता के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। इस प्राकृतिक धरोहर का संरक्षण एवं संवर्धन करना हम सभी का सामूहिक दायित्व है। प्राचीन संस्कृत सूक्ति 'प्रकृति रक्षति रक्षितः' का अर्थ है कि 'यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे, तो प्रकृति हमारी रक्षा करेगी।' यही भाव पर्यावरण संरक्षण का मूल मंत्र है। हमारे संस्थान में इस आदर्श का जिस प्रकार व्यावहारिक रूप से पालन किया जा रहा है, वह प्रत्येक परिसरवासी के लिए गर्व और आत्मसंतोष का विषय है।

वास्तव में परिसर का यही पर्यावरण यहां के रचनाकारों की साहित्यिक अभिव्यक्तियों में भी सहज रूप से परिलक्षित होता है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में यही संवेदनशील दृष्टिकोण जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर चुनौती का सामना करने में हमारी शक्ति बन सकता है। आज जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरणीय विमर्श का विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह मानव अस्तित्व और भावी पीढ़ियों के भविष्य से जुड़ी एक गंभीर चुनौती बन चुका है। इसलिए समय की मांग है कि हम समस्याओं पर केवल चर्चा ही न करें बल्कि नवीकरणीय ऊर्जा, जल संरक्षण, हरित प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण संरक्षण को दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाएं।

यह संस्थान इस दिशा में निरंतर अग्रणी भूमिका निभा रहा है। संस्थान में ऊर्जा दक्षता, स्वच्छ एवं हरित प्रौद्योगिकी, जल संरक्षण तथा पर्यावरण के अनुकूल अनुसंधान को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। हमारे वैज्ञानिकों, संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों द्वारा विकसित नवीन तकनीकें एवं अनुसंधान न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता को नई ऊंचाइयां प्रदान कर रहे हैं, बल्कि समाज और पर्यावरण के समक्ष उपस्थित चुनौतियों के व्यावहारिक समाधान भी प्रस्तुत कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि विज्ञान, अनुसंधान और नवाचार का यही समन्वय हमें एक सुरक्षित, समृद्ध एवं सतत भविष्य की ओर अग्रसर करेगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'अंतस' के माध्यम से संस्थान के विद्यार्थी, संकाय सदस्य, कर्मचारी एवं अन्य परिसरवासी अपनी रचनात्मक अभिव्यक्तियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन के सतत समाधानों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। यह पत्रिका केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का ही माध्यम नहीं, बल्कि सकारात्मक चिंतन, सामाजिक उत्तरदायित्व और रचनात्मक संवाद का भी एक सशक्त माध्यम है।

राजभाषा प्रकोष्ठ विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं अन्य परिसरवासियों के सहयोग से 'अंतस' का नियमित एवं सफल प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका की विषयवस्तु की गुणवत्ता, भाषा की गरिमा तथा प्रस्तुति की उत्कृष्टता सुनिश्चित करने में संपादकीय मंडल का योगदान भी अत्यंत सराहनीय है। मैं संपादकीय मंडल, राजभाषा प्रकोष्ठ, सभी रचनाकारों तथा इससे जुड़े सभी सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। मुझे विश्वास है कि आप सभी के सतत सहयोग और सक्रिय सहभागिता से 'अंतस' भविष्य में भी साहित्य, ज्ञान, नवाचार और सामाजिक सरोकारों का एक सशक्त मंच बनी रहेगी तथा निरंतर नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगी।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

ब्रज भूषण
उप निदेशक

शुभेच्छा

कुलसचिव की कलम से...

प्रिय पाठकों,

संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' का प्रस्तुत अंक 'समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका' जैसे सारगर्भित विषय पर प्रकाशित हो रहा है।

आज का वैश्विक परिदृश्य तीव्र गति से बदल रहा है। हमारे आस-पास प्रतिदिन अनेक प्रकार की सकारात्मक एवं नकारात्मक घटनाएं घटित हो रही हैं, जिनका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव हमारे जीवन, समाज और पर्यावरण पर पड़ रहा है। वैश्विक स्तर पर भी प्रतिदिन नई-नई घटनाएं एवं समाचार हमें नई चुनौतियों और अवसरों से अवगत कराते हैं। हम अपने चारों ओर देखते हैं कि मनुष्य अपने निजी स्वार्थ अथवा अधिक लाभ प्राप्त करने की चाह में, जहां एक ओर अंधाधुंध जल-दोहन, मिट्टी का अत्यधिक खनन, वनों की कटाई तथा फसलों में कीटनाशकों का बेहिसाब प्रयोग कर रहा है, वहीं दूसरी ओर वायु, जल एवं ध्वनि प्रदूषण को भी बढ़ावा दे रहा है। यह स्थिति न केवल वर्तमान बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर चुनौती बनती जा रही है। यह हम सभी का सामूहिक उत्तरदायित्व है कि हम अपने आस-पास हो रही ऐसी गतिविधियों के प्रति सजग रहें तथा समाज और नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण एवं प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग हेतु जागरूक करें, ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक स्वस्थ एवं सुरक्षित वातावरण प्रदान कर सकें।

एक संस्थान के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी जिम्मेदारियों का गंभीरतापूर्वक निर्वहन कर रहा है। संस्थान के संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करते हुए उच्च गुणवत्ता वाली अनुसंधान परियोजनाओं को मूर्त रूप दे रहे हैं। संस्थान उत्कृष्ट एवं प्रभावी शिक्षण के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान-सृजन के लिए भी विद्यार्थियों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करता है। यह ऐसी युवा प्रतिभाओं का निर्माण करता है जो न केवल तकनीकी रूप से दक्ष हैं, बल्कि अपने-अपने क्षेत्रों में सामाजिक रूप से उत्तरदायी, नवोन्मेषी एवं नैतिक नेतृत्वकर्ता भी हैं तथा समाज एवं वैश्विक कल्याण में योगदान देने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। संस्थान ऐसा वातावरण विकसित करने का निरंतर प्रयास करता है जो विविधता को महत्व देता है, समावेशी संस्कृति को बढ़ावा देता है तथा समुदाय के प्रत्येक सदस्य में अपनत्व की भावना को सुदृढ़ करता है। इसके अतिरिक्त, संस्थान नवप्रवर्तन की संस्कृति को भी प्रोत्साहित करता है, जिससे विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों के बीच रचनात्मक सोच, समस्या-समाधान तथा उद्यमशीलता का विकास हो सके।

संस्थान के अनेक विभाग एवं उत्कृष्टता केंद्र विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट एवं नवोन्मेषी अनुसंधान कार्य कर रहे हैं, जिनसे देश और समाज को लाभ मिल रहा है। ऐसे प्रमुख केंद्रों में सीओआई हब, हरित हाइड्रोजन हेतु नवाचारी एवं एकीकृत पारितंत्र उत्कृष्टता केंद्र, राष्ट्रीय पवन सुरंग सुविधा तथा स्टार्टअप इनक्यूबेशन एंड इनोवेशन सेंटर (एसआईआईसी) उल्लेखनीय हैं, जो अपने-अपने क्षेत्रों में राष्ट्रहित एवं जनकल्याण की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इनके अलावा संस्थान में गंगवाल चिकित्सा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी स्कूल भी निर्माणाधीन है जिससे भविष्य में राष्ट्र को चिकित्सा के क्षेत्र में अतिमहत्वपूर्ण प्रगति मिलेगी।

'अंतस' के इस अंक में अनेक रचनाकारों ने विषय पर आधारित अपने सार्थक लेख एवं रचनाएं प्रस्तुत की हैं, जो निश्चित रूप से पाठकों को पसंद आएंगी तथा उन्हें विचार करने लिए प्रेरित करेंगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादन मंडल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

स्वतंत्रता दिवस की ढ़ेरों शुभकामनाओं के साथ!

विश्व रंजन
कुलसचिव

संपादकीय

मुख्य संपादक की कलम से...

सभी पाठकों को सादर प्रणाम!

अंतस के सभी पाठकों एवं लेखकों को इस 30वें अंक के सफल प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं आभार! साथ ही आप सभी को 80वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

पत्रिका का प्रस्तुत अंक 'समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका' वर्तमान समय में हमें अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन का एहसास कराता है एवं ऐसे और कई तरीकों से अवगत कराता है जो हम सब अपना सकते हैं। नागरिकों के अथक प्रयासों और उपलब्धियों के बिना कोई भी समाज अथवा राष्ट्र अपनी सर्वोच्चता प्राप्त नहीं कर सकता।

हमारा संस्थान विविधताओं से परिपूर्ण है। संस्थान द्वारा पिछले कुछ वर्षों में नवाचार एवं प्रौद्योगिकी को निरंतर समृद्ध करने के उद्देश्य से अनेक उत्कृष्ट केंद्रों की स्थापना की गई है, ताकि इन केंद्रों द्वारा किए जा रहे उन्नत शोध कार्यों का लाभ समाज और देश को प्राप्त हो सके। संस्थान के संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी अपने अध्ययन और शोध-कार्यों के माध्यम से समाज के कल्याण में सराहनीय योगदान दे रहे हैं। जहां संस्थान के संकाय सदस्य, विद्यार्थी एवं कर्मचारी अपने शिक्षण एवं शोध कार्यों में दिनभर व्यस्त रहते हैं, वहीं दूसरी ओर वे अपने लेखों एवं रचनाओं के माध्यम से साहित्यिक अभिव्यक्ति भी करते हैं। संस्थान के परिसरवासी निरंतर अंतस पत्रिका को अपने साहित्यिक लेखन से समृद्ध करते रहे हैं जिसके लिए राजभाषा प्रकोष्ठ उनका आभारी है।

जैसा कि आप लोगों को विदित है कि यह संस्थान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), कार्यालय-3 कानपुर का अध्यक्षीय कार्यालय है एवं निदेशक महोदय इस समिति के अध्यक्ष हैं। यह हर्ष का विषय है कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस नराकास को, नराकास प्रोत्साहन सम्मान के अंतर्गत, राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु सम्मानित किए जाने की घोषणा की गई है। यह सम्मान समारोह दिनांक 14-15 सितंबर 2026 को, माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में आयोजित हिंदी दिवस एवं छठें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान, सिडको प्रदर्शन केन्द्र, नवी मुंबई, महाराष्ट्र में संपन्न होगा।

इस अंक की शुरुआत संस्थान के 59वें दीक्षांत समारोह के प्रतिवेदन से हुई है, जिसका आयोजन 15 जुलाई 2026 को हुआ। इस प्रतिवेदन के अनुसार संस्थान में वर्ष-दर-वर्ष उपाधियों एवं पाठ्यक्रमों की संख्या में वृद्धि हो रही है, जो हम सभी के लिए अत्यंत गौरव का विषय है। तत्पश्चात नराकास की 11वीं बैठक का विवरण है, जिसके माध्यम से नराकास कार्यालय-3, कानपुर के अंतर्गत आयोजित गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की जानकारी मिलेगी।

आगे साक्षात्कार स्तंभ के अंतर्गत आप मिलेंगे प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी से, जिनकी उपलब्धियों की एक लंबी सूची है और जो वर्तमान में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में अपनी विशिष्ट सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। गुरु दक्षिणा में इस बार आपकी मुलाकात होगी श्री प्रखर बंसल से, जिन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के एंडोमेंट (निधि) के लिए निवेश का सफलतापूर्वक प्रबंधन किया।

इस बार की साहित्यिक यात्रा में पत्रिका के मूल विषय पर केंद्रित रचनाओं में प्रोफेसर अमर कुमार बेहेरा की **समसामयिक वैश्विकी की ओर हमारी भूमिका**, सेवानिवृत्त प्रोफेसर केशव कांत की **भारतः विश्व का प्राचीन ज्ञान केंद्र** तथा गोविंद शर्मा की **समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका** जैसी विचारोत्तेजक रचनाएं शामिल हैं। वहीं सुरेन्द्र कुमार की **आईआईटी कानपुर स्टाफ और इंटर आईआईटी प्रतियोगिता का सफर** एक सूचनापरक आलेख है। इसके अतिरिक्त, अतिथि रचनाकार स्तंभ में विश्वनाथ तिवारी 'विश्व' की रचना **समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में साहित्यकार की भूमिका** पाठकों को साहित्यिक रस का आनंद प्रदान करेगी।

इस पत्रिका के समस्त रचनाकारों एवं पाठकों को उनके सतत सहयोग के लिए साधुवाद। पत्रिका का संपादन मंडल उन सभी परिसरवासियों से, जो अभी तक अंतस पत्रिका से नहीं जुड़े हैं, अनुरोध करता है कि वे भी पाठक एवं विशेषतः रचनाकार के रूप में अंतस से जुड़ें तथा गुणवत्तापूर्ण एवं रोचक लेख, रचनाएं और संस्मरण आदि उपलब्ध कराकर इस पत्रिका को और अधिक समृद्ध बनाने में अपना योगदान दें।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

धन्यवाद!

संतोष कुमार मिश्र
मुख्य संपादक

रिपोर्ट

59वां दीक्षान्त समारोह

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में अध्ययनरत रहे विद्यार्थी, संस्थान की विशिष्ट शिक्षण पद्धति तथा प्रयोगशालाओं में होने वाले अनुसंधान कार्यों को अपनी शैक्षणिक दिनचर्या का अभिन्न अंग बना लेते हैं। विद्यार्थी अपने शिक्षकों (गुरुओं) के साथ पठन-पाठन संबधी गतिविधियों में दिन-भर व्यस्त रहते हैं तथा इस दौरान कई विद्यार्थियों के अपने शिक्षकों तथा सहपाठियों के साथ आत्मीय संबंध बन जाते हैं जिन्हें वह जीवनपर्यन्त संजोए रखते हैं। संस्थान के विद्यार्थी देश-विदेश में महत्वपूर्ण संस्थानों तथा परियोजनाओं के प्रमुख के रूप में अपनी विशिष्ट सेवाएं दे रहे हैं जिसके फलस्वरूप वे अपनी मातृ संस्था का लगातार नाम रोशन कर रहे हैं। संस्थान के कई पूर्व छात्रों ने गुरु दक्षिणा के रूप में संस्थान को आर्थिक तथा बौद्धिक सहयोग प्रदान किया है। पूर्व छात्रों से प्राप्त सहयोग से संस्थान में कई विभागों तथा केंद्रों की स्थापना की जा रही है जिसका लाभ संस्थान के विद्यार्थियों तथा परिसरवासियों को मिल रहा है। संस्थान भी गुरु-शिष्य की इस परंपरा का निर्वहन करते हुए अपने विद्यार्थियों को उनकी अनिवार्य शिक्षा समाप्त होने के पश्चात उपाधियां प्रदान करता है। इसी क्रम में, शिक्षा एवं दीक्षा को एक ही मंच से सम्मान प्रदान करने के उद्देश्य से दिनांक 15 जुलाई 2026 को संस्थान के मुख्य ऑडिटोरियम में 59वें दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 3104 विद्यार्थियों को उपाधियां दी गईं जिनमें से 448 विद्यार्थियों को पीएचडी की उपाधियां प्रदान की गईं।

इस संस्थान के पूर्व छात्र एवं पदमश्री से सम्मानित तथा वर्तमान में अंतरिक्ष विभाग के तहत भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केन्द्र (इन स्पेस) के अध्यक्ष डॉ. पवन गोयनका इस दीक्षान्त समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए और विद्यार्थियों को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि जीवन से यह सीखा है कि यह जीवन सौ मीटर की दौड़ नहीं है, जिसे शुरुआत के कुछ कदमों में ही जीत लिया जाए। यह एक लंबी इंजीनियरिंग परियोजना की तरह है जिसमें कई बार असफल प्रयास होते हैं, बार-बार सुधार किए जाते हैं और किसी भी चीज का पहला संस्करण शायद ही कभी अंतिम होता हो। अक्सर सबसे बड़ी सीख और प्रगति कठिन परिस्थितियों से शुरू होती है। उन्होंने विद्यार्थियों को पांच तथ्य हमेशा याद रखने की सीख दी। जीवन में कभी हार मत मानिए, बड़े सपने देखिए और उन्हें पूरा करने का साहस रखिए, लोगों पर भरोसा कीजिए, कभी मत सोचिए कि आप कुछ नया सीखने के लिए बहुत बड़े हो गए हैं और हमेशा अपने दिल की आवाज सुनिए।

समारोह की अध्यक्षता भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के संचालक मंडल के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री जयंत पाटिल ने की। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि इस डिग्री के पीछे वर्षों की मेहनत, अनगिनत रातों की पढ़ाई, चुनौतियों का सामना और यहां तक पहुंचने का पूरा सफर छिपा है। अब आप इस संस्थान से आगे की दुनिया में कदम रख रहे हैं तो याद रखिए कि आप जहां भी जाएंगे अपने साथ आईआईटी कानपुर की पहचान और उसकी गौरवशाली परंपरा को लेकर जाएंगे। आपकी शिक्षा आज समाप्त नहीं हो रही है, बल्कि आज से एक नई शुरुआत हो रही है। ईमानदारी, नवाचार और जीवनपर्यंत सीखते रहने के मूल्यों को हमेशा अपने साथ रखिए। उस समाज को कुछ उपहार स्वरूप वापस करें जिसने आप पर विश्वास किया और आपके विकास में योगदान दिया है।

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल ने जानकारी साझा करते हुए बताया कि पिछले कई दशकों से आईआईटी कानपुर ने अनेक पीढ़ियों को शिक्षित किया है। हर पीढ़ी के सामने अवसर और चुनौतियां अलग-अलग होती हैं, लेकिन जीवन को सार्थक बनाने वाले मूल्य हमेशा एक जैसे रहते हैं। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, धैर्य, विनम्रता और सम्मान जैसे मूल्यों को हमेशा अपने जीवन का हिस्सा बनाए रखें। यही मूल्य आपके निर्णयों का मार्गदर्शन करेंगे। उन्होंने आगे कहा कि मशीन कुछ ही क्षणों में जानकारी प्राप्त कर सकती है, उसका सार प्रस्तुत कर सकती है और समाधान भी दे सकती है लेकिन मानवीय बुद्धिमत्ता की वास्तविक शक्ति सही प्रश्न पूछने, उचित निर्णय लेने, विभिन्न विषयों के साथ संबंध स्थापित करने, नैतिक निर्णय लेने और तकनीक के मानवीय प्रभाव को समझने में निहित है। जीवन भर सीखते रहिए, समय के साथ स्वयं को ढालिए और नए कौशल विकसित करते रहिए।

दीक्षान्त समारोह के दौरान प्रदान की गई उपाधियों का विस्तृत विवरण निम्नवत है-

उपाधि		विद्यार्थियों की संख्या
पीएचडी	-	390
एमटेक पीएचडी (संयुक्त उपाधि)	-	53
एमडेस पीएचडी (संयुक्त उपाधि)	-	01
एमएसआर-पीएचडी (संयुक्त उपाधि)	-	04
एमटेक	-	464
एमटेक (प्रोजेक्ट के साथ)	-	38
एमबीए	-	59
एमडेस	-	36
एमएस (अनुसंधान द्वारा)	-	66
पीजीपीईएक्स-वीएलएफएम	-	40
एमएससी	-	186
ई-मास्टर्स	-	492
डबल मेजर	-	35
दोहरी उपाधि	-	107
एमएस-पीडी (दोहरी उपाधि का एमएस पार्ट)	-	28
बीटेक	-	852
बीटीएच	-	23
बीटीएम	-	5
बीएस	-	212
बीएसएच	-	8
बीएसएम	-	1
बीएससी (ईओडी)	-	4
कुल	-	3104

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर संस्थान के प्रतिभावान छात्रों को विशिष्ट पुरस्कारों एवं मेडल से सम्मानित किया गया। पुरस्कार एवं मेडल प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का विवरण इस प्रकार है-

प्रेसिडेंट गोल्ड मेडलः सागर के वी, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

निदेशक स्वर्ण पदकः आदित्य वी, सांख्यिकी एवं दत्तांश विज्ञान विभाग

निदेशक स्वर्ण पदकः ऋत्विक शंकर, वांतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग

रतन स्वरूप मेमोरियल पुरस्कारः ध्रुव बुद्धिदेव, वांतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग

डॉ. शंकर दयाल शर्मा पदकः राधिका प्रसाद, भौतिकी विभाग

इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रवीणता पदक, सामुदायिक सेवा के मामलों में नेतृत्व करने तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में योगदान देने के लिए अनेक पुरस्कारों एवं पदकों से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त प्रोफेसर दुतिका वत्स, गणित एवं सांख्यिकी विभाग को 'गोपाल दास भंडारी मेमोरियल विशिष्ट अध्यापक पुरस्कार' से सम्मानित किया।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मणीन्द्र अग्रवाल ने पुरस्कार, पदक एवं उपाधि ग्रहण करने वाले समस्त छात्र-छात्राओं, उनके परिवार के सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं दीं तथा दीक्षान्त समारोह में उपस्थित समस्त अतिथियों का स्वागत एवं आभार प्रकट किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ग्यारहवीं बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-3) कानपुर की ग्यारहवीं बैठक का आयोजन समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रज भूषण की अध्यक्षता में दिनांक 22 मई 2026 को संपन्न हुआ। इस बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2) गाजियाबाद के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अजय कुमार चौधरी, राजभाषा प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रोफेसर अर्क वर्मा, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय-3 कानपुर के सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय के साथ-साथ समिति के 25 सदस्य कार्यालयों से कुल 53 विभागाध्यक्षों/वरिष्ठ अधिकारियों/सदस्य सचिवों आदि ने सहभागिता की।

बैठक से पूर्व सभा कक्ष में हिंदी गीत बजाया गया। तत्पश्चात सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय ने समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रज भूषण, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2) गाजियाबाद के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अजय कुमार चौधरी, कुलसचिव श्री विश्व रंजन, राजभाषा प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रोफेसर अर्क वर्मा एवं उपस्थित समस्त कार्यालय प्रमुखों तथा वरिष्ठ अधिकारियों का स्वागत एवं हार्दिक अभिनंदन किया।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2) गाजियाबाद के सहायक निदेशक श्री अजय कुमार चौधरी द्वारा दिनांक 01 जुलाई 2025 से 31 दिसंबर 2025 तक की छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गयी। तत्पश्चात उन्होंने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि आगामी राजभाषा सम्मेलनों में इस नराकास के उत्कृष्ट नराकास से पुरस्कृत होने की प्रबल संभावना है। उन्होनें इस तथ्य को रेखांकित किया कि उनके द्वारा निरीक्षण किए गए कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख एवं प्रतिनिधि बैठक में उपस्थित हैं। उन्होनें विभिन्न कार्यालयों की रिपोर्टों की समीक्षा करते हुए अवगत कराया कि पत्राचार का लक्ष्य शत प्रतिशत प्राप्त किया जाए एवं धारा 3 (3) का दृढ़ता से अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कुछ कार्यालयों की रिपोर्टों में आंकड़ों की त्रुटियों के बारें में भी अवगत कराया। श्री अजय कुमार चौधरी ने संसदीय राजभाषा समिति द्वारा नराकास के हर कार्यालय के निरीक्षण संबंधी महत्व को रेखांकित किया और कार्यालय प्रमुख के नियमित रुप से बैठक में भाग लेने पर जोर दिया। इसके साथ ही उन्होंने नराकास सूचना प्रबंधन प्रणाली पर सही रिपोर्टिंग के माध्यम से उत्कृष्ट नराकास के पुरस्कार को प्राप्त करने का सुझाव दिया।

सदस्य सचिव ने अवगत कराया कि इस नराकास की पत्रिका

'अभिव्यक्तियां' को आईएसएसएन नंबर प्राप्त हो गया है। इसके प्राप्त होने से इस पत्रिका की प्रामाणिकता में संवर्धन होगा जो सभी के लिए फलदायी सिद्ध होगा। सदस्य सचिव ने उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुखों से यह भी अनुरोध किया कि सभी कार्यालय अपने यहां से अधिक से अधिक संख्या में गुणवत्तापूर्ण लेख/रचनाएं उपलब्ध कराएं जिससे पत्रिका का आगामी अंक समय पर प्रकाशित हो सके और इसकी गुणवत्ता भी बनी रहे। सदस्य सचिव ने साथ में यह भी सूचित किया कि आईएसएसएन नंबर प्राप्त होने से हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। पत्रिका का आगामी अंक अक्टूबर माह में होने वाली बैठक के दौरान विमोचित किया जाएगा। पत्रिका प्रकाशन संबंधी कार्य क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा किया जाएगा।

नराकास के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्न है-

दिनांक 26.11.2025 को पावरग्रिड कार्पोरेशन कानपुर द्वारा प्रशासनिक हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। परिणाम निम्नवत है-

क्र सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री हिमांशु अवस्थी	प्रवर श्रेणी लिपिक	कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर	प्रथम
2	श्री सूर्य प्रकाश राठौर	सहायक श्रेणी प्रथम (लेखा)	भारतीय खाद्य निगम लिमिटेड कानपुर	द्वितीय
3	सुश्री आस्था त्रिपाठी	एम.टी.एस.	क्षेत्रीय एगमार्क प्रयोगशाला, कानपुर	तृतीय
4	सुश्री प्रियंका शुक्ला	कनिष्ठ रसायनज्ञ	क्षेत्रीय एगमार्क प्रयोगशाला, कानपुर	सांत्वना

दिनांक 28.01.2026 को इंडियन ऑयल कार्पोरेशन बाटलिंग प्लांट, कानपुर द्वारा हिंदी सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। परिणाम निम्नवत है-

क्र सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1	श्री प्रियंक दुबे	वरिष्ठ अधिकारी	इंडेन डिविजनल कार्यालय, इंडियन ऑयल कार्पोरेशन कानपुर	प्रथम
2	श्री हिमांशु अवस्थी	प्रवर श्रेणी लिपिक	कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर	द्वितीय
3	श्री आलोक प्रताप सिंह	टीजीटी (हिंदी)	केन्द्रीय विद्यालय भा.प्रौ.सं. कानपुर	तृतीय

छमाही के दौरान निम्नलिखित कार्यालयों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया गया। कार्यालयों का विवरण निम्नवत है-

क्र सं.	कार्यालय का नाम
1	इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड, बाटलिंग प्लांट पनकी, कानपुर
2	नेशनल करियर सर्विस सेंटर फार डिफरेंटली एबल्ड, कानपुर
3	कर्मचारी राज्य बीमा निगम चिकित्सालय जाजमऊ, कानपुर

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित कार्यालयों द्वारा आगामी छमाही के दौरान हिंदी की प्रतियोगिताओं को आयोजित करने का निर्णय लिया गया-

(i) कंपनी रजिस्ट्रार, कानपुर - जून माह

(ii) भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम, कानपुर- जुलाई माह

(iii) क्षेत्रीय एगमार्क प्रयोगशाला, कानपुर- अगस्त माह

समिति के अध्यक्ष एवं संस्थान के उप निदेशक प्रोफेसर ब्रज भूषण ने उपस्थित समस्त सदस्यों का स्वागत तथा आभार प्रकट करते हुए कहा कि नराकास की पत्रिका प्रकाशन में सभी सदस्य अपना रचनात्मक योगदान दें और नराकास को उत्कृष्ट नराकास बनाने में अपना सहयोग उपलब्ध कराएं। साथ ही साथ सभी कार्यालय प्रमुखों से आह्वान किया कि समय पर अपनी रिपोर्ट भेजना सुनिश्चित करें और इस बैठक में भागीदारी न करने वाले सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों को भी नराकास की बैठकों में भाग लेने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करें। इसके साथ ही उन्होंने सभी कार्यालयों को नराकास पत्रिका हेतु कम से कम दो लेख प्रेषित करने हेतु निदेशित किया जिससे कि पत्रिका का सफल संपादन संभव हो सके। अध्यक्ष महोदय ने सभी कार्यालय प्रमुखों से आह्वान किया कि वे नराकास की सभी बैठकों में नियमित रूप से भाग लें और इस नराकास को उत्कृष्ट नराकास बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

राष्ट्रगान के साथ बैठक संपन्न हुई!

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी

किसी भी देश के बहुमुखी विकास में कई स्तंभों की महती भूमिका होती है। उनमें से दो स्तंभ प्रमुख हैं- एक है विद्यालय और दूसरा है इसके विद्यार्थी। किसी भी विद्यालय एवं उसके विद्यार्थियों में एक अद्वितीय अन्योन्याश्रित संबंध है। एक दूसरे के सानिध्य में ही दोनों अपनी-अपनी भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन करते हैं। किसी भी विद्यालय की प्रसिद्धि उसके विद्यार्थियों विशेषकर पूर्व विद्यार्थियों द्वारा जानी जाती है। ये पूर्व विद्यार्थी विद्यालय में अपनी शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत 'शिक्षार्थ आइए, सेवार्थ जाइए' की उक्ति को सफलतापूर्वक चरितार्थ करते हैं। इसी क्रम में आईआईटी कानपुर के बहुत से पूर्व छात्र आज विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने में अपने-अपने क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ योगदान दे रहे हैं, जो कि देश के विभिन्न गरिमामयी उच्च पदों पर आसीन हैं एवं इस देश को नित नए शिखर पर ले जाने हेतु दृढ़ संकल्पित हैं। इस प्रतिष्ठित संस्थान से निकले ऐसे अनेक पूर्व छात्रों की एक लंबी शृंखला रही है जो देश को विकसित भारत बनाने की दिशा में चल रही अनेक परियोजनाओं से जुड़कर इस गौरवमयी सपने को साकार करने का कार्य कर रहे हैं। अंतस पत्रिका के 30वें अंक के माध्यम से हम ऐसे ही एक पूर्व छात्र प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी से आपका परिचय करा रहे हैं जो काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में भारत के इस सपने को साकार करने का कार्य रहे हैं। आइए जानते हैं प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदी जी की भावी परियोजनाओं एवं उनके लक्ष्यों के बारे में...

अंतस परिवारः इतने बड़े और प्रतिष्ठित संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) का कुलपति नियुक्त होने पर आपको कैसा लग रहा है? साथ ही, इसके कार्यप्रणाली के मौजूदा सिस्टम में आप क्या बदलाव या सुधार करना चाहेंगे?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः मुझे और मेरे संस्थान आईआईटी कानपुर के लिए यह बहुत सम्मान की बात है कि आईआईटी कानपुर के एक प्रोफेसर को यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। मैं इसे एक ऐसे मंच के तौर पर देखता हूं जहां मैं अपने शैक्षणिक करियर के दौरान सीखे गए विचारों को लागू कर सकूं। शैक्षणिक संस्थानों के कार्यप्रणाली के मामले में, शैक्षणिक और प्रशासनिक दोनों ही तरह के कार्यों में प्रक्रियाओं को और मजबूत बनाने की आवश्यकता है, और इन प्रक्रियाओं का समय के साथ बदलना भी जरूरी है। अगर प्रक्रियाएं एक ही जैसी बनी रहती हैं, तो सिस्टम में परेशानियां आती

हैं; अगर वे समाज के बदलते स्वरूप के साथ सामंजस्य स्थापित करके चलती हैं, तो संस्थान को गौरवान्वित कर सकती हैं। मेरा ध्यान प्रक्रिया-आधारित कार्यप्रणाली पर होगा, चाहे वह शैक्षणिक हो या फिर प्रशासनिक हो।

अंतस परिवारः आपने आईआईटी कानपुर से बी.टेक, एम.टेक और पीएचडी की है और आपको यहां से निकले लगभग 13 वर्ष हो चुके हैं। आईआईटी कानपुर में अध्ययन ने एक विद्यार्थी और एक प्रोफेशनल के रूप पर आपको कैसे परिवर्तित किया?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः मेरा मानना है कि मेरी सोच पर आईआईटी कानपुर में देखी और महसूस की गई चीजों का गहरा प्रभाव पड़ा है। जब मैं विद्यार्थी था, तब शिक्षकों का आपस में कार्य करने का तरीका, उनका विद्यार्थियों के साथ व्यवहार, और बाद में मेरा अपने विद्यार्थियों, सहकर्मियों और संस्थान में उच्च पदों पर पदस्थ जनों के साथ व्यवहार, ये सब मेरे लिए एक बेहतरीन उदाहरण हैं, जिनकी आवश्यकता पड़ने पर मैं मदद ले सकता हूं। साथ ही, मुझे यह भी महसूस होता है कि कोई भी दो संस्थान, चाहे वे आईआईटी हों या विश्वविद्यालय, एक जैसे नहीं होते। विश्वविद्यालय को चलाना बहुत अलग हो सकता है, इसलिए किसी भी चीज को बस कॉपी-पेस्ट करना सही तरीका नहीं होगा। आपको यह देखना होगा कि उस संस्थान में क्या हो रहा है और उसी अनुसार कार्य करना होगा। लेकिन मैं जो भी करता हूं, उसके पीछे कहीं न कहीं वही बातें होती हैं जो मैंने आईआईटी कानपुर में सीखी हैं।

अंतस परिवारः आपने आईआईटी कानपुर में विभागाध्यक्ष, अधिष्ठाता, उप निदेशक और आईआईटी रुड़की में निदेशक जैसे कई पदों पर कार्य किया है; हर भूमिका में आपने कौन सी अलग-अलग बातें सीखीं?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः विभागाध्यक्ष की भूमिका में विद्यार्थियों, शिक्षकों और नॉन-टीचिंग स्टाफ के साथ सीधे बातचीत करनी होती है। कई तरीकों में, यह अलग-अलग आवश्यकताओं और अलग-अलग क्षमताओं वाले हितधारकों (स्टेकहोल्डर्स) वाले परिवार का मुखिया होने जैसा है। चूंकि हर व्यक्ति की अपनी अच्छाइयां और कमियां होती हैं, इसलिए इस भूमिका में यह पहचानना आवश्यक होता है कि कौन सा कार्य, कौन सबसे बेहतर ढंग से कर सकता है और तदनुसार जिम्मेदारियां निर्दिष्ट की जाती हैं।

वहीं, अनुसंधान एवं विकास के अधिष्ठाता या उप निदेशक जैसे पद ज्यादातर संस्थागत होते हैं। इन भूमिकाओं में, किसी विशेष विभाग से जुड़े होने की पहचान को छोड़कर सभी विभागों को एक समान

दृष्टिकोण से देखना आवश्यक होता है, जिससे किसी विभाग से संबंधित होना निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित न करे।

एक और मुख्य अंतर स्तर का है। एक विभाग पूरे संस्थान की तुलना में बहुत छोटा होता है, इसलिए जो तरीके विभाग के स्तर पर कार्य करते हैं, वे सदैव बड़े स्तर पर लागू नहीं हो पाते। संस्थान के स्तर पर कार्य करने के तरीकों को बदलना पड़ता है। इस प्रकार से, भले ही इन भूमिकाओं में कुछ समानताएं हों, लेकिन ये विभाग प्रमुख की भूमिका से काफी अलग होती हैं।

अंतस परिवारः इन नेतृत्व की भूमिकाओं का निर्वहन करने में सबसे बड़ी चुनौतियां कौन सी हैं?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः सबसे बड़ी चुनौती समय की है, क्योंकि दिन में मात्र 24 घंटे ही होते हैं। कार्य का दबाव बहुत ज्यादा हो सकता है, और भले ही कार्यों को अविलंब पूर्ण करने की इच्छा हो, लेकिन ऐसा सदैव संभव नहीं हो पाता है। कभी-कभी ऐसे कारणों से विलंब हो जाता है जो हमारे नियंत्रण में नहीं होते हैं।

कई मुद्दे तो हल हो जाते हैं, लेकिन सीमित समय का तात्पर्य यह भी है कि हर किसी से मिलना सदैव संभव नहीं हो पाता है। इसलिए, वास्तविक चुनौती समय प्रबंधन की है।

अंतस परिवारः आपके अनुभव के आधार पर, विशेष रूप से शैक्षणिक संस्थानों में जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से संभालने के लिए नेतृत्वकर्ताओं में कौन से गुण होने चाहिए?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः सबसे आवश्यक गुण है कि आपसे मिलने आए व्यक्ति की जगह खुद को रखकर उसकी स्थिति को समझना। साथ ही, संस्थान के दीर्घकालीन हितों का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

कभी-कभी किसी विद्यार्थी या संकाय सदस्य की मदद करना संभव हो सकता है, लेकिन अगर इससे संस्थान के दीर्घकालीन हितों को नुकसान पहुंचता हो, तो संस्थान के हितों से समझौता करने के बजाय

कठिन निर्णय लेना ही बेहतर होता है।

अंतस परिवारः एक ही समय में शैक्षणिक और प्रशासनिक जिम्मेदारियां संभालना बहुत कठिन होता है। आपने इसका प्रबंधन कैसे किया?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः यह वास्तव में बहुत कठिन है। कक्षा में पढ़ाने जैसी शैक्षणिक जिम्मेदारियों को सदैव सबसे ज्यादा प्राथमिकता दी जाती है और प्रशासनिक कार्यों पर भी समय पर ध्यान देना आवश्यक होता है, उन्हें विलंबित नहीं किया जा सकता।

परिणामस्वरुप, शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्य, दोनों को ही प्राथमिकता दी जाती है। दुर्भाग्य से, जिन चीजों पर कभी-कभी प्रभाव पड़ा, वे परिवार के साथ व्यतीत किया जाने वाला समय और शोध का कार्य था।

अंतस परिवारः आपके विचार से आज के विद्यार्थी आपके समय के विद्यार्थियों से किस तरह भिन्न हैं?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है, लेकिन इसे समाज में हुए परिवर्तनों के दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। समय, प्रौद्योगिकी, आर्थिक प्रगति और सामाजिक संबंधों में बदलाव आया है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि विद्यार्थियों में भी बदलाव आया है। यह आशा करना वास्तविकता से परे है कि बाकी सब कुछ बदलने के बावजूद विद्यार्थी वैसे ही बने रहेंगे।

इन अंतरों का तात्पर्य यह नहीं है कि मूल्यों या परंपराओं में गिरावट आई है, या यह कि बीता हुआ समय पूर्णतः अच्छा था और आज का समय बुरा है। आज के विद्यार्थी बस भिन्न हैं, न तो बेहतर और न ही बदतर। उदाहरण के लिए, पहले इंटरनेट, मोबाइल फोन, गूगल या फेसबुक नहीं थे। आज विद्यार्थियों के पास इन सभी प्रौद्योगिकियों का एक्सेस है, जिनमें उनका समय लगता है। हालांकि, ये सदैव ध्यान भटकाने वाली चीजें नहीं होती हैं; ये उपयोगी साधन भी हो सकते हैं।

अंतस परिवारः एक शिक्षक और शैक्षणिक नेतृत्वकर्ता के रूप में आपका लंबा अनुभव रहा है। आपके अनुसार, अपनी शैक्षणिक यात्रा में विद्यार्थी ऐसी कौन-सी आम गलतियां करते हैं जो उनके भविष्य को प्रभावित कर सकती हैं?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः विद्यार्थी एक आम गलती करते हैं कि भविष्य में करने वाले कार्य को तय करने में अनावश्यक रूप से जल्दबाजी करना। जल्दबाजी में कोई निर्णय लेने के बजाय अपनी रुचियों और कौशल को पहचानने के लिए समय देना बेहतर होता है।

अगर विद्यार्थी स्वयं को समय और अवसर दें तो उचित मार्ग और ऐसा कार्य खोजने की संभावना काफी बढ़ जाती है जिसे करने में उन्हें वास्तव में आनंद आता है।

अंतस परिवारः किसी भी संस्थान के लिए उसके पूर्व विद्यार्थी (एलुमनाई) किसी धरोहर की तरह होते हैं क्योंकि उनमें बड़े परिवर्तन लाने की क्षमता होती है। इस बारे में आपके क्या विचार है?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः मेरा भी मानना है कि पूर्व छात्रों के अंदर बड़े परिवर्तन लाने की उत्प्रेरक के रुप में क्षमता होती है। बुद्धिमान पूर्व विद्यार्थी यह महसूस करते हैं कि संस्थान को तो स्वयं ही संचालित होना है, लेकिन वे निश्चित रूप से इसमें सहायता कर सकते हैं। वे सही लोगों से संपर्क बना सकते हैं और संस्थान के साथ सार्थक तरीके से जुड़ सकते हैं। यदि वे ऐसा कर पाने में सफल होते हैं तो इससे संस्थान की प्रगति की दिशा में स्पष्ट रूप में द्रष्टव्य अंतर आ सकता है।

अंतस परिवारः आपका बचपन और आपके स्कूल के दिन कैसे थे?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः मैं उन बच्चों में से नहीं था जो सदैव स्कूल जाने के लिए उत्सुक रहते थे, लेकिन साथ ही मैं एक अच्छा विद्यार्थी बनकर अपने शिक्षकों को खुश रखना चाहता था। जब भी मुझसे कोई गलती होती थी, तो मुझे बुरा लगता था। बाद में, जीवन ने मुझे सिखाया कि गलती करने पर बुरा नहीं मानना चाहिए। आप जितनी शीघ्रता से अपनी गलती मान लेते हैं, उतनी ही शीघ्रता से बेहतर चीजों की ओर बढ़ सकते हैं। बचपन में मेरे अच्छे मित्र बने, जो आज भी मेरे साथ हैं।

अंतस परिवारः आईआईटी कानपुर में आपके दिन कैसे थे?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः वह एक ताजी हवा के झोंके जैसा था, जहां मैंने बेहतर गुणवत्ता के शिक्षण और अधिगम का अनुभव किया। वहां की प्रक्रियाएं बहुत पारदर्शी और लोकतांत्रिक थीं, और यह देखना बहुत ज्ञानवर्धक था कि संस्थानों का प्रबंधन कितनी कुशलता से

किया जा सकता है।

अंतस परिवारः क्या कोई ऐसे प्रोफेसर थे जिनका आप पर गहरा प्रभाव पड़ा?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः जी हां, प्रोफेसर पी. आर. के. राव का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे अक्सर भारत के लिए योगदान देने के महत्व के बारे में बात करते थे और पूछते थे कि यदि हर कोई व्यक्ति मात्र अपनी निजी महत्वाकांक्षाओं को ही पूरा करने में लगा रहेगा, तो देश के लिए कौन कार्य करेगा। उनके विचारों का मुझ पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा।

अंतस परिवारः आपने करियर के तौर पर इंजीनियरिंग क्यों चुनी?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः मैंने इंजीनियर बनने के इरादे से जेईई की परीक्षा नहीं दी थी। मैंने यह परीक्षा इसलिए दी थी क्योंकि मुझे आईआईटी कानपुर में फिजिक्स के अंडरग्रेजुएट प्रोग्राम में रुचि थी। अच्छी रैंक आने के बाद, इंजीनियरिंग चुनने का काफी दबाव था और यह सुझाव भी दिया गया कि आवश्यकता पड़ने पर मैं बाद में साइंस में स्विच कर सकता हूं। इस तरह मैं इंजीनियरिंग में आ गया। अंततः इससे कोई विशेष अंतर नहीं पड़ा क्योंकि मैं शिक्षण और शोध के क्षेत्र में चला गया, जहां मैं वास्तव में जाना चाहता था।

अंतस परिवारः क्या आप हमारे साथ कुछ और भी साझा करना चाहते हैं?

प्रोफेसर अजित कुमार चतुर्वेदीः मैं चाहता हूं कि आईआईटी कानपुर उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के मामले में त्वरित गति से आगे बढ़ता रहे। अगर मैं इसमें किसी भी तरह से योगदान दे सकूं, तो मुझे प्रसन्नता होगी।

अंतस परिवारः धन्यवाद...

गुरु दक्षिणा

श्री प्रखर बंसल

किसी भी विद्यालय का उसके विद्यार्थियों के साथ संबंध केवल विद्यालयीन शिक्षा तक ही सीमित न होकर जीवनपर्यंत उसके साथ रहता है। यह संबंध हमें वैदिक परंपरा की शिक्षा में गुरुकुल से लेकर वर्तमान शिक्षा में विद्यालय तक द्रष्टव्य है। जहां गुरु (शिक्षक) जीवन में सर्वांगीण विकास हेतु हर प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है वहीं शिष्य (विद्यार्थी) भी आजीवन गुरु के प्रति कृतज्ञ रहता है और अपनी क्षमतानुसार गुरु को गुरु दक्षिणा के रुप में अपनी कृतज्ञता को निष्ठापूर्वक सम्मानित करता है। इसी क्रम में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का अपने पूर्व छात्रों के साथ सदैव अटूट संबंध रहा है। संस्थान अपने छात्रों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने हेतु सदैव प्रयत्नशील रहता है तथा उनके व्यावसायिक जीवन के विकास में सहभागी बनकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है। संस्थान के पूर्व छात्र पूरे विश्व में अपना परचम लहरा रहे हैं और साथ ही इस संस्थान एवं समाज के प्रति अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन भी कर रहे हैं। पूर्व छात्र संस्थान की बेहतरी के लिए समय-समय पर अपना शैक्षणिक, बौद्धिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करने में हमेशा अग्रणी रहे हैं।

संस्थान की गृह पत्रिका 'अंतस' के इस 30वें अंक में 'गुरु दक्षिणा' शीर्षक के अंतर्गत हम संस्थान के पूर्व मेधावी छात्र एवं वर्तमान में फाउंडर्स एवं एग्जीक्यूटिव्स के लिए 'इंडिपेंडेंट चीफ इन्वेस्टमेंट ऑफिसर' के रुप में कार्यरत श्री प्रखर बंसल जी से मिलते हैं। आइए जानते हैं श्री बंसल जी से जुड़े हुए उनके कुछ अनुभवों, यादों, सफलताओं एवं उपलब्धियों के बारे में!

अंतस परिवारः क्या आप हमें अपने बचपन और आरंभिक जीवन के बारे में कुछ बता सकते हैं?

श्री प्रखर बंसलः मेरा जन्म जोधपुर में हुआ था और छठवीं कक्षा में जयपुर जाने से पहले मैंने अपने आरंभिक ग्यारह वर्ष वहीं व्यतीत किए। मैं ऐसे परिवार में पला-बढ़ा जहां शैक्षणिक उत्कृष्टता एक आम बात थी। मेरे भाई और बहन मुझसे उम्र में दस वर्ष से ज्यादा बड़े होकर डॉक्टर और इंजीनियर बनकर मेरे लिए पहले ही एक मानक निर्धारित कर दिए थे। मेरे पिता प्रोफेसर जे. एल. बंसल राजस्थान यूनिवर्सिटी में गणितज्ञ और फिजिकल साइंस के अधिष्ठाता थे जिसका तात्पर्य है कि समस्याओं को लॉजिकल और एनालिटिकल तरीके से हल करना हमारे घर पर भोजन की मेज पर

होने वाली आम बातचीत का हिस्सा था।

मेरे लिए एक अहम क्षण तब आया जब मैंने 10वीं कक्षा में सीबीएसई की बोर्ड परीक्षा में राज्य में पहला स्थान प्राप्त किया। इस परिणाम ने मुझे विश्वास दिलाया कि मैं वास्तव में प्रतियोगिता में उच्चतम स्तर का परिणाम प्राप्त कर सकता हूं। जयपुर में विश्वविद्यालय परिसर में रहने के कारण, मैं ऐसे छात्रों के बीच था जो आईआईटी के लिए बड़ी तीव्रता से तैयारी कर रहे थे। परिवार की पढ़ाई-लिखाई की मजबूत पृष्ठभूमि और बेहद प्रेरित करने वाले वातावरण के कारण आईआईटी का लक्ष्य रखना मेरे लिए अपनी बौद्धिक क्षमता को सिद्ध करने का सबसे बड़ा मंच और अगला स्वाभाविक कदम लगा।

अंतस परिवारः एक विद्यार्थी के रुप में आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा और आपने उन पर विजय कैसे प्राप्त की?

श्री प्रखर बंसलः आईआईटी कानपुर में सबसे बड़ा झटका तब लगता है जब आप अचानक ऐसे कमरे में होते हैं जहां हर कोई अपने शहर का सबसे होनहार विद्यार्थी रहा हो। छात्रों की प्रतिभा का स्तर वास्तव में बहुत प्रभावशाली था लेकिन शुरुआत में अपनी स्वयं की प्रतिभा को उनके स्तर के अनुसार आंकना और परखना (कैलिब्रेशन) थोड़ी विनम्रता प्रदान करता था। मेरे लिए निजी चुनौती यह थी कि मैं थ्योरेटिकल मैथ (सिद्धांतों पर आधारित गणित) से हटकर अप्लाइड, हाई-प्रेशर इंजीनियरिंग समस्याओं की ओर अग्रसर हो रहा था।

मैंने इस चुनौती का सामना यह समझकर किया कि मैं अकेले इसका सामना नहीं कर सकता हूं। मैंने बहुत अच्छे मित्र बनाए और उनकी सहायता प्राप्त करना सीखा। हमने अपनी शैक्षणिक गतिविधियों में बड़ी ही गंभीरता से सहयोग किया लेकिन साथ ही परिसर के वातावरण और सांस्कृतिक गतिविधियों में सम्मिलित होकर उस गंभीरता को संतुलित भी किया। समस्या से अपने अहंकार को अलग करना और एक बेहतरीन प्रदर्शन करने वाली टीम का हिस्सा बनकर आगे बढ़ना मात्र आईआईटी में स्थायित्व ही नहीं दिया बल्कि यही मेरे पूरे फाइनेंस करियर का आधार भी बना।

अंतस परिवारः आईआईटी कानपुर में आपके विद्यार्थी के दिनों की कोई ऐसी पसंदीदा याद या यादगार घटना क्या है, जिसे याद करके आज भी आपके चेहरे पर मुस्कान आ जाती है?

श्री प्रखर बंसलः जब मैं वर्ष 1990 से वर्ष 1994 के बीच परिसर में व्यतीत किए गए अपने दिनों के बारे में सोचता हूं, तो सबसे

पहले 'कल्फेस्ट' की अत्यधिक प्रभावशाली ऊर्जा याद आती है। आईआईटी कानपुर में शैक्षणिक वातावरण सतत गतिशील था लेकिन हमारा सांस्कृतिक जीवन भी बहुत ही शानदार और जीवंत था। मेरी कुछ पसंदीदा यादें लेक्चर हॉल-7 की हैं जब बैठकर मैं अपने क्लासमेट्स, जो उस समय के बेहतरीन इंजीनियर थे, को गाते, एक्टिंग करते और गिटार बजाते हुए देखता था । वास्तव में, हम अपने 25वें रीयूनियन के लिए वापस गए और उन्हीं इवेंट्स को फिर से किया, जो कि एक बहुत ही अद्भुत और शानदार अनुभव था।

गंभीरता से विचार करुं तो स्टूडेंट काउंसलिंग सर्विस (एससीएस) के साथ वॉलंटियर के रुप में व्यतीत किए गए समय ने मुझ पर दीर्घकालीन प्रभाव डाला। मैंने नए आने वाले विद्यार्थियों को कैंपस कम्युनिटी में घुलने-मिलने में सहायता करने का कार्य किया। इस दौरान मुझे साइकोलॉजी की बेहतरीन प्रोफेसर डॉ. लीलावती कृष्णन के साथ समय व्यतीत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनके द्वारा हुई बातचीत के माध्यम से मुझे जमीन से जुड़े रहने की शिक्षा प्राप्त हुई। उन्होंने मुझे सहानुभूति और मानवीय व्यवहार के बारे में आरंभिक और व्यावहारिक शिक्षाएं प्रदान कीं जो कि वास्तविक रुप में मेरे करियर में किसी भी मैथमेटिकल मॉडल जितनी ही महत्वपूर्ण हैं।

अंतस परिवारः आपको क्या लगता है कि आईआईटी कानपुर को कौन सी विशेषताएं अन्य दूसरे संस्थानों से अलग पहचान प्रदान करती हैं और आपको इसकी कौन विशेषता सबसे ज्यादा पसंद है?

श्री प्रखर बंसलः आईआईटी कानपुर को इसकी भौगोलिक स्थिति आईआईटी दिल्ली या बॉम्बे जैसे संस्थानों से वास्तव में अलग पहचान प्रदान करती है क्योंकि कानपुर शहर छोटा है। इसलिए हम सप्ताहांत पर किसी बड़े शहर की तरह घूमने-फिरने नहीं जाते थे। हम कैंपस में ही रहते थे। यह लगभग टैगोर के गुरुकुल की तरह पूर्णतः आत्मनिर्भर बौद्धिक और सामाजिक इकोसिस्टम था।

क्योंकि कैंपस ही हमारी पूरी दुनिया थी, इसलिए यहां की कम्युनिटी का आपस में बहुत मजबूत संबंध था। यही कारण है कि हॉल-2 के प्रेसिडेंट और मेस सेक्रेटरी के लिए अपने पसंदीदा उम्मीदवारों के लिए जोर-शोर से प्रचार करने जैसी यादें आज भी स्पष्टतः याद हैं। हमें खुद अपना सिस्टम चलाना था, अपनी संस्कृति का निर्माण करना था और एक-दूसरे का साथ देना था। ऐसा वातावरण जो कि ध्यान भटकाने वाली चीजों को दूर कर देता है और आपको बहुत गहरे, जीवनपर्यंत चलने वाले संबंध स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है। आप मात्र आईआईटी कानपुर में पढ़ते ही नहीं हैं बल्कि आप उसे जीते भी हैं। वह कम्युनिटी स्वतंत्रता और पारस्परिक निर्भरता की गहन अनुभूति को जन्म देती है, जो ग्रेजुएशन के बहुत बाद भी आपके कार्य करने के तरीके को आकार देती है।

अंतस परिवारः आपने केमिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की, लेकिन फाइनेंस और इन्वेस्टमेंट के क्षेत्र में एक सफल करियर बनाया। यह सफर कैसे शुरू हुआ?

श्री प्रखर बंसलः आईआईटी कानपुर में रहते हुए ही मुझे पता था कि केमिकल इंजीनियरिंग एक मजबूत आधार तो है लेकिन यह मेरी मंजिल नहीं थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं केलकर लाइब्रेरी की सीढ़ियों पर बैठकर शिकागो जीएसबी में पढ़ने के सपने देखता था जो कि उस समय भी दुनिया के बेहतरीन बिजनेस स्कूलों में से एक था और आज भी है। टेक्नोलॉजी और फाइनेंस के समन्वयन ने मुझे हमेशा से आकर्षित किया था।

आईआईटी के बाद, मैं अपनी एमएस की पढ़ाई के लिए ओहायो स्टेट यूनिवर्सिटी गया, लेकिन मेरे करियर में असली बदलाव तब आया जब मुझे शिकागो में मॉर्निंगस्टार में अपनी पहली नौकरी मिली। मैंने उनके फाइनेंशियल प्रोडक्ट्स के लिए सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट का कार्य किया जो कि मेरे एनालिटिकल बैकग्राउंड और फाइनेंशियल मार्केट्स के बीच एक बेहतरीन कड़ी सिद्ध हुई। उस भूमिका ने यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो बूथ स्कूल बिजनेस में मेरे एमबीए के मार्ग को प्रशस्त किया। वहां से मैं यूनिवर्सिटी की एंडोमेंट टीम में शामिल हुआ जहां मैंने इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टिंग की बारीकियों को सीखा और उन पर कार्य किया।

अंतस परिवारः आपने आईआईटी कानपुर में उदार योगदानकर्ता के रुप में योगदान दिया है और 'प्रोफेसर तपन पी. बागची अवार्ड' और 'प्रोफेसर जे. एल. बंसल बेस्ट पीएचडी थीसिस अवॉर्ड' शुरू किए हैं। इन अवॉड्र्स को शुरू करने के लिए आपको किस चीज ने प्रेरित और प्रोत्साहित किया?

श्री प्रखर बंसलः अपनी 25वीं रीयूनियन के लिए कैंपस वापसी मेरे लिए एक बहुत बड़ा मोड़ सिद्ध हुई। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के एंडोमेंट (निधि) के लिए निवेश का प्रबंधन करते हुए मैंने स्वयं देखा था कि अमेरिकी शिक्षण संस्थानों के लिए पूर्व छात्रों का दान कितना बड़ा बदलाव लाने वाला होता है। मैं आईआईटी कानपुर में भी वैसा ही ढांचागत सहयोग करना चाहता था और मैंने स्वयं इसका उदाहरण बनने का निर्णय लिया।

मैंने इसकी शुरुआत अपने पिता को सम्मानित करके की, जिनका मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव था। वे एक गणितज्ञ थे और उन्होंने आईआईटी कानपुर में प्रोफेसरों के चयन के लिए बनी समितियों में कार्य भी किया था, इसलिए 'प्रोफेसर जे. एल. बंसल अवार्ड' शुरू करना उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करने जैसा महसूस हुआ। अपनी पत्नी निधि की मातृ संस्था आईआईटी दिल्ली में भी ऐसा ही एक अवार्ड शुरू करने के बाद हमने 'प्रोफेसर तपन पी. बागची' को सम्मानित करने के लिए अपना ध्यान वापस आईआईटी कानपुर पर केंद्रित किया। 'ऑपरेशन्स रिसर्च' और 'इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग' पर उनकी कक्षाएं मुझे बहुत पसंद थीं। मेरी यात्रा में उनकी अहम भूमिका थी; उन्होंने ही मुझे शुद्ध इंजीनियरिंग से प्रतिस्थापित करके बिजनेस और फाइनेंस की दुनिया में प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया।

अंतस परिवारः आपने शिकागो यूनिवर्सिटी में इन्वेस्टमेंट मैनेज करने में कई वर्ष बिताए। उस अनुभव से कौन सी महत्वपूर्ण शिक्षाएं सीखीं जिन्हें आईआईटी कानपुर अंगीकार कर सकता है?

श्री प्रखर बंसलः शिकागो यूनिवर्सिटी में, मैंने प्रथम दृष्टया स्वयं देखा कि अमेरिकी संस्थान कैपिटल (पूंजी) के मामले में वास्तविक वैश्विक दृष्टिकोण से कैसे कार्य करते हैं। ऐसी संस्था के लिए जो हमेशा लंबे समय तक चलने के उद्देश्य से बनाई गई हो- जैसे किसी विश्वविद्यालय की स्थायी निधि (एंडोमेंट) – सबसे बड़ी सीख यह है कि इक्विटी में सोच-समझकर निवेश किया जाए।

हालांकि फिक्स्ड इनकम इंस्ट्रूमेंट्स कम समय के लिए सुरक्षा देते हैं, लेकिन दशकों तक महंगाई समायोजित ज्यादा रिटर्न पाने के लिए इक्विटी आवश्यक है। दीर्घावधि में संस्थान की ग्रोथ सुनिश्चित करने के लिए आपको कम समय के उतार-चढ़ाव का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा। आईआईटी कानपुर एक प्राचीन और प्रतिष्ठित संस्थान है; इसे सदियों तक चलने के लिए बनाया गया है। प्रगति के लिए, इसे भी उसी तरह अनंत काल के इन्वेस्टमेंट का दृष्टिकोण अपनाना होगा। इसके अलावा अमेरिकी एंडोमेंट्स बहुत ही मजबूत गवर्नेंस स्ट्रक्चर पर आधारित होते हैं। आईआईटी कानपुर में उन्हीं गवर्नेंस मॉडल्स को लागू करना इसके फाइनेंशियल भविष्य को सुरक्षित करने और वैश्विक स्तर पर अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए सबसे आवश्यक कदम होगा।

अंतस परिवारः आपके प्रोफेशनल सफर में सफल होने में किन विशेषताओं या आदतों ने आपकी सहायता की है?

श्री प्रखर बंसलः हर चीज की शुरुआत एक सपने से होती है। लेकिन उस सपने को सच करने के लिए आपको जुनून और निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता होती है। इसी लगन ने मुझे एक विद्यार्थी के रुप में शुरुआती दिनों से लेकर ग्लोबल फाइनेंस के सर्वोच्च स्तर तक पहुंचने और अंततः 10 बिलियन डॉलर के एंडोमेंट फंड को संभालने में भी सहायता की है।

व्यावहारिक रुप में दैनिक कार्यों में मेरी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि मैं निर्णय कैसे लेता हूं। मैं एक दृढ़ मल्टी-फैक्टर तरीका अपनाता हूं जिसमें किसी भी कठिन स्थिति के लाभ और हानि को अच्छी तरह परखा जाता है जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि मैं साक्ष्यों के आधार पर कार्य कर रहा हूं। हालांकि, इंजीनियरिंग और फाइनेंस दोनों में सबसे बड़ी कठिनाई 'एनालिसिस पैरालिसिस' (बहुत अधिक सोचने-समझने में फंस जाना) है। आपको पता होना चाहिए कि मॉडलिंग कब पूरी हो गई है। एक बार जब कोई रणनीतिक रास्ता चुन लिया जाता है तो मैं सोचने-विचारने से हटकर पूरी तरह से उसे लागू करने पर ध्यान देता हूं। अगर आप उसे वास्तव में लागू नहीं कर सकते तो एक बेहतरीन रणनीति का भी कोई अर्थ नहीं है।

अंतस परिवारः आज अपना करियर शुरू करने वाले विद्यार्थियों को आप क्या परामर्श देंगे?

श्री प्रखर बंसलः एआई के आने से आप एक बिल्कुल अलग दुनिया में कदम रख रहे हैं। जब मानवीय ज्ञान आपकी उंगलियों पर हो, तो मात्र कच्ची जानकारी होना ही आपको दूसरों से अलग नहीं बनाता। अब आपकी जिज्ञासा और सीखने का विनम्र भाव ही आपको सबसे अलग बनाता है।

मेरी सबसे बड़ी परामर्श यह है कि आप सक्रिय रूप से ऐसे लोगों के साथ रहें जो आपसे अधिक समझदार हों। ऐसे लोगों को खोजें जो उन क्षेत्रों में सफल हो रहे हों जिनमें आप आगे बढ़ना चाहते हैं और आप उनके शिष्य बनने के लिए तैयार रहें। इस दौर में सही प्रश्न पूछने, लगातार पढ़ने और अपनी जानकारी के स्तर को हमेशा बेहतर बनाने का बहुत महत्व है।

मैं भविष्य को लेकर बहुत आशावादी हूं। ग्लोबल इकोनमी तो बढ़ती रहेगी लेकिन कार्य करने का तरीका बदल जाएगा जिससे एंटरप्रेन्योर वाली सोच पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो जाएगी। मैंने हाल ही में स्वयं ऐसा किया है कि शिकागो यूनिवर्सिटी में 22 वर्ष व्यतीत करने के बाद मैंने अपनी स्वतंत्र प्रैक्टिस शुरू करने के लिए नौकरी छोड़ दी क्योंकि मैं लंबे समय तक कार्य करते रहना और कुछ नया बनाते रहना चाहता हूं। बदलावों को अपनाएं, जिज्ञासु बने रहें और कभी भी सीखना न छोड़ें।

अंतस परिवारः धन्यवाद...

साहित्यिक यात्रा

समसामयिक वैश्विकी की ओर हमारी भूमिका

भाग एकः युद्ध के समय

जब आकाश में धुआं उठता है,
तो केवल शहर नहीं जलते,
कुछ सपने भी राख हो जाते हैं।
जब सीमाओं पर गोलियां चलती हैं,
तो केवल सैनिक नहीं,
कई मासूम भविष्य भी घायल होते हैं।
दुनिया शक्ति की भाषा लिखती है,
पर मानवता अब भी शांति का अर्थ खोज रही है।
हम युवा हैं-
हथियार नहीं उठाएंगे, विचार उठाएंगे।
ताकि आने वाली पीढ़ियां
युद्ध की कहानियां पढें, युद्ध का जीवन न जिएं।

भाग दोः युद्ध की छाया और हमारी भूमिका

रात के समाचारों में फिर वही दृश्य थे- धुएं से भरे आकाश, भागते हुए लोग, टूटती इमारतें और दुनिया की सबसे शक्तिशाली ताकतों के बीच बढ़ता तनाव। कहीं मिसाइलें थीं, कहीं प्रतिबंध, कहीं कूटनीति, और कहीं भय। ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ते संघर्ष ने एक बार फिर यह प्रश्न हमारे सामने खड़ा कर दिया है कि क्या आधुनिक सभ्यता वास्तव में उतनी विकसित हो चुकी है जितना हम मानते हैं?

हम ऐसे समय में जी रहे हैं जहां कृत्रिम बुद्धिमत्ता नई खोज कर रही है, मनुष्य अंतरिक्ष तक पहुंच चुका है, और दुनिया एक क्लिक पर जुड़ जाती है। फिर भी युद्ध, अविश्वास और शक्ति-प्रदर्शन आज भी वैश्विक राजनीति की भाषा बने हुए हैं।

लेकिन इस परिदृश्य में हमारी भूमिका क्या है?

एक विश्वविद्यालय के छात्र के रूप में शायद हम नहीं रोक सकते। हम शांति समझौते नहीं लिख सकते। हम विश्व शक्तियों की नीतियां भी तय नहीं करते। फिर भी हमारी भूमिका समाप्त नहीं हो जाती, हमारी भूमिका विचारों से शुरू होती है।

जब दुनिया विभाजन की भाषा बोलती है, तब हमें संवाद की भाषा सीखनी होगी। जब सूचनाएं भ्रम और घृणा फैलाती हैं, तब हमें विवेक और सत्य का पक्ष लेना होगा। जब राष्ट्र केवल अपने हितों की बात करते हैं, तब हमें मानवता के व्यापक हित को समझना होगा।

युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं लड़ा जाता; उसका प्रभाव अर्थव्यवस्था, शिक्षा, पर्यावरण और सामान्य नागरिकों के जीवन पर भी पड़ता है। इसलिए वैश्विक घटनाएं हमसे दूर नहीं हैं। वे हमारे भविष्य, हमारी नौकरियों, हमारी ऊर्जा आवश्कताओं और हमारी सामाजिक सोच को भी प्रभावित करती हैं।

आज आवश्यकता ऐसे युवाओं की है जो केवल तकनीकी रूप से ही दक्ष न हों, बल्कि मानवीय दृष्टि से भी संवेदनशील हों। वे विज्ञान को विनाश नहीं, विकास का साधन बनाना चाहते हों। जो राष्ट्रभक्ति और विश्व-मानवता के बीच संतुलन स्थापित कर सकें।

शायद हमारी सबसे बड़ी भूमिका यही है- एक ऐसी दुनिया के निर्माण में योगदान देना जहां शक्ति का अर्थ भय नहीं, बल्कि जिम्मेदारी हो, और प्रगति का अर्थ केवल आर्थिक विकास ही नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा और शांति भी हो।

क्योंकि अंततः इतिहास यह नहीं याद रखता कि किसने सबसे अधिक हथियार बनाए, इतिहास यह याद रखता है कि किसने सबसे कठिन समय में भी मानवता को बचाए रखा।

भाग तीनः हमारी भूमिका

बदल रहा है विश्व निरंतर,
नए विचारों का है सागर।
तकनीकी, विज्ञान, संस्कृति,
मिलकर रचते नया समागम।

कहीं चुनौती, कहीं पे अवसर,
कहीं संघर्ष, कहीं उजियारा।
ऐसे समय में हम सबको,
बनना होगा स्वयं सहारा।

धरती मां की रक्षा करना,
मानवता का मान बढ़ाना।
ज्ञान, परिश्रम और करुणा से,
नया विश्व निर्माण कराना।

हम हैं युवा शक्ति हमारी,
बदल सकेगी कल की धारा।
समसामयिक इस विश्व-पटल पर,
शायद यह भूमिका हमारा।

-प्रोफेसर अमर कुमार बेहेरा
डिजाइन विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

भारत: विश्व का प्राचीन ज्ञान-केंद्र

प्राचीन भारत की वह ज्ञान-परंपरा, जिसने विश्व को दिशा दी और जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

ऑक्सफोर्ड जैसे विश्वविद्यालयों की स्थापना से सदियों पहले, जब यूरोप में बड़े पुस्तकालयों की कल्पना भी नहीं की गई थी, तब भारत विश्व के कुछ सबसे अद्भुत शिक्षण केंद्रों का घर था। ये केवल छोटे शैक्षणिक संस्थान नहीं थे, बल्कि विशाल, आवासीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के ज्ञान-केंद्र थे, जहां चीन, तिब्बत, कोरिया, फारस और अन्य देशों से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे। नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला केवल विश्वविद्यालय नहीं थे, बल्कि इस बात के साक्ष्य थे कि भारत कभी वैश्विक बौद्धिक जीवन के केंद्र में था।

भारत को अक्सर केवल एक भौगोलिक इकाई या आधुनिक राष्ट्र के रूप में देखा जाता है, किंतु इसका वास्तविक स्वरूप इससे कहीं अधिक व्यापक और गहन है। यह एक ऐसी सभ्यता है जिसने सहस्राब्दियों तक ज्ञान, चिंतन और मानवीय मूल्यों का मार्गदर्शन किया। आज जब हम विज्ञान, तकनीक और वैश्वीकरण की बात करते हैं, तब यह प्रश्न स्वाभाविक है- क्या हम अपने उस प्राचीन ज्ञान को पुनः खोज रहे हैं, जिसने कभी विश्व को दिशा दी थी?

ज्ञान की प्राचीन परंपरा

भारत में ज्ञान की परंपरा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह जीवन की गहराई से जुड़ी हुई थी। वेद, उपनिषद और अन्य ग्रंथ केवल धार्मिक साहित्य नहीं, बल्कि दर्शन, प्रकृति, समाज और मानव अस्तित्व के गहन विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। 'ऋत' (Rta) का सिद्धांत यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड एक संतुलित व्यवस्था है, जिसमें मानव को भी सामंजस्य स्थापित करना होता है।

आज जब विश्व 'सतत विकास' (सस्टेनेबिलिटी) और पर्यावरणीय संतुलन की बात करता है, तब यह स्पष्ट होता है कि यह विचार भारतीय चिंतन में हजारों वर्ष पूर्व ही विद्यमान था।

प्राचीन विश्वविद्यालयः ज्ञान के वैश्विक केंद्र

भारत की ज्ञान परंपरा केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह संगठित शैक्षिक संस्थानों के रूप में भी विकसित हुई थी। नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला और शारदा पीठ जैसे विश्वविद्यालय उस समय के विश्वस्तरीय शिक्षा केंद्र थे, जहां दूर-दूर से विद्यार्थी ज्ञान अर्जित करने आते थे।

नालंदा विश्वविद्यालय अपनी कठोर प्रवेश प्रक्रिया और व्यापक पाठ्यक्रम के लिए प्रसिद्ध था, जहां दर्शन, चिकित्सा, गणित और खगोल विज्ञान का गहन अध्ययन होता था। तक्षशिला, जो इससे भी

एआई द्वारा निर्मित

प्राचीन माना जाता है, राजनीति, सैन्य विज्ञान और चिकित्सा जैसे विविध विषयों के लिए विख्यात था। विक्रमशिला और अन्य केंद्रों ने बौद्ध अध्ययन और तर्कशास्त्र को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

इन संस्थानों की विशेषता केवल उनका पाठ्यक्रम नहीं था, बल्कि वहां की खुली बौद्धिक परंपरा, संवाद की संस्कृति और अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप भी था। विभिन्न देशों से आए विद्यार्थी और आचार्य ज्ञान के आदान-प्रदान को एक वैश्विक आयाम देते थे।

परस्पर जुड़े विश्वविद्यालयों का ज्ञान- नेटवर्क

यह समझना भी आवश्यक है कि ये विश्वविद्यालय अलग-थलग संस्थान नहीं थे। ऐतिहासिक और तिब्बती स्रोतों के अनुसार नालंदा, विक्रमशिला, सोमपुर, ओदंतपुरी और जगद्दल जैसे महाविहार एक संगठित नेटवर्क के रूप में कार्य करते थे, जहां विद्वान, ग्रंथ और विचार एक केंद्र से दूसरे केंद्र तक स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होते थे। यह वस्तुतः एक सुव्यवस्थित उच्च शिक्षा प्रणाली थी, जो पूर्वी भारत के विशाल क्षेत्र में फैली हुई थी।

इसके अतिरिक्त गुजरात का वल्लभी और ओडिशा का पुष्पगिरि जैसे संस्थान इस ज्ञान परंपरा को और व्यापक बनाते थे। विशेष रूप से पुष्पगिरि ने दक्षिण-पूर्व एशिया तक ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार प्राचीन भारत केवल ज्ञान का केंद्र ही नहीं, बल्कि एक जीवंत और अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक तंत्र भी था।

विज्ञान, गणित और चिकित्सा में योगदान

भारत की ज्ञान परंपरा अत्यंत व्यापक और बहुआयामी थी। खगोल विज्ञान और ज्योतिष के माध्यम से ग्रहों और समय की सटीक गणना की जाती थी, जबकि वैदिक गणित ने जटिल गणनाओं को सरल बनाने की विधियां विकसित कीं।

शून्य की अवधारणा और दशमलव पद्धति जैसे योगदानों ने आधुनिक

गणित की नींव रखी। आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य जैसे विद्वानों के कार्यों का प्रभाव आज भी विश्व विज्ञान में देखा जा सकता है।

इसी प्रकार आयुर्वेद और शल्य चिकित्सा में उल्लेखनीय प्रगति हुई, जबकि न्याय, वैशेषिक और सांख्य जैसे दार्शनिक विद्यालयों ने तर्क, पदार्थ और अस्तित्व के प्रश्नों पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया।

प्रकृति के साथ संतुलन का दर्शन

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण आधार प्रकृति के साथ संतुलन है। पंचमहाभूत- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि जीवन इन तत्वों के संतुलन पर आधारित है।

वृक्षों की पूजा, नदियों को माता का दर्जा देना और पवित्र वनों (देवराई) की परंपरा यह दर्शाती है कि पर्यावरण संरक्षण केवल वैज्ञानिक आवश्यकता ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मूल्य भी था।

क्या हम पुनः खोज रहे हैं अपना अतीत?

आज योग, आयुर्वेद और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियां वैश्विक स्तर पर पुनः लोकप्रिय हो रही हैं। आधुनिक विज्ञान भी इन प्रणालियों के वैज्ञानिक आधार को समझने का प्रयास कर रहा है।

यह पुनः खोज केवल अतीत की ओर लौटना नहीं है, बल्कि उसे आधुनिक संदर्भ में समझकर आगे बढ़ाना है। यह एक ऐसा संगम हो सकता है, जहां प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान मिलकर भविष्य का मार्ग प्रशस्त करें।

निष्कर्ष

भारत का प्राचीन ज्ञान केवल इतिहास का हिस्सा नहीं है, बल्कि वह एक जीवंत विरासत है, जो आज भी प्रासंगिक है। आवश्यकता इस बात की है कि हम इसे केवल गर्व का विषय न मानें, बल्कि इसे समझें, संरक्षित करें और आधुनिक जीवन में सार्थक रूप से अपनाएं।

यदि हम ऐसा कर पाते हैं, तो भारत पुनः एक बार विश्व को दिशा देने वाला ज्ञान-केंद्र बन सकता है।

-ई. नीरज कांत
प्रबंधक
फिजिक्स वाला
नोएडा

-डॉ. केशव कांत
सेवानिवृत्त प्रोफेसर
यांत्रिक अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर में फुलब्राइट-नेहरू स्कॉलर क्रिस्टोफर काजमारेक का शानदार कार्यकाल

एक अस्थायी पब्लिक आर्टवर्क, 'वॉकिंग ऑन द मून - आईआईटी कानपुर 2026'
बाईं तरफ सेः श्रीमती अमृता भूषण, प्रोफेसर ब्रज भूषण, प्रोफेसर काजमारेक एवं डॉ. भौमिक

जनवरी के आरंभ में एवं सर्दियों की धुंध के बीच, यूएसए की मोंटक्लेयर स्टेट यूनिवर्सिटी के आर्ट एंड डिजाइन विभाग के प्रोफेसर क्रिस्टोफर काजमारेक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान (एचएसएस) विभाग में पांच महीने के लिए फुलब्राइट-नेहरू स्कॉलर के रूप में सम्मिलित हुए। अपने विभाग की ओर से और एक फुलब्राइटर के रुप में मुझे उनकी फेलोशिप के दौरान उनकी मेजबानी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

प्रोफेसर काजमारेक न्यूयॉर्क में रहने वाले एक आर्टिस्ट और एजुकेटर हैं। उनके कार्य में एक्सपेरिमेंटल और पारंपरिक दोनों तरह की कला शैलियां जैसे कि मूर्तिकला, इंस्टॉलेशन, परफॉर्मेंस, वीडियो और सोलर-पावर्ड ऑब्जेक्ट सम्मिलित हैं। उनके ज्यादातर इंटरैक्टिव प्रोजेक्ट्स दर्शकों को अपने आस-पास के वातावरण में अपनी भूमिका के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। हाल ही में, उन्होंने चलने-फिरने को एक कलात्मक गतिविधि के रुप में अपनाने और ऐसी मिलती-जुलती गतिविधि की रचना पर ध्यान दिया है जो कल्पनाशीलता और आशा से परिपूर्ण चीजों को बढ़ावा देती हैं।

उन्होंने अपने कार्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई जगहों पर प्रस्तुत किया है जैसे कि आर्ट सोटरेन (कनाडा), ट्रिनिटी कॉलेज साइंस गैलरी (आयरलैंड), बायजेंटाइन म्यूजियम ऑफ एगियोस जर्मानोस (ग्रीस), न्यूयॉर्क हॉल ऑफ साइंस, रियल आर्ट वेज (कनेक्टिकट), वेक्सनर सेंटर फॉर द आर्ट्स (ओहियो), सिचुआन फाइन आर्ट्स इंस्टीट्यूट (चीन), आर्ट वॉक प्रोजेक्ट्स (स्कॉटलैंड), वॉकिंग आर्ट इंटरनेशनल एनकाउंटर्स (स्पेन) और जोंग इंस्टीट्यूट फॉर कंटेम्परारी आर्ट (दक्षिण कोरिया)।

प्रोफेसर काजमारेक ने परचेज कॉलेज, स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क से विजुअल आर्ट में एमएफए और मॉडर्न एवं कंटेम्परारी आर्ट हिस्ट्री,

थ्योरी और क्रिटिसिज्म में एमए किया है। उन्होंने विजुअल आर्ट्स प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर और आर्ट एंड डिजाइन डिपार्टमेंट के अध्यक्ष के रुप में कार्य किया है। वर्तमान में, वह मोंटक्लेयर स्टेट यूनिवर्सिटी, न्यू जर्सी, यूएसए में इंटरडिसिप्लिनरी आर्ट के एसोसिएट प्रोफेसर हैं।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में क्रिस्टोफर का कार्यकाल कई कारणों से विशेष रहा। वे पहले ऐसे अमेरिकी फुलब्राइट-नेहरू स्कॉलर थे जिन्होंने इस संस्थान में अबाधित पूरा सेमेस्टर व्यतीत किया। साथ ही, वह देश के किसी भी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में विजुअल आर्ट और डिजाइन के विशेष क्षेत्र में पहले फुलब्राइट-नेहरू स्कॉलर भी थे। कैंपस कम्युनिटी पर उनकी उपस्थिति का गहरा प्रभाव पड़ा, जिससे विद्यार्थी और संकाय सदस्य दोनों ही प्रभावित हुए। इस सेमेस्टर में क्रिस्टोफर ने मेरे साथ मिलकर एक कोर्स (आर्ट 703: स्टूडियो आर्ट प्रैक्टिसेज) पढ़ाया। लगभग दस वर्ष पहले, मैंने विशेष रुप से फाइन आर्ट्स पीएचडी विद्यार्थियों के लिए यह 'अनिवार्य पीजी आर्ट कोर्स' तैयार किया था, जिसमें विजुअल आर्ट और डिजाइन में स्टूडियो-बेस्ड लर्निंग पर जोर दिया जाता है। कोर्स के अंत में, मैंने और क्रिस्टोफर ने विद्यार्थियों की बनाई कलाकृतियों की एक प्रदर्शनी आयोजित की, जिसका नाम था 'किनारे-किनारेः अक्रॉस द रिवरबैंक'। यह प्रदर्शनी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के एप्रोच सेल में लगाई गई।

प्रदर्शनी के अलावा, प्रोफेसर काजमारेक ने फरवरी 2026 में 'एन आर्टिस्ट प्रेजेंटेशन इन 2 पार्ट्स' नाम से तस्वीरों और उदाहरणों के साथ एक पब्लिक लेक्चर दिया। उन्होंने मार्च 2026 में कैंपस कम्युनिटी के लिए एक 'ओपन ऑफिस आवर' सत्र भी आयोजित किया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में क्रिस्टोफर का फाइनल प्रोजेक्ट 'वॉकिंग ऑन द मून- आईआईटी कानपुर 2026' (डब्लूओटीएम) नाम का एक अस्थायी पब्लिक आर्टवर्क था। यह इवेंट 20-21 मई 2026 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के मेन ऑडिटोरियम लॉन में हुआ और इसका उद्घाटन संस्थान के उप निदेशक, प्रोफेसर ब्रज भूषण ने किया।

यह आर्टवर्क 1969 में अपोलो 11 के अंतरिक्ष यात्रियों द्वारा चंद्रमा पर की गई चहल-कदमी (ईवीए) के वाकिंग पाथ को 1:1 के पैमाने पर पुनर्निर्मित करता है। चंद्रमा तक की 2,40,000 मील की यात्रा को कैंपस के मैदान में एक छोटे और आसानी से पहुंचने वाले रास्ते में परिवर्तित किया गया।

कैंपस कम्युनिटी के कई सदस्यों जिसमें संकाय सदस्य, विद्यार्थी, विजिटर, स्टॉफ और उनके परिवार ने उस रास्ते पर स्वयं चलने के लिए उस जगह का दौरा किया। इस भागीदारी ने एक बार के,

फुलब्राइट-नेहरू स्कॉलर प्रोफेसर क्रिस्टोफर काजमारेक के साथ डॉ ऋत्विज भैमिक

अलग-थलग इवेंट को एक साझा और बार-बार दोहराए जा सकने वाले अनुभव में परिवर्तित कर दिया। इस आसान कार्य के माध्यम से, आर्टवर्क ने स्केल, खोज, एक्सेसिबिलिटी और मानवीय गतिविधि, तकनीकी उपलब्धि और संस्थागत स्पेस के बीच के संबंध पर सोचने के लिए प्रेरित किया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के बौद्धिक और संस्थागत वातावरण ने इस प्रोजेक्ट के विकास पर काफी प्रभाव डाला।

हमारे संस्थान में फाइन आर्ट्स मुख्य विषयों में से एक नहीं है और मुझे अक्सर लगता है कि इस संस्थान में इसे वह स्थान नहीं मिलता है जिसका यह हकदार है। मैं मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग में फाइन आर्ट्स पीएचडी प्रोग्राम के को-फाउंडर्स में से एक था। अब यह प्रोग्राम देश में विजुअल आर्ट्स, आर्ट हिस्ट्री और विजुअल कम्युनिकेशन के प्रमुख डॉक्टरेट प्रोग्राम्स में से एक बन गया है। लंबे समय से मेरा सपना रहा है कि फाइन आर्ट्स में माइनर कोर्स शुरू किया जाए, साथ ही एमएफए (मास्टर ऑफ आर्ट्स) और बीटेक के साथ एमएफए का डुअल डिग्री प्रोग्राम भी शुरू हो। कई प्रयासों के बावजूद, ये सपने अभी तक पूरे नहीं हो पाए हैं। हालांकि, मेरा मानना है कि कैंपस कम्युनिटी के साथ नियमित बातचीत- जैसे कि प्रदर्शनी, आर्ट पर बातचीत, फाइन आर्ट्स पेपर प्रेजेंटेशन, गेस्ट लेक्चर और हमारे आर्ट स्कॉलर्स के साथ जुड़ाव से काफी प्रभाव पड़ सकता है। इस दिशा में, प्रोफेसर काजमारेक का कार्यकाल आईआईटीके कम्युनिटी के लिए विजुअल आर्ट्स से जुड़ने के नए रास्ते प्रशस्त करने के विश्वास को जागृत करता है। मुझे आशा है कि भविष्य में और ज्यादा आर्टिस्ट रेजिडेंसी और इंटरनेशनल आर्टिस्ट्स के दौरे देखने को मिलेंगे।

-प्रोफेसर ऋत्विज भौमिक
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका

एआई द्वारा निर्मित

जब समय स्वयं प्रश्न बन जाए,
और विश्व दिशा को तरस जाए,
चुनौतियों से हर क्षितिज घिर जाए,
तब युवा उत्तर बनकर आए।

युद्ध की आहट, जलवायु की चेतावनी,
ऊर्जा संकट की बढ़ती कहानी,
हर दिशा में बदलता परिवेश,
दुनिया खोजे संतुलन का संदेश।

मानवता खड़ी दो राहों पर,
निर्णय लिखे भविष्य की डोर,
संघर्ष और समाधान के बीच,
ज्ञान पुकारे- बढ़ो आगे और।

ऐसे युग की इस दहलीज पर,
जहां भविष्य आकार संवारता है,
आईआईटी कानपुर का परिसर,
विश्व को नई दिशा दिखलाता है।

प्रयोगशालाओं की हर धड़कन में,
कल की संभावनाएं जागतीं हैं,
कोड, शोध और नवाचारों से,
नई सभ्यताएं आगे बढ़ाई जाती हैं।

यहां शिक्षा केवल पाठ नहीं,
यहां सोच बनती है पहचान,
स्कूलों में अंकुरित सपने,
गढ़ते हैं भारत का स्वाभिमान।

हरियाली से सजे पार्कों में,
विचारों को मिलती है नई उड़ान,
प्रकृति की शांत गोद में बैठ कर,
जन्म लेता है नव भारत का निर्माण।

अस्पताल सेवा का प्रतीक बने,
मानवता का सच्चा सम्मान,
स्वस्थ तन और जागृत मन से,
मजबूत बने हर इंसान।

जिम की ऊर्जा, योग की साधना,
संतुलन का जीवंत विज्ञान,
शक्ति और शांति संग चलें तो,
उज्ज्वल बनता राष्ट्र महान।

आईआईटी की धरती से उठे विचार,
बन गए हैं विश्व परिवर्तन का आधार,
इन्फोसिस की दूरदर्शी राह,
और जोमैटो की वैश्विक उड़ान।

इंडिगो के पंखों ने छू लिया,
सपनों से भी ऊंचा आसमान।
फॉर्च्यून पांच सौ के नेतृत्व में,
चमके भारतीय प्रतिभा का सम्मान।

शोध, नवाचार और नीति निर्माण में,
गूंज रहा है भारत का स्वाभिमान।

ये पूर्व छात्र नहीं केवल,
भविष्य के पथ-प्रदर्शक हैं,
ज्ञान, सेवा और नेतृत्व से,
विश्व परिवर्तन के सर्जक हैं।

हम दर्शक नहीं इतिहास के,
हम भविष्य के निर्माता हैं,
समसामयिक विश्व के उत्तर हम,
नवयुग के उद्घोषक हैं।

चलो विचारों को कर्म बनाएं,
सीख को सेवा में ढालें,
आईआईटी कानपुर की प्रेरणा से,
विश्व में आशा के दीप जलाएं।

जब ज्ञान बने मानवता का स्वर,
और प्रगति बने सबका अधिकार,
तभी कहीं जाकर होगी हमारी भूमिका साकार,
जब पूरा विश्व बनेगा एक परिवार।

-छवि श्रीवास्तवा
वरिष्ठ सहायक
गणित विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका

बदलती दुनिया, उभरती चुनौतियां और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संकल्प

आज का विश्व तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। विज्ञान, तकनीक, अर्थव्यवस्था, राजनीति, पर्यावरण और संस्कृति- हर क्षेत्र में निरंतर बदलाव दिखाई दे रहे हैं। एक देश में होने वाली घटना का प्रभाव दूसरे देशों पर भी पड़ता है। इसी कारण वर्तमान समय को 'वैश्विक युग' कहा जाता है। ऐसे समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में प्रत्येक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के लिए यह और भी आवश्यक है कि वह विश्व के बदलते स्वरूप को समझते हुए अपनी सकारात्मक और जिम्मेदार भूमिका निभाए।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य अनेक चुनौतियों और अवसरों से भरा हुआ है। जलवायु परिवर्तन, महामारी, युद्ध, आर्थिक असमानता, ऊर्जा संकट, बेरोजगारी, तकनीकी विकास और सांस्कृतिक संघर्ष जैसी समस्याएं आज पूरे विश्व को प्रभावित कर रही हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध, पश्चिम एशिया में संघर्ष, वैश्विक मंदी और महामारी के बाद उत्पन्न आर्थिक कठिनाइयों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आज कोई भी देश अकेला नहीं रह सकता। विश्व की परस्पर निर्भरता पहले से कहीं अधिक बढ़ चुकी है।

ऐसे समय में हमारी भूमिका केवल अपने व्यक्तिगत हितों तक सीमित नहीं रह सकती। हमें वैश्विक नागरिक के रूप में सोचने और कार्य करने की आवश्यकता है। सबसे पहले, पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में हमारी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, जल संकट गहराता जा रहा है और प्राकृतिक आपदाएं बढ़ रही हैं। यदि हम अभी से सावधान नहीं हुए, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है। इसलिए हमें जल, ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग करना चाहिए। वृक्षारोपण, प्लास्टिक का कम उपयोग, स्वच्छ ऊर्जा को अपनाना और पर्यावरण के प्रति जागरूकता का प्रचार-प्रसार करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

इसके अतिरिक्त, तकनीकी विकास के क्षेत्र में भी हमारी भूमिका महत्वपूर्ण है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट, डिजिटल शिक्षा और वैज्ञानिक अनुसंधान ने दुनिया को बदल दिया है। भारत तेजी से डिजिटल क्रांति की ओर बढ़ रहा है। युवा पीढ़ी यदि तकनीक का सही दिशा में उपयोग करे, तो वह न केवल अपने देश बल्कि पूरे विश्व के

एआई द्वारा निर्मित

विकास में योगदान दे सकती है। लेकिन तकनीक का दुरुपयोग, साइबर अपराध और गलत सूचनाओं का प्रसार समाज के लिए खतरा भी बन सकता है। इसलिए डिजिटल नैतिकता और जिम्मेदारी का पालन करना आवश्यक है।

वैश्विक परिदृश्य में शांति और मानवता की रक्षा भी हमारी महत्वपूर्ण भूमिका है। आज विश्व के कई हिस्सों में युद्ध और हिंसा का वातावरण बना हुआ है। ऐसे समय में भारत ने सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात 'पूरा विश्व एक परिवार है' की भावना को आगे बढ़ाया है। हमें जाति, धर्म, भाषा और राष्ट्रीयता से ऊपर उठकर मानवता को प्राथमिकता देनी चाहिए। सहिष्णुता, संवाद और सहयोग की भावना ही विश्व में स्थायी शांति स्थापित कर सकती है।

आर्थिक क्षेत्र में भी हमारी भूमिका महत्वपूर्ण है। आज वैश्विक अर्थव्यवस्था आपस में जुड़ी हुई है। किसी भी एक देश की आर्थिक स्थिति का प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ता है। भारत विश्व की तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया' जैसी योजनाएं भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। युवाओं को कौशल विकास, नवाचार और उद्यमिता की ओर प्रेरित होकर देश की आर्थिक प्रगति में योगदान देना चाहिए। स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देना और स्वदेशी भावना को अपनाना भी राष्ट्रीय विकास में सहायक हो सकता है।

शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में भी हमारी भूमिका अत्यंत आवश्यक है। वैश्वीकरण के कारण विभिन्न संस्कृतियों का आदान-प्रदान बढ़ा है। यह एक सकारात्मक अवसर है, लेकिन इसके साथ अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखना भी आवश्यक है। भारतीय संस्कृति विश्व में अपनी आध्यात्मिकता, सहिष्णुता और नैतिक मूल्यों के लिए प्रसिद्ध

है। योग, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन आज पूरी दुनिया में सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। हमें अपनी भाषा, साहित्य, कला और परंपराओं को संरक्षित करते हुए आधुनिकता को अपनाना चाहिए।

समाज में समानता और न्याय की स्थापना भी वर्तमान वैश्विक संदर्भ में हमारी जिम्मेदारी है। आज भी दुनिया में गरीबी, भुखमरी, लैंगिक भेदभाव और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएं मौजूद हैं। हमें समाज के कमजोर वर्गों की सहायता करनी चाहिए और शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार के अवसर सभी तक पहुंचाने के प्रयास करने चाहिए। महिलाओं का सम्मान, बच्चों की सुरक्षा और मानवाधिकारों की रक्षा किसी भी सभ्य समाज की पहचान होती है।

युवा पीढ़ी की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। युवा किसी भी राष्ट्र की शक्ति और भविष्य होते हैं। यदि युवा जागरूक, शिक्षित और जिम्मेदार होंगे, तो देश और विश्व दोनों का भविष्य उज्ज्वल होगा। युवाओं को केवल नौकरी की तलाश तक सीमित न रहकर समाज सेवा, नवाचार, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्रीय निर्माण में सक्रिय भागीदारी करनी चाहिए। सोशल मीडिया और इंटरनेट का उपयोग सकारात्मक विचारों के प्रसार और ज्ञानवर्धन के लिए किया जाना चाहिए।

कोविड-19 महामारी ने भी हमें कई महत्वपूर्ण सीख दी हैं। इस महामारी ने यह सिद्ध कर दिया कि पूरी मानवता एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। कठिन समय में सहयोग, अनुशासन और संवेदनशीलता की आवश्यकता सबसे अधिक होती है। भारत ने 'वैक्सीन मैत्री' के माध्यम से अनेक देशों की सहायता कर विश्व में मानवता और सहयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि हमारी भूमिका केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक कल्याण से भी जुड़ी हुई है।

महिलाओं की भागीदारी भी वैश्विक विकास के लिए आवश्यक है। जब तक समाज में महिलाओं को समान अवसर और सम्मान नहीं मिलेगा, तब तक वास्तविक प्रगति संभव नहीं हो सकती। आज महिलाएं शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, खेल और व्यापार जैसे क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हमें लैंगिक समानता को बढ़ावा देना चाहिए और महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए। एक समतामूलक समाज ही एक सशक्त विश्व का निर्माण कर सकता है।

समसामयिक वैश्विक परिदृश्य चुनौतियों से भरा जरूर है, लेकिन यह असीम संभावनाओं का द्वार भी खोलता है। इतिहास गवाह है कि

एआई द्वारा निर्मित

जब-जब मानव सभ्यता पर संकट आया है, सामूहिक चेतना ने ही उसे उबारा है।

इस वैश्विक परिदृश्य में 'हमारी भूमिका' किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। व्यक्तिगत स्तर पर पर्यावरण के प्रति सजग होना, सामाजिक स्तर पर रूढ़ियों को तोड़कर प्रगतिशील बनना और राष्ट्रीय स्तर पर विश्व कल्याण की भावना से कार्य करना ही हमारा परम कर्तव्य है। यदि हम सब अपनी इस भूमिका को जिम्मेदारी से निभाएं, तो हम एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकते हैं जो अधिक सुरक्षित, न्यायसंगत, समृद्ध और शांतिपूर्ण हो। आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर दुनिया उपलब्ध करवाना ही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

अंततः यह कहा जा सकता है कि समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका केवल अपने हितों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। हमें स्वयं को एक वैश्विक नागरिक के रूप में देखना होगा। मानवता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय, शांति और सहयोग जैसे मूल्यों को अपनाकर ही हम एक बेहतर विश्व का निर्माण कर सकते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने कर्तव्यों को समझें और अपने छोटे-छोटे प्रयासों से विश्व में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करें।

यदि प्रत्येक व्यक्ति यह संकल्प ले कि वह कोई भी कार्य समाज और मानवता के हित में करेगा, तो निश्चित रूप से आने वाला विश्व अधिक शांतिपूर्ण, समृद्ध और मानवीय होगा। यही हमारी वास्तविक भूमिका और जिम्मेदारी है।

-गोविन्द शर्मा
शिवानी केंद्र
भा.प्रौ.सं. कानपुर

अड़ेगा और लड़ेगा

आज का वैश्विक परिदृश्य युद्ध, संघर्ष, कट्टरता और बढ़ती वैमनस्यता से घिरा हुआ है। विश्व के अनेक भागों में सत्ता, सीमा, विचारधारा और स्वार्थ की लड़ाइयां मानवता को निरंतर पीड़ा पहुंचा रही हैं। ऐसे समय में जब मनुष्य अपनी जिद, अहंकार और वर्चस्व की भावना में उलझकर मनुष्य से ही लड़ने को तत्पर दिखाई देता है, तब प्रेम, करुणा, सहिष्णुता और मानवता का संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

'अड़ेगा और लड़ेगा' केवल एक कविता नहीं, बल्कि आज के समाज और विश्व के लिए एक आत्ममंथन का आह्वान है। यह रचना मनुष्य को उसकी जिद, अहंकार और घृणा के परिणामों से परिचित कराते हुए उसे प्रेम, सेवा, क्षमा और मानवता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। कविता यह संदेश देती है कि सच्ची शक्ति दूसरों को हराने में नहीं, बल्कि स्वयं के अहंकार पर विजय पाने में है और ईश्वर की प्राप्ति मंदिरों-मस्जिदों की परिक्रमा से पहले एक सच्चा मानव बनने में निहित है।

युद्ध और विभाजन के इस दौर में यह कविता मानवता की उस आवाज को स्वर देती है, जो हर दिल से यही प्रश्न पूछती है- 'अपनी ही जिद में तू कब तक और अड़ेगा, इंसान होकर इंसान से कितना और लड़ेगा?'

शीर्षक – अड़ेगा और लड़ेगा

अपनी ही जिद में तू कब तक और अड़ेगा,
इंसान होकर इंसान से कितना और लड़ेगा,
माना तेरी राह अलग है, तेरी सोच निराली है,
पर नफरत की आग में कब तक तू जलेगा।।

अपनी ही जिद में तू कब तक और अड़ेगा,
इंसान होकर इंसान से कितना और लड़ेगा।।

अहंकार की ऊंची दीवारें कब तक तुझे बचाएंगी,
सच की सिर्फ एक आंधी सब कुछ गिरा जाएंगी,
मुट्ठी में आसमान समेटने की चाहत तो अच्छी है,
पर धरती से नाता तो आखिर रखना ही पड़ेगा।।

अपनी ही जिद में तू कब तक और अड़ेगा,
इंसान होकर इंसान से कितना और लड़ेगा।।

कितनी भी कोशिश कर तू भगवान नहीं बन सकता है,
ये सच है, इस सच्चाई से कब तक तू भाग सकता है,
लेकिन तुझे अगर ईश्वर को सच में पाने की इच्छा है,

एआई द्वारा निर्मित

तो सबसे पहले एक सच्चा इंसान बनना पड़ेगा।।

अपनी ही जिद में तू कब तक और अड़ेगा,
इंसान होकर इंसान से कितना और लड़ेगा।।

जिसके मन में दया है, जिसकी वाणी में प्रेम है,
जिसके कर्मों में सेवा है, वही सच्चा नेक है,
मंदिर-मस्जिद घूमने से पहले ये भी तू समझ ले,
हर एक रोते चेहरे पर मुस्कान भी लाना पड़ेगा।।

अपनी ही जिद में तू कब तक और अड़ेगा,
इंसान होकर इंसान से कितना और लड़ेगा।।

झुकना कमजोरी नहीं, यह तो मानवता की शान है,
क्षमा करना ही तो असली साहस की पहचान है,
जो खुद को शक्तिशाली समझता फिरता है जगत में,
उसे अपने अहंकार के कारण एक दिन हारना पड़ेगा।

अपनी ही जिद में तू कब तक और अड़ेगा,
इंसान होकर इंसान से कितना और लड़ेगा।।

इसलिए छोड़कर जिद, थोड़ा दिल को समझा ले,
घृणा की बुझाकर आग प्रेम का दीप जला ले,
भगवान दूर नहीं है, वह तो हर दिल में बसता है,
दिल को साफ कर अपने, इंसानियत को अपनाना पड़ेगा।

अपनी ही जिद में तू कब तक और अड़ेगा,
इंसान होकर इंसान से कितना और लड़ेगा।।

-भरत सोमैया 'भारत'
विद्युत अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

स्याही, सपने और स्क्रीन

मेरी आईआईटी-जेईई यात्रा पेन-पेपर परीक्षा से ऑनलाइन युग तक

आज जब कोई छात्र मोबाइल पर कुछ क्लिक करके जेईई का फॉर्म भर देता है, फोटो अपलोड करता है, फीस जमा करता है और ऑनलाइन परीक्षा देकर वापस घर आ जाता है, तब शायद उसे अंदाजा भी नहीं होता कि कभी यही परीक्षा लाखों कागजों, डाक के बोरों, लोहे के ट्रंकों और सैकड़ों लोगों की मेहनत पर चलती थी।

आज सब कुछ डिजिटल है लेकिन एक समय ऐसा था जब आईआईटी-जेईई केवल एक परीक्षा नहीं थी, वह पूरे देश के सपनों को संभालने वाली एक विशाल मानवीय व्यवस्था थी और मुझे गर्व है कि मैं उस दौर का हिस्सा रहा हूं।

1996 -बदलाव का वर्ष

सन 1996 में मैंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के आईआईटी-जेईई कार्यालय में काम शुरू किया। वह समय आईआईटी-जेईई के इतिहास में एक बड़े परिवर्तन का दौर था। पुरानी मैनुअल व्यवस्था धीरे-धीर ओएमआर आधारित कंप्यूटरीकृत प्रणाली में बदल रही थी। आज यह सुनने में साधारण लगता है, लेकिन उस समय यह बहुत बड़ी तकनीकी चुनौती थी। इंटरनेट नहीं था, ऑनलाइन फॉर्म नहीं थे, ई-मेल के माध्यम से इतने संपर्क नहीं थे और ना ही कोई डिजिटल पोर्टल था। सब कुछ कागजों और मानवीय मेहनत से चलता था।

दो हिस्सों वाला आवेदन फॉर्म

उस समय आवेदन फॉर्म दो भागों में बना होता था। ऊपरी भाग में छात्र की जानकारी, शैक्षिक विवरण एवं श्रेणी संबंधी जानकारी होती थी। निचले भाग में छात्र का फोटो, पता और बारकोड होता था।

दोनों भागों पर एक जैसा बारकोड छपा होता था। फार्म रंगों से भी पहचाने जाते थे। सामान्य श्रेणी के लिए नीले रंग का फार्म एवं एससी/एसटी अभ्यर्थियों के लिए हल्का हरा या सफेद-हरा रंग का फार्म। जेईई कार्यालय इन फार्मों को भारतीय स्टेट बैंक की शाखाओं और विभिन्न जिलों के चयनित परीक्षा केंद्रों पर भेजता था। छात्र वहां से फार्म खरीदते थे। दूरदराज के छात्र पोस्टल ऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट भेजकर डाक से फार्म मंगाते थे। फिर वे फार्म हाथ से भरकर अपने-अपने जोनल जेईई कार्यालयों में डाक द्वारा भेजते थे। हर

एआई द्वारा निर्मित

लिफाफे में किसी छात्र का सपना बंद होता था।

जब डाक के बोरे पहुंचते थे

फार्म जमा होने का समय शुरू होते ही जेईई कार्यालय का दृश्य पूरी तरह बदल जाता था। देशभर से डाक के बोरे आने लगते थे। छोटे गांवों से, पहाड़ी इलाकों से, रेलवे कस्बों से एवं बड़े शहरों से हजारों आवेदन पत्र रोज पहुंचते थे। काम इतना अधिक होता था कि जेईई कार्यालय का नियमित स्टाफ पर्याप्त नहीं पड़ता था। लगभग एक महीने तक कार्यालय में 24 घंटे काम चलता था। संस्थान के दूसरे विभागों के कर्मचारी भी अपना काम समाप्त करने के बाद जेईई कार्य में सहायता करते थे। दिन और रात का फर्क मिट जाता था। कमरों में हर तरफ लिफाफों के ढेर, आवेदन फार्मों के बंडल, स्कैनर, रजिस्टर, बारकोड शीट और लगातार काम करते लोग दिखाई देते थे।

हर फार्म में एक सपना

हमारा पहला काम होता था डाक से आए लिफाफों को बहुत सावधानी से खोलना क्योंकि उनमें केवल कागज नहीं होते थे, उनमें सपने होते थे। किसी किसान के बेटे का सपना... किसी अध्यापक की बेटी का सपना... किसी छोटे शहर के छात्र की उम्मीद... हम हर फार्म ध्यान से जांचते थे। क्या सभी जानकारी सही भरी गई है? क्या फोटो ठीक से चिपकाया गया है? क्या हस्ताक्षर किए गए हैं? क्या प्रमाणपत्र लगाए गए हैं?

गलत फार्म अलग रखे जाते थे

कई बार फोटो ठीक से चिपकाई नहीं जाती थी और लिफाफा खोलते समय निकल जाती थी। ऐसे में हम फोटो के पीछे आवेदन संख्या लिखते थे और उसे सावधानी से दोबारा चिपकाते थे क्योंकि हम नहीं चाहते थे कि एक छोटी सी गलती किसी छात्र का सपना तोड़ दे। त्रुटिपूर्ण फार्म वाले छात्रों को डाक द्वारा या फोन से सूचित किया जाता

था ताकि अंतिम तिथि से पहले सुधार हो सके। उस समय कोई ऑनलाइन करेक्शन विंडो नहीं थी, सब कुछ मानवीय जिम्मेदारी पर चलता था।

स्कैनर और बारकोड का नया दौर

जांच पूरी होने के बाद फार्म को दो हिस्सों में अलग किया जाता था। दोनों भागों पर समान बारकोड होता था। फिर 100-100 फार्मों के बंडल बनाए जाते थे। उस समय प्रोफेसर रजत मोना ने आवेदन फार्मों की प्रोसेसिंग के लिए सॉफ्टवेयर विकसित किया था। हम तीन-तीन फार्म एक साथ फ्लैटबेड स्कैनर पर रखकर स्कैन करते थे। लगभग 90 प्रतिशत आवेदन संख्या बारकोड से अपने आप पढ़ ली जाती थी। बाकी संख्या हाथ से टाइप करनी पड़ती थी। आज यह तकनीक साधारण लग सकती है, लेकिन उस समय यह बहुत बड़ा बदलाव था। हमें महसूस होता था कि हम इतिहास बदलते समय का हिस्सा हैं।

लगातार चलती मेहनत

काम इतना अधिक होता था कि जेईई कार्यालय, कर्मचारियों के लिए नाश्ता, दोपहर का भोजन, चाय एवं रात का भोजन भी उपलब्ध कराता था ताकि कोई समय बर्बाद न हो। कई बार रात के दो-दो बजे तक कार्य चलता था, थकान होती थी, आंखें भारी हो जाती थीं लेकिन जब हम किसी आवेदन पत्र को देखते थे तो याद आता था कि कहीं कोई छात्र अपने एडमिट कार्ड का इंतजार कर रहा है। तब फिर कार्य शुरू हो जाता था क्योंकि यह सिर्फ नौकरी नहीं थी, यह सपनों को मंजिल तक पहुंचाने का कार्य था।

उस समय की आईआईटी जेईई परीक्षा

उस समय आईआईटी जेईई दो चरणों में आयोजित होती थी। स्क्रीनिंग परीक्षा एवं मुख्य परीक्षा। दिसंबर में आयोजित होने वाली स्क्रीनिंग परीक्षा ओएमआर आधारित, बहुविकल्पीय प्रश्नों वाली, 3 घंटे की होती थी। इसी से छात्रों का चयन मुख्य परीक्षा के लिए होता था। मुख्य परीक्षा पूरी तरह पेन-पेपर आधारित होती थी। इसमें भौतिकी, रसायन विज्ञान एवं गणित के अलग-अलग वर्णनात्मक प्रश्नपत्र होते थे। हर पेपर 3 घंटे का होता था और परीक्षा दो दिनों में आयोजित की जाती थी। यह केवल ज्ञान की परीक्षा नहीं थी, यह धैर्य, मानसिक शक्ति और संघर्ष की परीक्षा थी।

सबसे तनावपूर्ण जिम्मेदारी

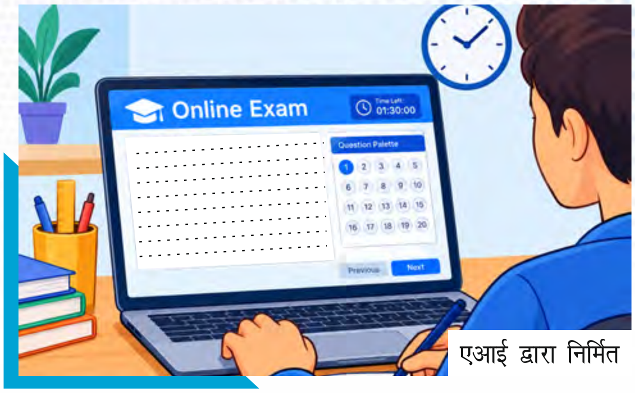

एआई द्वारा निर्मित

मुख्य परीक्षा से पहले सबसे कठिन काम होता था प्रश्नपत्रों को परीक्षा केंद्रों तक सुरक्षित पहुंचाना। हर परीक्षा केंद्र के लिए 6 भारी लोहे के ट्रंक तैयार किए जाते थे, दो भौतिकी के लिए, दो रसायन विज्ञान के लिए एवं दो गणित के लिए। इन ट्रंकों में गोपनीय प्रश्नपत्र और उत्तर पुस्तिकाएं होती थीं। संस्थान के प्रतिनिधि इन्हें स्वयं परीक्षा केंद्रों तक लेकर जाते थे। उस समय सुरक्षा की जिम्मेदारी बहुत बड़ी होती थी। एक छोटी सी गलती हजारों छात्रों के भविष्य को प्रभावित कर सकती थी।

कागज से क्लाउड तक

आज सब कुछ बदल चुका है। अब आवेदन ऑनलाइन होते हैं, फोटो डिजिटल अपलोड होते हैं, एडमिट कार्ड तुरंत डाउनलोड हो जाते हैं, परीक्षा कंप्यूटर पर होती है एवं परिणाम स्वचालित रूप से तैयार हो जाते हैं। नई पीढ़ी शायद कभी नहीं देख पाएगी- डाक के बोरे, फार्मों के पहाड़, फ्लैटबेड स्कैनर, रातभर काम करते कर्मचारी एवं लोहे के भारी ट्रंक, लेकिन मैंने वह दौर देखा है। मैं उस बदलाव का हिस्सा रहा हूं। आज की आधुनिक डिजिटल आईआईटी जेईई व्यवस्था उन अनगिनत लोगों की मेहनत पर खड़ी है जिन्होंने बिना नाम या पहचान के दिन-रात कार्य किया ताकि लाखों छात्रों के सपने सुरक्षित रह सकें। आज जब कोई छात्र ऑनलाइन 'सबमिट' बटन दबाता है, तो शायद उसे पता नहीं होता कि इस डिजिटल व्यवस्था की नींव कभी उन लोगों ने रखी थी जो रातभर बैठकर हाथ से फार्म जांचते थे और शायद यही आईआईटी जेईई की सबसे बड़ी कहानी है- स्याही से स्क्रीन तक की नहीं, बल्कि मेहनत से सपनों तक की यात्रा। मैंने उस दौर को बहुत करीब से देखा है, जब लाखों सपनों को कागज, डाक और मानवीय मेहनत संभालती थी।

-अरविंद मिश्र
तकनीकी अधीक्षक (सेवानिवृत्त)
भौतिकी विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

आईआईटी कानपुर स्टाफ और इंटर आईआईटी प्रतियोगिता का सफर

नमस्कार पाठकों, मैं आईआईटी कानपुर का एक खिलाड़ी आज आपको अपने साथ इंटर आईआईटी प्रतियोगिता के सफर पर ले कर चलूंगा। लेकिन उससे पहले मैं आपको बताना चाहता हूं कि आईआईटी कानपुर स्टाफ के लिए मुख्यतः दो तरह की प्रतियोगिताएं होती हैं जिसमें वह भाग ले सकते हैं-

प्रथम- इंटरा आईआईटी प्रतियोगिताएं

द्वितीय- इंटर आईआईटी प्रतियोगिताएं

इंटरा आईआईटी प्रतियोगिताओं का संचालन आईआईटी कानपुर स्टाफ जिमखाना द्वारा किया जाता है जो साल भर बैडमिंटन, वॉलीबाल, फुटबाल, क्रिकेट, तैराकी, शतरंज एवं पैदल चाल आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कराते हैं।

इंटर आईआईटी प्रतियोगिताएं छात्रों के लिए वर्ष 1961 में प्रारंभ हो गयी थीं, लेकिन स्टाफ को पूरे 23 साल इंतजार करना पड़ा एवं पहली बार वर्ष 1984 में स्टाफ को इस प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसकी मेजबानी आईआईटी कानपुर ने की थी।

दिनांक 24 से 29 दिसंबर 2025 के दौरान हैदराबाद में आयोजित इंटर आईआईटी प्रतियोगिता छात्रों के लिए 58वां संस्करण था, परंतु स्टाफ के लिए 30वां, क्योंकि प्रारंभ के कुछ वर्षो में स्टाफ को लगभग एक-एक वर्ष के अंतराल पर प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर प्राप्त होता था। वर्ष 2000 से यह प्रतियोगिता स्टाफ के लिए भी निरंतर आयोजित होने लगी। आईआईटी कानपुर की महिला सदस्यों को प्रथम बार इस प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर वर्ष 2011 में प्राप्त हुआ, जिसकी मेजबानी आईआईटी खड़गपुर ने की थी।

इन प्रतियोगिताओं का उद्देश्य सभी 23 आईआईटी के बीच आपसी सहयोग और सौहार्द बढ़ाना तथा स्वास्थ्य, फिटनेस और टीमवर्क को प्रोत्साहित करना है।

स्टाफ जिमखाना के वर्तमान पदाधिकारी

चेयरमैन-	प्रो. श्रीनिवास धरावत
सचिव-	श्री वीरेन्द्र सिंह
संयुक्त सचिव-	श्री अरविन्द कुमार वर्मा
कोषाध्यक्ष-	श्री मनोज कुमार वर्मा

इंटर आईआईटी प्रतियोगिताओं में हमारे आईआईटी कानपुर का विभिन्न खेलों में सराहनीय प्रर्दशन निम्नानुसार रहा है-

2014 बॉम्बे- एथलेटिक्स (पुरुष)- तीसरा स्थान (कप्तान- राम कृपाल) (2 गोल्ड, 2 सिल्वर और 1 ब्रॉन्ज)

2016 कानपुर- एथलेटिक्स (पुरुष)- सिल्वर (कप्तान- राम कृपाल) (3 गोल्ड, 3 सिल्वर और 1 ब्रॉन्ज) राम कृपाल (बेस्ट एथलीट)

2017 मद्रास- एथलेटिक्स (पुरुष)- सिल्वर (कप्तान- राम कृपाल) 800 मीटर, 1500 मीटर और डिस्कस थ्रो में पहला स्थान, 4X100 मीटर रिले रेस- दूसरा स्थान एवं 400 मीटर- तीसरा स्थान

एथलेटिक्स (महिला)- सिल्वर (शॉट पुट में पहला और दूसरा स्थान)

2018 गुवाहाटी- एथलेटिक्स (पुरुष)- सिल्वर (कप्तान- राम कृपाल) (5 गोल्ड, 2 सिल्वर और 2 ब्रॉन्ज)

2019 खड़गपुर- एथलेटिक्स (पुरुष)- गोल्ड (कप्तान- राम कृपाल) डिस्कस थ्रो- गोल्ड, हैमर थ्रो- गोल्ड, 800 मीटर- गोल्ड, 1500 मीटर- गोल्ड, 1500 मीटर- ब्रॉन्ज, 400 मीटर- सिल्वर एवं 4X100 रिले- सिल्वर। राम कृपाल (बेस्ट एथलीट)

एथलेटिक्स (महिला)- सिल्वर (शॉट-पुट गोल्ड, डिस्कस थ्रो- गोल्ड, डिस्कस थ्रो- सिल्वर)

2022 दिल्ली- एथलेटिक्स (महिला)

(डिस्कस थ्रो- गोल्ड, शॉट-पुट- सिल्वर, 400 मीटर- सिल्वर एवं 200 मीटर- ब्रॉन्ज)

2023 गांधीनगर- एथलेटिक्स (पुरुष)

200 मीटर- ब्रॉन्ज, 400 मीटर रिले- ब्रॉन्ज, 400 मीटर- चौथा स्थान एवं हैमर थ्रो- चौथा स्थान

एथलेटिक्स (महिला)- ब्रॉन्ज (डिस्कस थ्रो- गोल्ड, शॉट-पुट- ब्रॉन्ज, लांग जंप- ब्रॉन्ज एवं 400 मीटर- चौथा स्थान)

2024 कानपुर- एथलेटिक्स (पुरुष)- गोल्ड (कप्तान- अखिलेश मिश्रा) (1 गोल्ड, 4 सिल्वर और 1 ब्रॉन्ज)

एथलेटिक्स (महिला)- सिल्वर

(डिस्कस थ्रो- सिल्वर, शॉट-पुट- सिल्वर, जैवलिन- सिल्वर, जैवलिन- ब्रॉन्ज, 4X100 मीटर रिले- सिल्वर एवं लांग जंप- ब्रॉन्ज)

2025 हैदराबादः कप्तान- एथलेटिक्स (पुरुष) कप्तान- देवेंद्र सिंह (100 मीटर दौड़ 55 वर्ष- ब्रॉन्ज, 5000 मीटर दौड़ 50 वर्ष- ब्रॉन्ज, 1500 मीटर दौड़- चौथा स्थान, हैमर थ्रो- चौथा स्थान एवं 4X100 मीटर रिले- चौथा स्थान)

एथलेटिक्स (महिला)

डिस्कस थ्रो- गोल्ड, शॉट-पुट- सिल्वर, जैवलिन- सिल्वर, जैवलिन- ब्रॉन्ज, 4X100 मीटर रिले- ब्रॉन्ज एवं लांग जंप- चौथा स्थान

-सुरेन्द्र कुमार
कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक
रसायन विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

आईआईटी कानपुर, इंटर आईआईटी स्टाफ प्रतियोगिता के आंकड़े

साल	मेजबान	बैडमिंटन		बास्केटबाल		क्रिकेट		फुटबाल		स्क्वैश		वॉलीबाल		समग्र कानपुर की कुल स्थिति
		स्थान	कप्तान	स्थान	कप्तान	स्थान	कप्तान	स्थान	कप्तान	स्थान	कप्तान	स्थान	कप्तान	———
2009	कानपुर	———	———	गोल्ड	सरोज रावत	सिल्वर	मनोहर कनौजिया	———	———	—	———	ब्रॉन्ज	श्री अमित दोहरे	———
2010	दिल्ली	———	———	सिल्वर	सरोज रावत	गोल्ड	मनोहर कनौजिया	ब्रॉन्ज	सुनील कुमार	—	———	सिल्वर	श्री अमित दोहरे	———
2011	खड़गपुर	———	———	सिल्वर	सरोज रावत	गोल्ड	मनोहर कनौजिया	चौथा स्थान	मनोहर उंराव	—	———	—	———	———
2012	रुड़की	———	———	गोल्ड	सरोज रावत	सिल्वर	डॉ. एनआर पात्रा	ब्रॉन्ज	डॉ. सोवन दास	—	———	—	———	———
2013	गुवाहाटी	———	———	गोल्ड	सरोज रावत	गोल्ड	डॉ. एनआर पात्रा	गोल्ड	डॉ. सोवन दास	—	———	ब्रॉन्ज	श्री शीतला प्रसाद त्रिपाठी	चैंपियन (पहला स्थान)
2014	बॉम्बे	गोल्ड		गोल्ड	डॉ. कुमार रवि प्रिया	सिल्वर	डॉ. एनआर पात्रा	गोल्ड	डॉ. सोवन दास	—	———	चौथा स्थान	डॉ. नीरज मिश्रा	रनर-अप (दूसरा स्थान)
2015	चेन्नई में बाढ़ के कारण रद्द													
2016	कानपुर	गोल्ड	———	गोल्ड	रमेश सिंह	गोल्ड	डॉ. एनआर पात्रा	गोल्ड	डॉ. देबोपम दास	—	———	गोल्ड	डॉ. राम बिलास(टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी)	चैंपियन (पहला स्थान)
2017	मद्रास	गोल्ड (पुरुष) सिल्वर (महिला)	———	गोल्ड	रमेश सिंह	———	———	गोल्ड	डॉ. देबोपम दास	—	———	चौथा स्थान	श्री शीतला प्रसाद त्रिपाठी	चैंपियन (पहला स्थान)
2018	गुवाहाटी	———	———	ब्रॉन्ज	रमेश सिंह	———	———	क्वार्टर-फाइनल	डॉ. जॉयदीप चक्रवर्ती	—	———	ब्रॉन्ज	श्री शीतला प्रसाद त्रिपाठी	———
2019	खड़गपुर	सिल्वर (पुरुष) ब्रान्ज (महिला)	———	सिल्वर	रमेश सिंह	टॉस से सेमीफाइनल हारे	नागेश कुमार	सिल्वर	सुनील कुमार	—	———	सिल्वर	श्री अमित दोहरे	रनर-अप (दूसरा स्थान)
2020 2021	कोविड-19 महामारी के कारण रद्द													
2022	दिल्ली	गोल्ड	डॉ. कांतेश बलानी	सिल्वर	रमेश सिंह	———	———	ब्रांज	डॉ. देबोपम दास	ब्रॉन्ज	डॉ. रजत मित्तल	ब्रॉन्ज	डॉ. चिन्मय कोले	———
2023	गांधीनगर	चौथा (पुरुष) दूसरा (महिला)	डॉ. कांतेश बलानी	गोल्ड	अरविंद आशीष (श्री प्रदीप कुमार मिश्रा, टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी)	क्वार्टर-फ़ाइनल	डॉ धर्मराजा अलिमुथु	गोल्ड	डॉ. ताजदारुल हसन सैयद (श्री संतोष यादव टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी)	सिल्वर	डॉ. रजत मित्तल	चौथा स्थान	डॉ. चिन्मय कोले	रनर-अप (दूसरा स्थान)
2024	कानपुर	क्वार्टर-फाइनल (पुरुष) सिल्वर (महिला)	डॉ. कांतेश बलानी	सिल्वर	अरविंद आशीष	———	———	गोल्ड	डॉ. ताजदारुल हसन सैयद (श्री हरि बाबू प्रजापति, टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी)	सिल्वर	सत्य शिव शंकर राव के (डॉ. ईशान शर्मा, टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी)	ब्रॉज	डॉ. चिन्मय कोले	चैंपियन (पहला स्थान)
2025	हैदराबाद	चौथा स्थान (महिला)	———	ब्रॉन्ज	अरविंद आशीष	क्वार्टर-फ़ाइनल	डॉ. धर्मराजा अलिमुथु	चौथा स्थान	डॉ. ताजदारुल हसन सैयद	गोल्ड	सत्य शिव शंकर राव के (डॉ. नवीस, टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी)	चौथा स्थान	डॉ. चिन्मय कोले	चौथा स्थान

जम्मू-कश्मीर विधान सभा चुनाव- 2002 के कुछ अविस्मरणीय पल

वर्ष 2002 के सितंबर माह की बात है जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद चरम पर था और सीमा पर दोनो देश भारत और पाकिस्तान के बीच तना-तनी थी। उस समय हमारे देश के प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी बाजपेई थे। जम्मू-कश्मीर विधान सभा चुनाव होना था। वहां के राज्य कर्मचारीगण आतंकवादियों की धमकियों से डर कर चुनाव ड्यूटी के लिए तैयार नहीं थे। प्रधानमंत्री के आदेश से यूपी और पंजाब के टेक्निकल कर्मचारी पीठासीन अधिकारी के लिए और उर्दू टीचर को उर्दू में लिस्ट पढ़ने के लिए भेजे जाने थे। इसमें आईआईटी कानपुर से भी 20 टेक्निकल कर्मचारियों को नामित किया गया जिनमें से मैं भी एक था। उस समय आईआईटी के निदेशक श्री संजय गोविंद धांडे थे। सभी को निदेशक ने अपने ऑफिस में बुलाया और सभी को बताया कि देश-हित के लिए आप सभी को जाना है। सभी लोग जाने के लिए तैयार नहीं थे। समझाया कि आप जाइए और वहां सुरक्षा बल के जवान आपके साथ रहेंगे। मैंने निदेशक से बताया कि मैंने अभी तक किसी भी चुनाव ड्यूटी में हिस्सा नहीं लिया है। निदेशक महोदय ने बताया कि आप सब एक फौजी की तरह बनकर जाएं।

चुनाव ड्यूटी सुनिश्चित होने के पश्चात हम सभी के परिवार वाले चिंतित हो गए। क्योंकि वहां जाने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प उपलब्ध नहीं था।

सभी चुनाव ड्यूटी कर्मचारियों को फूलबाग स्थित प्रशिक्षण केंद्र में प्रशिक्षित किया गया। मेडिकल के विषय में पूछ-ताछ हुई और पेपर आदि चेक किए गए। सभी को पहचान पत्र दिया गया एवं कुछ फार्म आदि भरवाया गया। दृढ़ निर्देशित किया गया कि आप सब पैरामिलिट्री फोर्स के ही अधीन रहेगें। फोर्स के निर्देशानुसार कार्य करेगें तथा भारतीय सेना हमेशा साथ रहेगी। आप सबकी आवागमन, आवास एवं भोजन इत्यादि की जिम्मेदारी इन्हीं की होगी। स्थानीय प्रशासन एवं अन्य का विश्वास नहीं करना है।

हमारे संस्थान के एक कर्मचारी श्री विनोद कुमार मैकेनिक के पद पर संस्थान निर्माण विभाग में कार्यरत थे। वे लो ब्लड प्रेशर के मरीज थे, उनकी दवा चल रही थी, उनकी भी चुनाव ड्यूटी लगी थी।

अन्ततः हम सभी को 5 सितम्बर 2002 को भा.प्रौ.सं. कानपुर से बस द्वारा एयरफोर्स स्टेशन बक्शी तालाब, लखनऊ भेजा गया। वहां से आईएल-76 वायुसेना के विमान से श्रीनगर भेजा ही जा रहा था कि उस समय मौसम अचानक खराब हो गया। मौसम खराब होने के कारण विमान टेक-ऑफ नहीं कर सका। हम सभी को वहीं पर

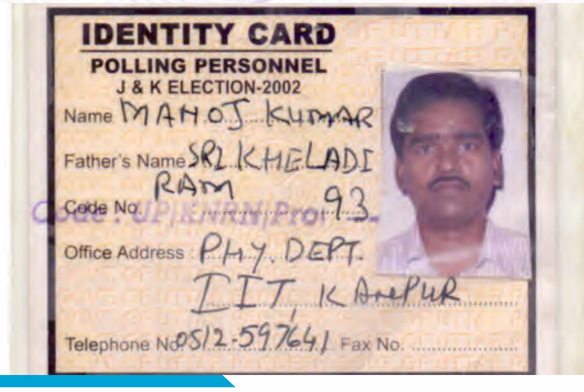
IDENTITY CARD
POLLING PERSONNEL
J & K ELECTION-2002
Name MANOJ KUMAR
Father's Name SRI KHELADI RAM
Code No. 93
Office Address PHY. DEPT. IIT KANPUR
Telephone No. 0512-597641 Fax No. ....

लखनऊ के एक विद्यालय में रात्रि विश्राम करना पड़ा। उसी रात्रि में हमारे संस्थान के कर्मचारी श्री विनोद की तबियत ज्यादा खराब हो गयी। उन्होंने रात्रि में सोने से पहले अपनी तबियत के बारे में बताया था कि मेरी तबियत जब भी खराब हो जाए तो सबसे पहले मेरे पास रखे नमक का सेवन कराया जाए। तत्पश्चात, चिकित्सक से परामर्श किया जाए। हम लोगों ने उनकी तबियत खराब होने पर वैसा ही किया। चिकित्सक ने बताया कि उनकी तबियत चुनाव ड्यूटी करने योग्य नहीं है। हमने उनकी मेडिकल रिर्पोट अधिकारियों को प्रस्तुत कीं। उनकी रिर्पोट के आधार पर उन्हें वापस कानपुर भेज दिया गया। दूसरे दिन मौसम ठीक होने पर हम सभी को उसी विमान से श्रीनगर भेजा गया। वहां विमान से उतरने के बाद सुरक्षा के लिए मेटेल हैलमेट, बुलेट प्रूफ जैकेट और स्लीपिंग बैग आदि सामान दिया गया। उसके बाद वहां से बीएसएफ के अधीन बस द्वारा सोपोर बारामूला भेजा गया। उस समय बारामूला बहुत ही संवेदनशील क्षेत्र था और वहां का मौसम बहुत ही खराब था। हल्की बारिश भी हो रही थी और ठण्ड भी पड़ रही थी। वहां टेन्ट में रहना पड़ता था। रात में टेन्ट से बाहर लघु-शंका जाने के लिए बीएसएफ के जवानों को बताना पड़ता था कि हम पोलिंग पार्टी के लोग हैं और लघु-शंका के लिए टेन्ट से बाहर जा रहे हैं।

वहां पर चुनाव चार चरणों में था। कहीं पर का पोलिंग बूथ मैदानी क्षेत्र में था तो कहीं पहाड़ी क्षेत्र में। पहाड़ी इलाके में चुनाव के लिए सुबह हल्के अंधेरे में ही प्रस्थान करना पड़ता था, क्योंकि रास्ता दुर्गम होने की वजह से पैदल ही जाना पड़ता था। आतंकी घटनाओं के कारण हमें जवानों के साथ एक-एक करके जाना पड़ता था। एक साथ समूह में नहीं जाते थे, न ही साथ बैठते थे।

इधर घर के लोग हर समय चिंतित रहते थे जिसके कारण वे हर समय टीवी या रेडियो से समाचार सुनते रहते थे कि वहां पर सब लोग कैसे

हैं। कहीं पर कोई अप्रिय घटना तो नही हुई? उस समय केवल किसी-किसी के घर में फोन हुआ करता था। फोर्स के जवान कभी-कभी कुछ क्षण के लिए घर पर बात करा देते थे। घर में पत्नी और मां बात करते-करते भावुक हो जाते थे। हम सभी लोग भी भावुक हो जाते थे। किसी एक के घर पर बात हो जाने से सभी के घरों में हाल-चाल पता चल जाता था कि वहां पर सब लोग ठीक हैं।

जैसा कि पहले ही वर्णित किया गया है कि वहां पर चुनाव चार चरणों में था। हम सभी लोग पर्याप्त सुरक्षा बल के साथ बस से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते थे। चुनाव के दिन मतदान के लिए जनता खुद चलकर आती और मतदान करके चली जाती थी। कुछ क्षेत्र की जनता आंतकियों के डर से नहीं आती थी। पता होने पर भारतीय जवान वहां जा करके उनको अपनी सुरक्षा में लेकर आते थे और मतदान कराके उनके घर सुरक्षित पहुंचा देते थे।

इसी प्रकार चारों चरणों का चुनाव संपन्न हुआ। हम लोगों की वापसी के समय, सुरक्षा बलों द्वारा पहले से दिया गया सामान वापस लिया गया। हम लोगों को अवन्तीपोरा वायुसेना स्टेशन लाया गया। वहां से आईएल-76 विमान से वापस लखनऊ भेज दिया गया। लखनऊ से आईआईटी कानपुर बस द्वारा वापसी हुई तो जान में जान आई। ऐसा लगा जैसे बहुत बड़ा संकट टल गया। परिवार के सभी लोग बहुत प्रसन्न हुए। मेरी मां इतनी ज्यादा खुश हो गई कि कुछ क्षण के लिए बेहोश हो गई, उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैं सकुशल वापस आ गया हूं।

अन्ततः सब कुछ सकुशल संपन्न हो गया। हम भी गौरवान्वित हुए कि विषम परिस्थितियों में चुनाव करवा करके हम भी देश के कुछ काम आए। यह समय यादगार बन गया।

निदेशक महोदय ने हम सभी कर्मचारियों को वर्ष 2002 के दौरान इस साहसिक कार्य के लिए वेतनमान में 01 नवम्बर 2002 से एक विशेष वेतन वृद्धि से पुरस्कृत किया था।

-मनोज कुमार
वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक (सेवानिवृत्त)
भौतिक विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

बुझती लौ...

एआई द्वारा निर्मित

लहरों के प्रचंड प्रहारों को,
सागर पर कब कोई असर हुआ,
प्रण पर अटल रहूंगी कहकर,
उस बुझती लौ का जन्म हुआ,

तम के स्याह दर्पण का,
अंबर पर कब कोई असर हुआ,
अविरल जल रही है जो,
उस बुझती लौ का प्रसर हुआ,

नीलम के निराले नयनों का,
नयनों पर निर्मल नमः हुआ,
प्राणों की धड़क बन,
उस बुझती लौ का गमन हुआ,

कण-कण बहकर प्रबल कोख से,
बूंदों का अमृत अमर हुआ,
पवन बनी सारथी रागों की और,
एक दिवाली का दीपक अमन हुआ,
बुझती लौ का गमन हुआ,
दिवाली का दीपक अमन हुआ।

-अंशिका चौधरी
एमएससी सांख्यिकी
गणित एवं सांख्यिकी विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

शिवानी: हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का संपोषण एवं समन्वय केंद्र

भारत विविध भाषाओं और सांस्कृतिक परंपराओं का देश है। भारतीय भाषाएं केवल संवाद का माध्यम हीं नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत, ज्ञान-परंपरा और सामाजिक अनुभवों की संवाहक हैं। भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन तथा उन्हें आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जोड़ने के उद्देश्य से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में **'शिवानी : हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का संपोषण एवं समन्वय केंद्र'** की स्थापना की गई है।

हिंदी की सुप्रसिद्ध साहित्यकार **स्वर्गीय श्रीमती गौरा पंत 'शिवानी'** की स्मृति को समर्पित इस केंद्र (https://www.iitk.ac.in/shivani-centre/hi/index.php) की स्थापना 02 नवंबर 2021 को मिकी और विनीता चैरिटेबल फाउंडेशन के सहयोग से की गई (https://www.iitk.ac.in/shivani-centre/hi/about donor.php)। केंद्र का उद्देश्य हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और समन्वयन करना तथा विद्यार्थियों को भाषा संबंधी सहायता प्रदान करना है, विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए जिन्हें भाषा संबंधी कठिनाइयों के कारण अध्ययन में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

शिवानी केंद्र संस्थान के विभिन्न समूहों, विशेषकर राजभाषा प्रकोष्ठ एवं हिंदी साहित्य सभा के सहयोग से अनेक शैक्षणिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। साहित्यिक गोष्ठियां, लेखन कार्यशालाएं, पुस्तक मेले, रचनात्मक प्रतियोगिताएं, विश्व हिंदी दिवस, अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, भारतीय भाषा उत्सव, वसंत काव्योत्सव तथा अक्षर साहित्यिक महोत्सव जैसे कार्यक्रम विद्यार्थियों को भारतीय भाषाओं और साहित्य से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

केंद्र बहुभाषी शिक्षण को बढ़ावा देने तथा हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में शैक्षणिक सामग्री तैयार करने और अनुवाद कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए भी कार्यरत है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए ज्ञान-संसाधनों को अधिक सुलभ बनाना तथा भाषा-आधारित बाधाओं को कम करना है।

शिवानी केंद्र की एक महत्वपूर्ण पहल अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के लिए हिंदी शिक्षण कार्यक्रम है। आईआईटी कानपुर के अंतर्राष्ट्रीय संबंध कार्यालय (डीओआईआर) के सहयोग से संचालित इस कार्यक्रम में सूडान, इंडोनेशिया, सीरिया, श्रीलंका, अमेरिका तथा इथोपिया सहित विभिन्न देशों के विद्यार्थियों ने भाग लिया है। यह कार्यक्रम विदेशी विद्यार्थियों को हिंदी भाषा और भारतीय सांस्कृतिक परिवेश से परिचित कराने के साथ-साथ अंतर-सांस्कृतिक संवाद भी प्रोत्साहित करता है।

भाषा और प्रौद्योगिकी के समन्वय की दिशा में भी केंद्र सक्रिय है। भारतीय भाषाओं के लिए डिजिटल संसाधनों, भाषा-प्रौद्योगिकी आधारित उपकरणों तथा नवाचारपरक परियोजनाओं को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ वर्चुअल लैब तथा स्वर्गीय श्रीमती गौरा पंत 'शिवानी' के डिजिटल अवतार जैसी अभिनव परिकल्पनाओं पर भी कार्य किया जा रहा है। इन प्रयासों का उद्देश्य भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से नई पीढ़ी तक प्रभावी रूप से पहुंचाना है।

आगामी पहलें एवं योजनाएं

भारतीय भाषाओं के संवर्धन, बहुभाषिक शिक्षा को प्रोत्साहन देने तथा भाषा और प्रौद्योगिकी के समन्वय को सशक्त बनाने की दिशा में शिवानी केंद्र निरंतर प्रयासरत है। आगामी समय में इस केंद्र द्वारा कई महत्त्वपूर्ण गतिविधियां प्रारम्भ करने की योजना है, जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों के लिए अधिक समावेशी, सृजनात्मक एवं बहुभाषिक शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करना है।

1. क्षेत्रीय भाषाओं में शैक्षणिक सामग्री का प्रतिलेखन एवं अनुवाद

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की भावना के अनुरूप शिवानी केंद्र, सेंटर फॉर एजुकेशनल रिसर्च एंड टीचिंग एक्सीलेंस (सरटेक्स) तथा अधिष्ठाता शैक्षणिक कार्य के सहयोग से प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रमों की शैक्षणिक सामग्री को विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य कर रहा है। इस पहल के अंतर्गत रिकॉर्ड किए गए व्याख्यानों का प्रतिलेखन एवं अनुवाद कर बहुभाषिक शैक्षणिक संसाधन विकसित किए जाएंगे। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए अध्ययन सामग्री को अधिक सुलभ बनाना तथा भाषा-आधारित अधिगम चुनौतियों को कम करना है।

2. मातृभाषा परिषद: भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का मंच

भारतीय भाषाओं और सांस्कृतिक विविधता को प्रोत्साहित करने के

उद्देश्य से शिवानी केंद्र 'मातृभाषा परिषद' नामक भाषा क्लब स्थापित करने की योजना बना रहा है। यह मंच विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा, साहित्य और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ने का अवसर प्रदान करेगा। परिषद के अंतर्गत साहित्यिक चर्चा, कविता-पाठ, भाषा-विनिमय कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां तथा बहुभाषिक संवाद जैसे विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाने का प्रस्ताव है। यह पहल विद्यार्थियों में भाषायी संवेदनशीलता, सांस्कृतिक जागरूकता तथा पारस्परिक संवाद को भी प्रोत्साहित करेगी।

3. 'शिवानी' हिंदी फॉन्ट के निर्माण की पहल

भाषा और प्रौद्योगिकी के समन्वय को नई दिशा देने के उद्देश्य से शिवानी केंद्र हिंदी फॉन्ट निर्माण की एक अभिनव पहल प्रारम्भ करने की दिशा में कार्य कर रहा है। प्रस्तावित 'शिवानी' हिंदी फॉन्ट का उद्देश्य आधुनिक डिजिटल आवश्यकताओं के अनुरूप एक सुगम, आकर्षक एवं तकनीकी रूप से सक्षम हिंदी फॉन्ट विकसित करना है, जिससे हिंदी में शैक्षणिक, शोध एवं डिजिटल सामग्री के उपयोग को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके। यह फॉन्ट हिंदी की सुप्रसिद्ध साहित्यकार स्वर्गीय श्रीमती गौरा पंत 'शिवानी' की स्मृति को समर्पित होगा तथा भारतीय भाषाओं के डिजिटल सशक्तीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान देगा।

इन पहलों के माध्यम से शिवानी केंद्र भारतीय भाषाओं, साहित्य, शिक्षा और प्रौद्योगिकी के बीच एक सशक्त सेतु के रूप में अपनी भूमिका को निरंतर विस्तार दे रहा है। केंद्र न केवल भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत है, बल्कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति में भाषा संबंधी बाधाओं को कम करने तथा आधुनिक तकनीक के माध्यम से भारतीय भाषाओं को सशक्त बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। साहित्यिक, शैक्षणिक और तकनीकी क्षेत्रों में अपने बहुआयामी प्रयासों के माध्यम से शिवानी केंद्र आईआईटी कानपुर के समग्र शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

-मैत्रयी अग्रवाल एवं गोविन्द शर्मा
शिवानी केंद्र
भा.प्रौ.सं. कानपुर

अक्षर साहित्यिक महोत्सव के दौरान उत्तर प्रदेश विधान सभा अध्यक्ष माननीय सतीश महाना एवं तत्कालीन निदेशक प्रोफेसर अभय करंदीकर

पुष्पांजलि कार्यक्रम में श्री नरेश सक्सेना का सम्मान करते हुए प्रोफेसर ब्रज भूषण, उप निदेशक- 17 जनवरी 2026

अक्षर साहित्यिक महोत्सव- 2023 में श्री मुक्तेश पंत पैनल चर्चा में भाग लेते हुए

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित पैनल चर्चा- 12 अप्रैल 2026

ऐसे मिले हम

कुछ दशकों पहले समाचार पत्रों एवं टीवी (दूरदर्शन) की सुर्खियों में लूट-पाट, डकैती, चोरी तथा नशा खिलाकर लूटने की खबरें प्रमुखता से होती थीं, अब ऐसी घटनाएं संख्या में कम होती हैं। बस, रेलगाड़ी तथा अन्य वाहन से यात्रा कर सुरक्षित लौट आना एक नए विहान की तरह होता है। इन अनुभवों से गुजरते हुए व्यक्ति अपनी भावना एवं विचारधारा का रास्ता तय करता है।

प्रस्तुत वृतांत हमारी निराशामयी क्षणों का आशावादी चित्रण हैं। यह मेरा रांची (झारखंड) का यात्रा संस्मरण है।

तकरीबन पन्द्रह वर्ष पहले रेलवे में स्टेशन मास्टर पद की परीक्षा के लिए मैं, संदीप, पंकज और विनीत रांची की यात्रा पर थे। लखनऊ से सीधे ट्रेन न होने के कारण हम लोगों ने कानपुर से ट्रेन पकड़ने का निर्णय लिया। ट्रेन की समय सारणी ठीक से पता न होने की वजह से हम सबने न तो कुछ खाया और न ही रास्ते के लिए कुछ लिया। ट्रेन अपनी निर्धारित समय पर चल पड़ी। ट्रेन की बोगी में कुछ यात्रियों को छोड़कर सभी परीक्षार्थी थे। ट्रेन की रफ्तार तेज होने के कुछ समय बाद परीक्षार्थियों का एक-दूसरे से परिचय शुरू हो गया, लेकिन इन सबसे अलग संदीप, पंकज, विनीत और मेरे पेट में भूख की अग्नि जल रही थी। मेरे ठीक सामने वाली सीट पर एक किसी राजेश कुमार नामक व्यक्ति का आरक्षण था। उनकी उम्र 32 से 35 वर्ष रही होगी। हम लोगों की स्थिति देख कुमार साहब ने अपने झोले से चबेना (लईया, चना) की पोटली निकाल कर खिलाने की पेशकश की। आए दिन नशा खिलाकर रेल-सफर में लूटने वालों की खबर सुनकर मैं काफी सशंकित था, परन्तु हम लोगों के पेट में चूहे कूद रहे थे। भूख की पीड़ा से मैं संदीप, पंकज और विनीत व्याकुल हो रहे थे।

मैंने पंकज के कान में धीरे से कहा "सुनो, तुम दूसरी बर्थ पर बैठ जाओ ताकि खाने में मादक द्रव्य मिला हो तो हम लोगों में से कोई एक आदमी होना चाहिए जो स्थिति को संभाल सके। बेचारा पंकज अलग बैठ गया। मैं संदीप और विनीत खाने लगे, लेकिन ऐसी कोई घटना नहीं हुई जिसकी मुझे आशंका थी। रात 08:30 बजे गाड़ी पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्टेशन पहुंची, वहीं मैंने, पंकज, विनीत और संदीप ने पेट भर खाना खाया। डिब्बे में, हम लोगों की साइड में एक लोवर वर्थ खाली थी। पंडित दीलदयाल उपाध्याय स्टेशन पर उम्मीद थी कि इस खाली पड़ी बर्थ पर कोई आएगा। प्लेटफॉर्म पर लगे चार्ट में डॉ० (श्रीमती) नीता श्रीवास्तव उम्र 32 वर्ष अंकित था। कुमार साहब ने अपने व्यक्तित्व और व्यवहार कुशलता से मेरा, पंकज, संदीप और विनीत का मन मोह लिया था। हम सब संशकित मन से कुमार साहब से प्रभावित थे। ट्रेन के इस मधुर मिलन ने हम सबसे परीक्षा के डर को

एआई द्वारा निर्मित

दूर कर दिया था। रफी साहब और लता जी के नगमों ने रेल के इस सफर में जादू बिखेर दिया था। धीरे-धीरे गाड़ी बढ़ती गयी और रांची का सफर कम होता गया, जहां उत्साह और खुशी का संगम होता है, वहां समस्या और चिंता का कोई बोझ नहीं होता है। हमारी ट्रेन अब मूरी स्टेशन पर खड़ी थी वहां से रांची नजदीक था। हम सबको वहां पर ठहरने की चिंता थी। दो दिन पहले हम सब लोग वहां पहुंच गए थे। कुमार साहब के लिए रांची घर जैसा था, इससे पहले भी वे यहां आ चुके थे। मैंने कुमार साहब से पूछा, भाई साहब रांची में ठहरने के लिए कोई अच्छी जगह बताइए। वे कुछ देर सोचे फिर बोले, आइए, मैं आपको एक दंपति से मिलाता हूं। वे लोग भी स्टेशन के समीप एक धर्मशाला में ठहरने वाले हैं। कुमार साहब ने उन लोगों से परिचय करवाया तथा हम सभी लोगों की समस्या बताई। उनका नाम उमेश चन्द्र दीक्षित था।

वे अपनी पत्नी को रांची विश्वविद्यालय में साक्षात्कार दिलाने हेतु आए थे। दीक्षित जी के साथ मैं, संदीप, पंकज और विनीत धर्मशाला की ओर चल पड़े। हम सब लोग आपस में एक परिवार की तरह घुल-मिल गए।

हम लोगों को कुमार साहब और दीक्षित दंपति संस्कारी एवं व्यवहार कुशल लगे। यकीन मानिए, जिसके पास अच्छे संस्कार होते हैं वे लोग कीचड़ में कमल के समान होते हैं। पारिवारिक पृष्ठभूमि का अनुमान अच्छे संस्कार से लगाया जा सकता है। कुमार साहब और उमेश चन्द्र दीक्षित जी का व्यवहार एक अभिभावक की तरह था। सुबह की चाय के साथ दरवाजा खुलवाते तथा बाहर से लौटते वक्त हम सभी लोगों के लिए कुछ नाश्ता भी साथ में लाते। हम सब उनके स्नेह की डोर में बंधते जा रह थे।

अच्छी भाषा शैली और अच्छे आचरण से जीवन के कठिन से कठिन पथ को संवारा जा सकता है। स्नेह में इतनी शक्ति होती है कि वह कठोर से कठोर पत्थर को भी रोने पर मजबूर कर देती है। मेरी पंकज, विनीत और संदीप की नजर में कुमार साहब और दीक्षित जी का व्यवहार महानता की पराकाष्ठा पर था।

ठीक अगले दिन कुमार साहब ने हमे घर पर खाने के लिए आमंत्रित किया था। हम सबने पेट भर खाना खाया। कुमार साहब ने हमें वहां कई लोगों से मिलवाया। उनमें एक आशुतोष नाम का लड़का था जो कुमार साहब के साथ रांची परीक्षा देने गया था। कुमार साहब ने उसे अपने खास परिचित के यहां ठहराया था, लेकिन कुमार साहब आशुतोष के प्रति काफी गुस्से में थे। मैंने कुमार साहब से पूछा ऐसा क्या हुआ? कुमार साहब ने कहा कि आशुतोष जिस थाली में खाना खा रहा था उसी में छेद करने की कोशिश कर रहा था। ऐसा सुनकर मेरा मन फिर दूरदर्शन, रेडियो तथा अखबारों की सुर्खियों में पहुंच गया। आशुतोष, कुमार साहब के विश्वास को नहीं, बल्कि समाज की उज्ज्वल विचारधारा का विश्वास तोड़ रहा था। घर से दूर कुमार साहब भगवान की तरह व्यवहार कर रहे थे, परन्तु आशुतोष समाज में फैली प्रचलित आशंकाओं को मजबूती प्रदान कर रहा था।

हम सबके लौटते समय कुमार साहब और दीक्षित जी स्टेशन पर छोड़ने के लिए आए थे। हम सबने यह निर्णय लिया कि यार्ड में ही गाड़ी पर चढ़ेगें। गाड़ी खुलने को ही थी, कुमार साहब, जैसे हम लोगों को अपने से दूर नहीं होने देना चाहते थे। हम सबने उनके व्यवहार में एक अजब अहसास छिपा देखा था। जैसे ही ट्रेन खुली तो मेरा हाथ कुमार साहब और उमेश चन्द्र दीक्षित जी के चरणों की ओर झुक गया।

उनके व्यवहार कुशलता ने मेरा मन जीत लिया था। यहां से अनजान सुदूर परिवेश में इतना बढ़िया व्यवहार आज के समाज के लिए एक सर्वोत्तम उदाहरण है।

यकीन मानिए साहब आज की दुनिया में अनजान लोगों की मदद कर अपने को धन्य समझने वाले लोग विरले ही मिलते हैं। राजेश कुमार साहब और उमेश चन्द्र दीक्षित जी आज के भगवान ही तो है। सफर तो बीत जाता है, लेकिन सफर के दौरान मिलने वाले कुछ लोग हमारे दिल, दिमाग और यादों के आसमान पर सितारे बनकर चमकने लगते हैं। दीक्षित जी और कुमार साहब वे सितारे ही तो है।

-राजेश कुमार श्रीवास्तव
वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक (एस.जी.)
संस्थान निर्माण विभाग
भा.प्रौ.सं. कानपुर

मौन साधु की... बृहत्कथा

बहुत पहले नंदन में एक कहानी पढ़ी थी। जैसे आज के बच्चों को शौक है ना मार्वल-डीसी का वैसे हमें शौक था नंदन-चंपक का। कमाल की किताबें और कमाल के शौक हुआ करते थे। किताबें और पन्नों से इश्क करने वाला शायद आखिरी बचपन था। पर यह गलतफहमी तो लगभग हर पीढ़ी को ही रहती है ना! सबको अपना ही वक्त अच्छा लगता है। खैर जो जिसमें राजी! सेल्फ-लव जरूरी है, तो सेल्फ-जेनरेशन लव भी जरूरी है।

हम आते हैं अपनी कहानी पर, एक कोना होता था पत्रिका में - संपादक की कलम से - बहुत ही खूबसूरत कोना था ये। क्योंकि हर बार इसमें होती थी बच्चों के नाम संपादक द्वारा सुनाई गई एक खूबसूरत कहानी। और संपादक थीं मेरी मनपसंद मृणाल पांडे। जितनी सुंदर कहानी उससे ज्यादा सुंदर उनका संदेश। तो कहानी कुछ यूं थी कि एक राजा था हाल (सातवाहन वंश का सत्रहवां राजा)- भला था, प्रजा से प्यार करता था और सबसे अव्वल कि साहित्य प्रेमी भी था। और उनके पास थे उनके विद्वान पंडित जी - उनका नाम तो मुझे याद नहीं, समझ लीजिए उनके पर्सनल बीरबल या तेनालीराम थे। वो क्या है ना, हर राजा के पास अपने-अपने थे, नो शेयरिंग! हां तो पंडित जी राजा के साहित्य-प्रेम का पूरा ध्यान रखते, अच्छी-अच्छी कविता-कहानी लिखते और उनकी कहानियों में अक्सर राजा साहब ही हीरो होते। जैसा कि अक्सर राज-कवियों का काम होता है - शौक से करो या खौफ से, तारीफ तो करनी है। पर इन सब से बढ़कर पंडित जी प्रकांड विद्वान थे, कई भाषाओं के ज्ञाता भी थे जैसे संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश और इन भाषाओं की व्याकरण पर भी रचना किया करते थे। पर राज-कवि होना भी दो-धारी तलवार पर चलने जैसा है - कभी तो इनकी भी अग्निपरीक्षा की घड़ी आनी ही थी, सो आ गई ।

एक दिन जब मिस्टर राजा अपनी ब्यूटीफुल रानी के साथ जल-विहार कर रहे थे तब रानी ने राजा से संस्कृत में कहा “मोदकैः ताडय” मतलब मुझ पर पानी मत डालो। राजा को संस्कृत आती नहीं थी पर रानी पर प्यार बहुत आता था तो उन्होंने अपने कुक को ऑर्डर दे डाला, ढेरों लड्डू बनाने का। रानी के सामने जब लड्डू पेश किया तो रानी हंसते-हंसते गिर पड़ी और राजा का मजाक बना दिया कि कैसे राजा हो, इतनी सिंपल सी भाषा नहीं आती? भैया उनको लगती होगी सिंपल हमारे तो पसीने छूट गए थे इस भाषा को सीखने में! हां मतलब वो रानी थी, ज्यादा इंटेलिजेंट रही होगी । खैर राजा हुए इस अपमान से फायर और अपने बेस्ट कवियों को किया हायर, जब सब आ गए तब दिया ऑर्डर! बताओ मुझे 12 दिन में संस्कृत कौन सिखाएगा

ग्रामर के साथ। मतलब जिस ग्रामर की क्लास में हम साल-दर-साल सो जाते थे, चाहे वह किसी भी भाषा की हो, वह इन भाई साहब को 12 दिन में सीखनी थी। अलग लेवल का कॉन्फिडेंस होता था राजाओं में! अब राजा साहब ने सवाल चाहे जिस किसी से भी किया हो पर उन्हें उम्मीद तो बस गुणाढ्य से थी - अरे हां, याद आया, पंडित जी का नाम था गुणाढ्य- मतलब गुणों का धनी! सो उनकी उम्मीद भरी नजरें भी उधर ही टिकी हुई थी। गुणाढ्य पूरी शालीनता से आगे आए और उन्होंने बड़े ही आराम से राजा को आंसर दिया कि सर मैं आपको 12 दिन में तो नहीं, 6 वर्षों में सिखा दूंगा। सुनकर राजा हैरान - ये कैसा डिस्काउंट ऑफर हुआ भला, 12 दिन के बदले 6 साल? तब तक तो रानी कोई और भाषा सीखने का होमवर्क पकड़ा देगी। अभी राजा सोच ही रहा था कि आगे आए शर्ववर्मा - विद्वान नंबर 2, यह हमारे सपोर्टिंग हीरो हैं जो सिर्फ राजा नामक हीरो को सपोर्ट करते हैं और गुणाढ्य का तो सर दुखाए रहते हैं। पक्का आपको अपने जीवन के सपोर्टिंग हीरो याद आ गए होंगे, सोचिए सोचिए!

एआई द्वारा निर्मित

हां तो शर्ववर्मा ने कहा राजा साहब हम आपको मात्र 6 महीने में यही काम करके दिखा देंगे। राजा खुश! भागते भूत की लंगोटी ही सही। राजा ने नीलामी की माफिक बोली लगाई - छह महीने एक... छह महीने दो.. पर इन दो धुरंधरों से टकरा पाना किसी के बस में नहीं था। सो फाइनल हुआ कि शर्ववर्मा ही सिखाएंगे। गुणाढ्य ने भी संजय दत्त स्टाइल में धमकी दे डाली - अगर इसने ऐसा कर दिखाया तो मैं अपनी राज-कवि की पदवी को छोड़ दूंगा और जंगल चला जाऊंगा! मौन साध लूंगा और हर उस भाषा का त्याग कर दूंगा जिसका मुझे ज्ञान है और जो आम जन-जीवन में बोली जाती है! शर्ववर्मा भी कहां कम थे, उनके अंदर भी सलमान खान की आत्मा प्रवेश कर गई और उन्होंने भी कह दिया चैलेंज एक्सेप्टेड! अगर मैं यह नहीं कर पाया तो बारह वर्ष तक आपकी चरण-पादुका अपने सर पर लेकर घूमूंगा। राजा खुश! उसे भला और क्या चाहिए? दो प्रकांड-पंडितों के इस शास्त्रार्थ में जीते-हारे कोई भी, फायदा तो राजा का ही होना था। बॉस नाम का ये प्राणी दो हजार साल पहले भी ऐसा ही होता था, आज भी ऐसा ही होता है। रानी भी सुनकर दंग, की इतने धुरंधरों की जंग.. सिर्फ मुझे खुश करने के लिए, वाह वाह!

कहते हैं इसके बाद शर्ववर्मा पहाड़ी पर एक गुफा में रिटायर हो गए और कुछ अंगल-मंगल-जंगल करके रचना कर डाली 'कातंत्र' की जिससे मात्र छह महीनों में उन्होंने सच में राजा को संस्कृत व्याकरण का पूरा ज्ञान करवा दिया । मतलब जिसे हम अभी तक सपोर्टिंग हीरो समझ रहे थे वो तो विराट कोहली निकले, पहली ही गेंद पर सिक्सर! तो गुणाढ्य ने अपना लाव-लश्कर समेटा और अपने दो फेवरेट स्टूडेंट्स के साथ चल दिए जंगल! क्योंकि एक बार जो कमिटमेंट उन्होंने कर दी तो फिर वो अपने आप की भी नहीं सुनते। हां मतलब सिर्फ राजा की सुन सकते थे पर राजा ने ज्यादा मन से रोका नहीं। विंध्याचल के जंगलों में जाने पर उन्होंने वहां के तौर तरीके अपनाकर नए तरीके से जीवन-यापन शुरू किया। भाषाएं तो वो अपनी छोड़ ही चुके थे, तो उन्होंने जंगल की ही भाषा 'पैशाची' सीखी। इसी भाषा में उन्होंने उस चमत्कार की रचना की जिसका नाम था बृहत्कथा। जंगल में स्याही और कागज तो थे नहीं, सो इस महान ग्रंथ की रचना उन्होंने भोजपत्र (पेड़ की छाल) पर अपने रक्त से लिख कर की थी। किवदंती तो यह भी कहती है कि जंगल के लोगों और जानवरों ने उनकी इस महान रचना का हिस्सा बनने के लिए स्वयं अपना रक्त दान किया था। कई वर्षों की तपस्या के बाद लिखे सात लाख श्लोकों से बना संसार का यह सबसे बड़ा ग्रंथ कहानियों का पिटारा था। न भूतो न भविष्यते! ऐसा ग्रंथ ना पहले कभी लिखा गया था न इसके बाद कभी लिखा जा सका। क्योंकि गुणाढ्य नगर जीवन का त्याग कर जंगल में ही रहने का संकल्प लेकर आए थे, इसलिए इस अभूतपूर्व रचना को लेकर उन्होंने अपने एक शिष्य को राजा के पास भेजा। उन्होंने सोचा कि शायद इससे उनका खोया हुआ सम्मान वापस आ जाए परंतु राजा ने तो इस ग्रंथ को देखने तक से मना कर दिया। पैशाची में लिखी इस रचना को देखकर राजा ने घृणा से कहा कि यह तो 'भूत भाषा' है अर्थात मरे हुए लोगों की भाषा जिसे अब कोई नहीं बोलता, जिसकी कोई सांस्कृतिक विरासत नहीं है, जिसका महत्व नहीं है, और जो शायद सभ्य भी नहीं है। इसका यहां क्या काम? इसे भला यहां कौन पढ़ेगा? ऐसा कहकर उन्होंने भरी सभा में गुणाढ्य के ग्रंथ और भाषा दोनों का अपमान किया। जब शिष्य ने दुखी मन से लौट कर अपने गुरु को यह बात बताई तो गुणाढ्य का दिल ही नहीं हौसला भी टूट गया। उनकी आंखों से आंसू बह निकले कि क्या यह वही राजा है जिसे स्वयं संस्कृत भाषा का ज्ञान नहीं था और आज एक आदिवासी भाषा का अपमान कर रहे है। भाषा कोई ऊंची या नीची नहीं होती,

वह बस मन की भावनाओं को व्यक्त करने का एक माध्यम भर है, अच्छी और बुरी तो इंसान की भावनाएं हैं और उसकी भाषा भी उसी अनुरूप ढलती है। बच्चा अपनी तोतली भाषा में भी मां को सब समझा जाता है और अहंकारी व्यक्ति द्वारा बोले गए कड़वे वचन अंदर तक भेद जाते हैं चाहे वह किसी भी भाषा में बोले गए हों।

सारी थोड़ा ऑफ-ट्रैक हो गई उपदेश देने में। तो गुणाढ्य ने सोचा कि जब राजा को ही इस ग्रंथ की कद्र नहीं तो मेरे इतनी रचना करने का क्या फायदा। राजा ही हमारा परमेश्वर है, और जब राजा को ही रचना का सम्मान नहीं तो फिर आगे आने वाली पीढ़ियों तक भला यह ज्ञान कैसे पहुंचेगा? आखिर जैसा राजा वैसी प्रजा! इतने तिरस्कार से निराश होकर गुणाढ्य ने रचना को स्वाहा करने का फैसला कर लिया। पर स्वाहा करने से पहले वह चाहते थे कि उनकी इस रचना को कोई तो सुने क्योंकि कोई भी रचना तभी सार्थक होती है जब उसे कोई पढ़ने या सुनने वाला हो। वह अपनी कृति की महानता जानते थे इसलिए नहीं चाहते थे कि संसार से इतना सुंदर ग्रंथ एक राजा की अज्ञानता के कारण बिना पढ़े या सुने चला जाए। जंगल के लोगों और जानवरों ने भी उनसे अनुरोध किया कि जिस ग्रंथ को सच में आपने खून-पसीने से लिखा है उसे नष्ट करने से पहले हमें सुना तो दीजिए।

तो गुणाढ्य एक-एक पन्ना उठाते गए और उसे पढ़ कर सुनाते गए। कहानियों में कहानी गुथी हुई थी इस ग्रंथ में, हर एक कहानी में हजारों कहानियां लिपटी हुई। शब्दों का ऐसा सुंदर मायाजाल था कि वन के जीव-जंतु सभी उसमें खो गए, जो दूर थे वह मोहित होकर खिंचे चले आए, अजीब सा सम्मोहन था उन कहानियों में। इतना कि खाना-पीना-सोना भूल कर वन के आदिवासी लोग, पशु-पक्षी आदि मुग्ध होकर कहानी सुनते रहे। हर एक पन्ना पढ़कर गुणाढ्य उसे अग्नि में स्वाहा कर देते। कई दिनों तक चलने वाले इस यज्ञ के कारण सभी जीव सूख कर कांटा हो गए थे। कहा जाता है कि जब गुणाढ्य एक-एक पन्ना पढ़कर आग में डाल रहे थे, तब पिशाच और जानवर रो रहे थे। यह दृश्य प्रतीक है कि एक महान रचनाकार जब अपनी कृति नष्ट करता है, तो पूरी प्रकृति उसे बचाने के लिए विलाप करती है।

जंगल आने वाले शिकारियों को जब असीम शांत जंगल और दुबले-पतले-सूखे हुए जानवर मिले तथा अनवरत चल रही इस मनमोहक कथा की आवाज सुनाई दी तो उन्होंने यह बात राजा तक पहुंचाई। पहले तो राजा ने इसका विश्वास नहीं किया पर कई लोगों के कहने पर राजा ने सोचा स्वयं इस बात की तस्दीक की जाए। वह अपने दल-बल के साथ स्वयं चुपके से जंगल में गए और देखा कि बहुत ही बढ़ी हुई दाढ़ी और बालों के साथ बूढ़े गुणाढ्य कोई कथा पढ़ते जा रहे हैं और पन्ने जलाते जा रहे हैं। कथा इतनी सम्मोहक थी कि राजा के आदेश देने के बाद भी उनके सैनिक हिल नहीं पा रहे थे। असर तो राजा पर भी बहुत था पर उस सम्मोहन पर उनकी ग्लानि भारी पड़ रही थी। उन्होंने हिम्मत करके गुणाढ्य को रोका। अपने राजा को सामने देखकर गुणाढ्य कुछ पल के लिए रुक गए और पूछने पर मौन धारण कर लिया। फिर राजा के उन्हें वचन से आजाद करने के बाद उन्हें सारी कहानी बता दी। यह सुनकर राजा की आंखों से आंसू आ गए कि उनकी एक मूर्खता के कारण संसार का एक असाधारण शब्द-शिल्पी इतने वर्षों से निष्कासन झेल रहा था और उससे भी बड़ी बात उसकी अब तक की सबसे बड़ी रचना, शायद संसार की सबसे बड़ी रचना, पूरी तरह स्वाहा होने वाली थी। खैर जब तक राजा ने रोका तब तक कहानी के 6 लाख श्लोक खत्म हो चुके थे और मात्र एक लाख श्लोक ही बचे थे जिसे 'नर्वाहनदत्त की कथा' कहते हैं। इसका महत्व ऐसे समझिए कि संसार में जितनी भी कहानियां हैं चाहे वह बेताल-पच्चीसी हो, कथासरित्सागर हो, अलिफ लैला हो, या आपको हजार रातों की कहानियां सुनाने वाला अरेबियन नाइट्स - यह सब बस इसी नर्वाहनदत्त की कथा से निकले हैं, बस एक लाख श्लोकों से, गुणाढ्य की इस भूत-भाषा में लिखी किताब के सातवें हिस्से से। बृहत्कथा के बस सातवें हिस्से से!

एआई द्वारा निर्मित

समय का यह कैसा न्याय था कि जिस भाषा को कभी राजा ने तिरस्कृत किया था, उसी भाषा की कहानियों का बाद के समय में कई शताब्दियों तक संस्कृत और अन्य भाषाओं के बड़े-बड़े विद्वानों ने अपनी-अपनी भाषा में अनुवाद किया। सोच कर देखो दुनिया में आज जितनी भी कहानियां घूम रही हैं, वह सब बृहत्कथा के इसी पिटारे के एक बहुत छोटे से हिस्से से आई हैं।

आज यह किताब अपने मूल रूप में नहीं मिलती, बस इसके संवाद, अनुवाद और रचयिता का बखान अन्य किताबों में मिलता है जैसे सोमदेव भट्ट द्वारा लिखी 'कथासरित्सागर', क्षेमेंद्र द्वारा रचित 'बृहत्कथामंजरी', इत्यादि। इन्हीं किताबों को श्रेय मिलता है गुणाढ्य

की सच्चाई हम तक पहुंचाने का, वरना दुनिया का इतना बड़ा विद्वान और बृहत्कथा का उद्गम हम कभी नहीं जान पाते।

आपको मजा आया ना यह कहानी पढ़ कर पर मुझे बड़ा गुस्सा आया था। छोटी सी थी मैं और तब से लेकर आज तक उस महान साहित्यिक क्षति का शोक मना रही हूं। बेताल पच्चीसी, कथासरित्सागर, पंचतंत्र - इन सब में एक-दूसरे में गुथी हुई सैकड़ों कहानियां हैं। ये कालजयी कृतियां तो महज एक झांकी हैं। सोचो, संसार में 6 गुणा कहानियां और हो सकती थी पर नहीं हुई सिर्फ उस बेवकूफ राजा के कारण। ये कहानियां ही मेरे एकांत की सबसे आत्मीय मित्र थीं, और यह सोचकर ही मन भारी हो जाता है कि न जाने कितना अद्भुत ज्ञान हमारे स्पर्श से पहले ही इतिहास के धुंधलके में खो गया। कहते हैं गुणाढ्य के शिष्यों ने भी कथा सुनी थी और उन्हें राजा की भाषा भी आती थी तथा पैशाची भी सो नष्ट हो चुकी रचना का कुछ हिस्सा, जितना उन्हें याद था, उन्होंने राजा को सुनाया था पर फिर भी यह उन मूल कहानियों का बहुत छोटा सा हिस्सा था।

पर सच पूछिए तो यहां न शर्ववर्मा जीते, न गुणाढ्य हारे... आमतौर पर युद्ध तो दोनों ओर केवल संहार रचते हैं, परंतु इस अद्भुत स्पर्द्धा में दोनों ही ओर साहित्य का नया सवेरा हुआ। अंततः, एक विद्वान के स्वाभिमान और दूसरे के अडिग संकल्प के इस द्वंद्व ने संसार को दो अनुपम उपहार दिए - पहला 'कातंत्र', जिसने पाणिनि के क्लिष्ट व्याकरण को सहज बनाकर वर्षों की साधना को महीनों में समेट दिया और दूसरा महाकाव्य 'बृहत्कथा', जिसके सृजन की पृष्ठभूमि में छिपी यह ऐतिहासिक कहानी थी। इस पूरी कहानी के सार को यदि हम समझें, तो इससे दो अत्यंत महत्वपूर्ण सीख मिलती हैं। पहली यह कि इतिहास की तमाम आपदाओं के बाद भी आज हमारे पास भव्य सांस्कृतिक विरासत बची है जिसकी हमें सुरक्षा करनी है और जैसे हमारे पूर्वजों ने इसे हम तक बहुत त्याग-तपस्या से पहुंचाया है वैसे ही सहेज कर हमें इसे अगली पीढ़ी को देना है। दूसरा यह कि अगर गुणाढ्य इतनी विषम परिस्थितियों में अपमान झेल कर भी जंगल में बिना स्याही और कागज के दुनिया की 'कहानियों की जननी' बृहत्कथा को जन्म दे सकते थे तो आज हम सुख-सुविधाओं से लैस इस आधुनिक युग का लाभ उठाकर, कुछ मौलिक नवीन रचनाएं लिखकर इस विरासत में अपना योगदान तो दे ही सकते हैं। इन कहानियों ने भोजपत्र और ताड़-पत्र के युग से चलकर आपके डिजिटल टैबलेट्स तक पहुंचने के लिए हजारों सालों का सफर और कड़ा संघर्ष किया है, इस विरासत को खोने मत दीजिए। गुणाढ्य सरीखे कई विद्वानों ने इन रचनाओं को हम तक सुरक्षित पहुंचाने के लिए बहुत कष्ट झेला है। अब इस अनमोल बौद्धिक संपदा की पहरेदारी की बारी हमारी है। ये कहानियां किसी एकाकी बच्चे का संबल बन सकती हैं, तो किसी बुज़ुर्ग को अवसाद के अंधकार से खींचकर जीवन के उजाले में ला सकती हैं, ये कहानियां जादू कर सकती है! जीवन से कहानियां हैं और कहानियों से जीवन है।

आज जब आधुनिक तकनीक हमारे हाथों में है, तो क्यों न हम भोजपत्रों की इस आदि-विरासत को डिजिटल क्षितिज पर अमर कर दें? यह समय सिर्फ पूर्वजों के संघर्ष को याद करने का नहीं, बल्कि इतिहास के इस सिलसिले को आगे बढ़ाने का है; क्योंकि विरासत सिर्फ सहेजने के लिए नहीं, बल्कि उसमें कुछ नया जोड़ने के लिए होती है। उठिए! अपनी कलम उठाइए, अपनी चेतना को शब्द दीजिए और इस अमर बौद्धिक संपदा के अगले सूत्रधार बनिए। आइए, अपनी संस्कृति के इस महासागर में अपनी मौलिकता की एक नई नदी जोड़ें, ताकि आने वाली पीढ़ियां जब इतिहास पलटें, तो हमारी पहरेदारी पर गर्व कर सकें। आज बीता हुआ कल हमें देख रहा है, और आने वाला भविष्य हमारी ओर आस लगाए बैठा है।

-डॉ. ज्योति मिश्रा, पूर्व पीएचडी छात्रा
बीएसबीई
भा.प्रौ.सं. कानपुर

राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन पर हिंदी कार्यशाला- दिनांक 30 जून 2026

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस एवं वसंत काव्योत्सव- दिनांक 12 अप्रैल 2026

भाषा विमर्श

लोकनाट्य

एआई द्वारा निर्मित

लोक-नाट्य की उत्पत्ति लोकविश्वास, धार्मिक रूढ़ियों, परंपराओं, वीर पूजा, मनोरंजन, उत्सव, मांगलिक पर्व तथा शोक आदि के अवसरों पर सहज अभिव्यक्त उल्लास, शोक आदि मनोभावों के बीच से हुई होगी। अनेक विद्वान नाटकों की उत्पत्ति लोकनाट्य से ही बताते हैं। डॉ. नगेंद्र के अनुसार जीवन की सामूहिक आवश्यकताओं एवं प्रेरणाओं के बीच इनका जन्म हुआ होगा। संस्कृत के अनेक उपरूपक तथा रूपकों में डिम, प्रहसन, हल्लीसक, रासक, रास, लास्य, लास्यनाटक, बीथी आदि लोकनाटकों के ही परिष्कृत रूप हैं। हल्लीसक, रास आदि के लोक-नाट्य के रूप में अभिनीत होने के अनेक प्रमाण मिलते हैं। लोक से संबंधित उत्सवों, अवसरों, मांगलिक पर्वों तथा कार्यों पर इनका अभिनय आवश्यक माना जाता है। इनके लिए उत्कृष्ट कोटि के रंगमंच तथा आकर्षक एवं बहुमूल्य साज-सज्जा की आवश्यकता नहीं पड़ती। लोक नाट्य को प्रधानतया दो भागों में विभक्त किया जाता है- (क) नृत्यपरक लोकनाट्य (ख) प्रहसनात्मक लोक नाट्य। प्रहसनात्मक नाटकों में विभिन्न कथन, शारीरिक मुद्राएं एवं वेशभूषा हास्यास्पद कोटि की होती हैं और इन्हीं के द्वारा व्यंग्यपूर्ण अभिनय किया जाता है। नृत्यपरक लोकनाट्य में सामाजिक तथा पौराणिक घटना को आधार बनाकर संगीत, नृत्य तथा अभिनय की सहायता से मनोरंजन किया जाता है। लोकनाट्य संपूर्ण भारत में विभिन्न रूपों में प्राप्त होता है। कुछ आदिम जातियों के लोक नाट्यों का अभी तक संकलन नहीं हो पाया है। भारतीय लोकनाट्यों के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग रूप प्रचलित है, जैसे-उत्तर प्रदेश में रामलीला, रासलीला, स्वांग, नौटंकी, भाण, चमरवा, कंहरवा, मध्यप्रदेश में मांच, गुजरात में भंवाई, बंगाल में जात्रा, कीर्तन, रास, गंभीरा, महाराष्ट्र में तमाशा, ललित, गोंधल, बहुरूपिया तथा दशावतार एवं दक्षिण में 'यक्षगान' 'भागवत नाटकम्' आदि। उत्तर प्रदेश में लोकनाट्यों की लिखित परंपरा भी प्रचलित रही है। लोकनाट्य के लेखकों में सेठू सिंह, घीसा, फूल सिंह, शंकरदास, चंद्रपाल जाट, चंदरवादी, तौकासिंह आदि की गणना की जाती है। लोकनाट्य परंपरा का इधर तेजी से ह्रास हो रहा है। टेलीविजन के प्रसार और पाश्चात्य अपसंस्कृति के व्यापक असर के कारण लोक नाट्य परंपराओं से हमारी नयी पीढ़ी की रुचि में तेजी से ह्रास हुआ है।

आधार ग्रंथ :

1. हिंदी साहित्य कोश, भाग-1।
2. लोकधर्मी नाट्यपरंपरा, श्याम परमार।
3. भारतीय नाट्य साहित्य, नगेंद्र।

-साभार

डॉ. अमरनाथ

सुधी आलोचक और प्रतिष्ठित भाषाविद् के रूप में ख्याति प्राप्त डॉ. अमरनाथ का जन्म गोरखपुर जनपद (संप्रति महाराजगंज) के रामपुर बुजुर्ग नामक गांव में सन 1954 में हुआ था। इनकी प्रमुख रचनाएं- नारी का मुक्ति संघर्ष, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और परवर्ती आलोचना, आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काव्य चिंतन, समकालीन शोध के आयाम, हिंदी भाषा का समाजशास्त्र, सदी के अंत में हिंदी आदि हैं।

अंतस के 29वें अंक के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार

जैसा कि आप सभी को विदित है कि अंतस पत्रिका में प्रकाशित तीन सर्वश्रेष्ठ रचनाओं के लेखकों को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इसी क्रम में अवगत कराया जाता है कि 29वें अंक की शीर्ष तीन रचनाएं एवं उनके रचनाकार इस प्रकार हैं:-

1. राजा और मछली- प्रोफेसर विपुल अरोड़ा, विद्युत अभियांत्रिकी
2. कैंपस जीवन के बहुरंगी आयामः मोडी- देवनागरी लिपि की कर्सिव सिस्टर?- सारंग एस. नांदेडकर, सहायक कुलसचिव, शैक्षणिक कार्य
3. भारत में मानव रहित विमान (ड्रोन) प्रशिक्षण एवं लाइसेंसिगः आवश्यकता, संभावनाएं और आईआईटी कानपुर आरपीटीओ की अग्रणी भूमिका- शुभम बैरागी, परियोजना कार्यपालक अधिकारी वांतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग

तकनीकी लेख

आण्विक संरचना का अनावरण: एकल क्रिस्टल एक्स-रे विवर्तन

विकिपीडिया से लिया गया

सन 1895 की एक ठंडी शाम थी।

जर्मनी के वुर्जबर्ग नगर की एक प्रयोगशाला में गहरा सन्नाटा पसरा हुआ था। बाहर की दुनिया अपने सामान्य जीवन में व्यस्त थी, लेकिन उस छोटे से कमरे में विज्ञान के इतिहास का एक ऐसा अध्याय लिखा जाने वाला था जो आने वाली पूरी मानव सभ्यता की दिशा बदल देगा।

कमरे में एक वैज्ञानिक अकेला खड़ा था। उसका नाम था विल्हेम रॉटजन। उसके सामने कांच की एक लंबी नली रखी थी। भीतर हवा लगभग शून्य थी। वह उसमें विद्युत प्रवाहित करके कुछ विचित्र प्रयोग कर रहा था। कमरे की सारी रोशनी बंद थी।

तभी अचानक कमरे के कोने में रखी एक विशेष परत लगी पट्टिका चमक उठी। रॉटजन कुछ क्षणों तक उसे देखते रहे। यह असंभव था। क्योंकि वहां तक कोई दिखाई देने वाली रोशनी पहुंच ही नहीं सकती थी।

उन्होंने प्रयोग दोबारा किया। पट्टिका फिर चमकी। उन्होंने तीसरी बार किया। वही परिणाम। उस रात उन्होंने प्रकृति की एक नई शक्ति खोज ली थी। एक ऐसी किरण...जो दिखाई नहीं देती थी...लेकिन पदार्थों के भीतर प्रवेश कर सकती थी।

उन्होंने उसका नाम रखाः **एक्स-किरण।**

'एक्स' इसलिए क्योंकि उस समय स्वयं खोजकर्ता भी नहीं जानता था कि आखिर उसने खोजा क्या है।

लेकिन उस रात शायद रॉटजन भी नहीं जानते थे कि उनकी यह खोज एक दिन डॉक्टरों को शरीर के भीतर देखने देगी... हवाई अड्डों को सुरक्षा देगी... और वैज्ञानिकों को परमाणुओं के संसार का अदृश्य नक्शा बनाने की शक्ति देगी।

क्रिस्टल

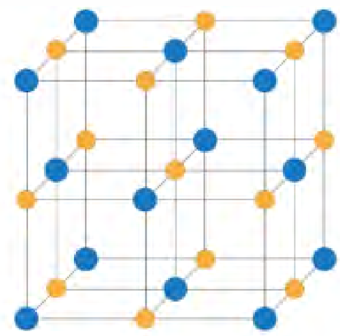

विकिपीडिया से लिया गया

अब जरा अपनी हथेली की ओर देखिए। कल्पना कीजिए कि आपकी हथेली पर नमक का एक छोटा सा दाना रखा है। दिखने में साधारण। इतना साधारण कि हम उसे बिना सोचे-समझे रोज भोजन में प्रयोग करते हैं।

लेकिन यदि कोई आपको बताए कि उस छोटे से दाने के भीतर अरबों-खरबों परमाणु एक पूर्ण अनुशासन में खड़े हैं... तो शायद विश्वास करना कठिन लगे।

हर परमाणु अपनी निश्चित जगह पर। किसी विशाल सैनिक परेड की तरह, सोडियम यहां, क्लोरीन वहां, सभी निश्चित दूरी पर। सभी निश्चित कोणों पर, न कोई अव्यवस्था, न कोई भ्रम। मानो प्रकृति ने उस छोटे से दाने के भीतर एक सूक्ष्म नगर बसाया हो।

लेकिन समस्या यह है कि हम उसे देख नहीं सकते। दुनिया का सबसे शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शी भी सीधे यह नहीं बता सकता कि वह परमाणु वास्तव में कैसे व्यवस्थित है और विज्ञान के सामने यही चुनौती थी।

यदि हम परमाणुओं को देख नहीं सकते... तो उनके भीतर झांकें कैसे?

यहीं से जन्म हुआ एक अद्भुत वैज्ञानिक उपाय का।

वैज्ञानिकों ने सोचा-

यदि हम किसी चीज को सीधे नहीं देख सकते, तो क्यों न उससे टकराकर लौटने वाले संकेतों को समझें?

कुछ वैसा ही जैसे कोई व्यक्ति बंद गुफा में चिल्लाकर उसकी प्रतिध्वनि से अंदाजा लगाता है कि भीतर कितना खाली स्थान है।

इसी विचार ने जन्म दिया उस तकनीक को जिसे आज हम कहते हैं:

'एकल क्रिस्टल एक्स-किरण विवर्तन सिंगल क्रिस्टल एक्स-रे डिफ्रेक्सन-एससी-एक्सआरडी' यह नाम थोड़ा कठिन लगता है। लेकिन इसका विचार आश्चर्यजनक रूप से सरल है।

इसे समझने के लिए एक दृश्य की कल्पना कीजिए। आप पहाड़ों के बीच खड़े हैं। आप जोर से आवाज लगाते हैं। कुछ क्षण बाद वही आवाज लौटकर वापस आती है। इससे आपको पता चलता है कि सामने कोई कठोर सतह मौजूद है।

अब बस आवाज की जगह एक्स-किरण रख दीजिए और पहाड़ की जगह एक छोटा क्रिस्टल।

जब एक्स-किरण उस क्रिस्टल के भीतर प्रवेश करती है, तो वह भीतर मौजूद परमाणुओं से टकराती है। हर परमाणु उस किरण को अलग दिशा में वापस भेज देता है। जैसे हजारों छोटे-छोटे दर्पण एक साथ प्रकाश को बिखेर रहे हों।

यह बिखराव कोई अव्यवस्थित घटना नहीं है। इसके भीतर एक पैटर्न छिपा होता है और वही पैटर्न पदार्थ के भीतर की पूरी कहानी कहता है।

ब्रैग का नियमः वह चाबी जो ताला खोलती है-

विज्ञान केवल अनुमान से कार्य नहीं करता। इसके पीछे एक नियम कार्य करता है - एक ऐसा नियम जिसने पूरे क्रिस्टल विज्ञान की नींव रखी। इसे कहा जाता है ब्रैग का नियम।

इसे समझने के लिए गणित की आवश्यकता नहीं। बस कल्पना कीजिए कि आपके सामने कई समान दूरी पर बनी हुई सीढ़ियां हैं। अब यदि आप ऊपर से एक गेंद फेंकते हैं, तो वह अलग-अलग सीढ़ियों से टकराकर वापस आएगी। यदि सीढ़ियों के बीच दूरी बदल जाए... तो गेंद के लौटने का ढंग भी बदल जाएगा।

क्रिस्टल के भीतर परमाणु भी ऐसी ही परतों में व्यवस्थित रहते हैं। जब एक्स-किरण इन परतों से टकराती है, तो वह वापस लौटती है। यदि परमाणुओं के बीच दूरी कम है तो लौटने का तरीका अलग होगा। यदि दूरी अधिक है तो पैटर्न बदल जाएगा।

वैज्ञानिक इस लौटने के पैटर्न को देखकर समझ जाते हैं कि परमाणु कितनी दूरी पर स्थित हैं।

सरल शब्दों में, ब्रैग का नियम वह चाबी है जिससे वैज्ञानिक यह समझते हैं कि पदार्थ के भीतर परमाणु किस प्रकार व्यवस्थित हैं।

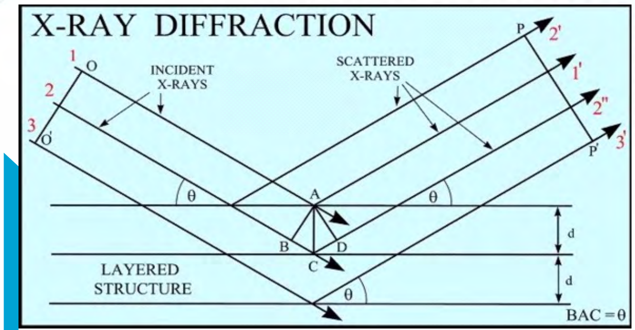

बुकर कारपोरेशन से लिया गया

यह कुछ-कुछ ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति केवल दीवार से टकराकर लौटती आवाज सुनकर बता दे कि कमरा कितना बड़ा है।

इस तकनीक के माध्यम से हम परमाणुओं की सटीक स्थिति, बंधन लंबाई बांड लेंथ, बंधन कोण बांड सिंगल और अन्य महत्वपूर्ण संरचनात्मक विवरण प्राप्त कर सकते हैं। यह जानकारी न केवल यौगिक की पुष्टि करती है, बल्कि उसके गुणधर्मों, प्रतिक्रियाशीलता और अनुप्रयोगों की भविष्यवाणी करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आईआईटी कानपुर की एससी-एक्सआरडी सुविधा- जहां अदृश्य दिखाई देने लगता है।

अब कहानी को भारत ले चलते हैं।

उत्तर प्रदेश, कानपुर। **भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान** की अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं।

यहां एक शोधार्थी कई सप्ताह तक परिश्रम करके एक नया रासायनिक पदार्थ बनाता है। उसने सावधानी से रासायनिक अभिक्रियाएं कीं। तापमान नियंत्रित किया। घोल तैयार किया। धीरे-धीरे उस घोल से एक सुंदर क्रिस्टल बनने लगा। वह प्रसन्न है। उसे लगता है कि उसने एक बिल्कुल नया उपयोगी पदार्थ बना लिया है। लेकिन विज्ञान विश्वास पर नहीं चलता, विज्ञान प्रमाण मांगता है और रसायन विज्ञान कभी-कभी बड़ा छलिया होता है। कई बार वैज्ञानिक सोचता है कि उसने एक प्रकार का अणु बनाया है... लेकिन अभिक्रिया चुपचाप कोई दूसरा अणु बना चुकी होती है। बाहर से दोनों एक जैसे दिखते हैं। सफेद चूर्ण, चमकदार क्रिस्टल, सब कुछ सामान्य। लेकिन भीतर की कहानी बिल्कुल अलग हो सकती है।

यहीं इस तकनीक की असली शक्ति सामने आती है।

आईआईटी कानपुर के रसायन विभाग में इस अत्याधुनिक तकनीक के लिए दो उच्चस्तरीय उपकरण स्थापित हैं - **ब्रूकर डी8 क्वेस्ट (Bruker D8 Quest) एकल क्रिस्टल एक्स-रे विवर्तनमापी।**

उस छोटे से क्रिस्टल को मशीन में रखा जाता है। उस पर एक्स-किरण डाली जाती है। किरण भीतर प्रवेश करती है। परमाणुओं से टकराती है। सैकड़ों दिशाओं में बिखरती है। विशेष संवेदक उन संकेतों को दर्ज करता है, फिर संगणक उन संकेतों का विश्लेषण करता है।

विकिपीडिया से लिया गया

और अचानक... कुछ मिनटों बाद... एक अणु अपनी पूरी आंतरिक संरचना के साथ स्क्रीन पर उभर आता है।

अब वैज्ञानिक जान जाता है-

कौन सा परमाणु कहां स्थित है। किसके साथ कौन जुड़ा है। दो परमाणुओं के बीच दूरी कितनी है। बंधन किस कोण पर बना है। संरचना स्थिर है या अस्थिर। और सबसे महत्वपूर्ण... उसका प्रयोग वास्तव में सफल हुआ या नहीं।

यदि यह परीक्षण न किया जाता... तो महीनों तक पूरा शोध गलत दिशा में चलता रहता। एक छोटे से क्रिस्टल ने महीनों की मेहनत बचा ली।

ठंड- परमाणुओं को स्थिर करने का रहस्य

लेकिन एक और समस्या होती है। परमाणु कभी शांत नहीं बैठते। वे लगातार कंपन करते रहते हैं।

कल्पना कीजिए कि आप किसी तेजी से घूमते पंखे की तस्वीर खींचने की कोशिश करें। चित्र धुंधला आएगा। परमाणुओं के साथ भी यही होता है।

इसलिए वैज्ञानिक अत्यंत निम्न तापमान पर मापन करते हैं। इतनी ठंड कि परमाणुओं की गति धीमी पड़ जाए।

आईआईटी कानपुर के इन उपकरणों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि ये **द्रव नाइट्रोजन (लगभग -173 डिग्री सेल्सियस)** के तापमान पर मापन कर सकते हैं। जब कंपन कम होता है... संरचना अधिक स्पष्ट दिखाई देती है। मानो प्रकृति अचानक अपनी लिखावट साफ कर दे।

यह सुविधा अस्थिर या मेटास्टेबल यौगिकों के अध्ययन में विशेष रूप से उपयोगी है, जो सामान्य तापमान पर विघटित हो सकते हैं - ऐसे पदार्थ जो आपकी मेज पर रखते ही उड़ जाते हैं या रंग बदलने लगते हैं। इन्हें स्टडी करना वैसा ही है जैसे बर्फ के टुकड़े को गर्मी में पिघलने से पहले उसकी फोटो खींचना।

डी8 क्वेस्ट मॉडल की एक और विशेषता यह है कि यह अत्यंत सूक्ष्म मात्रा के नमूनों पर भी सटीक डेटा संग्रहित कर सकता है। यानी अगर आपके पास केवल एक बालू के दाने के बराबर क्रिस्टल है, तो भी यह उपकरण उसकी संरचना बता सकता है। यही कारण है कि कई वैज्ञानिक इस तकनीक को पदार्थों का सत्यदर्शी कहते हैं।

अनुसंधान में उपयोग एवं अनुप्रयोग

यदि अणु गलत बना है... यह पकड़ लेगा। यदि संरचना अपेक्षा से अलग है... यह बता देगा। यदि शोध भटक रहा है... यह दिशा बदल देगा। यह किसी जासूस की तरह है... जो बिना आवाज किए सच्चाई सामने रख देता है। इस तकनीक का महत्व केवल संरचना देखने तक सीमित नहीं है। यह वास्तविक समस्याएं हल करती है।

औषधि रसायन विज्ञान (मेडिसिनल केमिस्ट्री) में

मान लीजिए वैज्ञानिक एक नई औषधि विकसित कर रहा है। उसे आशा है कि उसका अणु किसी रोगाणु को निष्क्रिय कर देगा। लेकिन यदि उस अणु का आकार थोड़ा भी अलग हुआ... तो वह औषधि बिल्कुल काम नहीं करेगी। यह कुछ वैसा है जैसे ताले में चाबी लगभग सही हो... लेकिन एक दांत थोड़ा अलग हो, ताला कभी नहीं खुलेगा। औषधि विज्ञान में भी यही होता है। यदि अणु का आकार गलत है... तो वह शरीर के भीतर अपने लक्ष्य से जुड़ ही नहीं पाएगा। इसलिए पहले उसकी संरचना जानना अनिवार्य है।

उत्प्रेरक (कैटालिस्ट) के क्षेत्र में

उत्प्रेरक वे पदार्थ हैं जो रासायनिक क्रियाओं को तेज करते हैं। यदि उनकी संरचना थोड़ी सी भी अलग हुई... तो पूरा व्यवहार बदल जाता है। यदि हम उत्प्रेरक की संरचना जानते हैं, तो हम उसमें सुधार कर

सकते हैं और उसे अधिक कुशल बना सकते हैं।

सामग्री विज्ञान (मैटीरियल सांइस) में

किसी सामग्री के गुणधर्म उसकी आण्विक संरचना पर निर्भर करते हैं। हीरा और ग्रेफाइट दोनों कार्बन से बने हैं, लेकिन उनके गुणधर्म बहुत अलग हैं- क्योंकि उनकी आण्विक संरचना अलग है। एससी-एक्सआरडी हमें यह समझने में मदद करता है कि संरचना में परिवर्तन से गुणधर्म में क्या परिवर्तन होता है।

अंत:विषयी सहयोग- सीमाओं को पार करना

यह सुविधा न केवल रसायन विभाग बल्कि संस्थान के अन्य विभागों एवं भारत के विभिन्न विश्वस्तरीय संस्थानों के शोधार्थियों के लिए भी खुली है।

यह अंत:विषयी सहयोग की एक मूक प्रतीक है। जिस प्रकार हमें बीमारी की पहचान के लिए कई तरह के टेस्ट कराने पड़ते हैं - खून की जांच, एक्स-रे, सीटी स्कैन- उसी प्रकार किसी नए पदार्थ की पूरी पहचान के लिए कई तकनीकों की आवश्यकता होती है। एससी-एक्सआरडी उनमें से एक महत्वपूर्ण तकनीक है जो पदार्थ की आण्विक संरचना बताती है।

इसका उपयोग केवल रसायन विज्ञान तक सीमित नहीं है। भौतिकी, जीव विज्ञान, औषधि विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, नैनो प्रौद्योगिकी, पर्यावरण विज्ञान - लगभग हर आधुनिक वैज्ञानिक क्षेत्र एक ही मूल प्रश्न पूछता है, **'मेरे पदार्थ के भीतर परमाणु किस प्रकार व्यवस्थित हैं?'** इस प्रश्न का सबसे विश्वसनीय उत्तर अक्सर यही तकनीक देती है। हम अक्सर सोचते हैं कि विज्ञान के सबसे बड़े उपकरण वे हैं जो हमें तारों तक ले जाते हैं। विशाल दूरबीनें... अंतरिक्ष यान... उपग्रह। लेकिन कभी-कभी विज्ञान की सबसे महान मशीनें वे होती हैं... जो हमें सबसे छोटी दुनिया दिखाती हैं। इतनी छोटी... कि लाखों परमाणु एक बाल की चौड़ाई में समा जाएं और उस सूक्ष्म संसार में झांकने के लिए विज्ञान ने जो खिड़की बनाई है... उसका नाम है- एकल क्रिस्टल एक्स-किरण विवर्तन।

निष्कर्ष

कल्पना कीजिए कि आपके सामने एक छोटा सा क्रिस्टल रखा है। देखने में साधारण, लेकिन उसके भीतर प्रकृति का एक गुप्त मानचित्र छिपा है। आप एक अदृश्य किरण भेजते हैं, वह भीतर जाती है। परमाणुओं से टकराती है और लौटती है। कुछ बिखरे संकेत छोड़ती है। उन्हीं संकेतों से पूरा ब्रह्मांड जैसा एक सूक्ष्म संसार खुल जाता है।

आईआईटी कानपुर के रसायन विभाग में एकल क्रिस्टल एक्स-रे विवर्तन सुविधा, आधुनिक शोध की एक अनिवार्य आवश्यकता है। यह सुविधा न केवल नए यौगिकों की संरचना निर्धारण में सहायक है, बल्कि वैश्विक स्तर के शोध को संभव बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अत्याधुनिक उपकरण, विशेषज्ञों का मार्गदर्शन और अंत:विषयी सहयोग की भावना इस सुविधा को विशेष बनाती है। यह वास्तव में आण्विक संरचनाओं के अनावरण का एक अद्‌भुत माध्यम है, जो रसायन विज्ञान के क्षेत्र में नई खोजों का मार्ग प्रशस्त करता है।

एक छोटे से क्रिस्टल में परमाणुओं की व्यवस्था को जानना, मानो किसी पहेली को सुलझाने जैसा है... और जब वह पहेली सुलझ जाती है, तो हमें न केवल उस पदार्थ के बारे में, बल्कि पूरी प्रकृति के बारे में कुछ नया जानने को मिलता है। यही एससी-एक्सआरडी सुविधा का वास्तविक महत्व है। यह हमें प्रकृति के रहस्यों को समझने का एक अनोखा अवसर प्रदान करती है।

शायद विज्ञान की सबसे सुंदर बात यही है। हम चीजों को केवल देखते नहीं हम उनसे प्रश्न पूछते हैं, और कभी-कभी... उत्तर एक छोटे से क्रिस्टल के भीतर छिपा होता है।

प्रकृति हमेशा बोलती है। बस उसकी भाषा बहुत सूक्ष्म होती है और एक्स-किरणों ने हमें वह भाषा पढ़ना सिखा दिया।

-दीपांकर सिंह
तकनीकी अधीक्षक
रसायन अभियांत्रिकी
भा.प्रौ.सं. कानपुर

गहन हिंदी कार्यशाला- दिनांक 04 से 08 मई 2026

आलस्य-भक्त

अजगर करै न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम ।।

प्रिय ठलुआ-वृंद! यद्यपि हमारी सभा समता के पहियों पर चल रही है और देवताओं की भांति हममें कोई छोटा-बड़ा नहीं है, तथापि आप लोगों ने मुझे इस सभा का पति बनाकर मेरे कुंआरेपन के कलंक को दूर किया है। नृपति और सेनापति होना मेरे स्वप्न से भी बाहर था। नृपति नहीं तो नारी-पति होना प्रत्येक मनुष्य की पहुंच के भीतर है, किंतु मुझ-जैसे आलस्य-भक्त के लिए विवाह में पाणिग्रहण तक का तो भार सहना गम्य था। उसके आगे सात बार अग्नि की परिक्रमा करना जान पर खेलने से कम न था। जान पर खेल कर जान का जंजाल खरीदना मूर्खता ही है - 'अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्, विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्' का कथन मेरे ऊपर लागू हो जाता। 'ब्याहा भला कि क्वांरा' - वाली समस्या ने मुझे अनेक रात्रि निद्रा देवी के आलिंगन से वंचित रखा था, किंतु जब से मुझे सभापतित्व का पद प्राप्त हुआ है, तब से यह समस्या हल हो गई है। आलसी के लिए इतना ही आराम बहुत है। यद्यपि मेरे सभापति होने की योग्यता में तो आप लोगों को संदेह करने के लिए कोई स्थान नहीं है, तथापि आप लोगों को अपने सिद्धांतों को बतला अपनी योग्यता का परिचय देना अनुचित न होगा।

वैसे तो आलसी के लिए इतने वर्णन का भी कष्ट उठाना उसके धर्म के विरुद्ध है, किंतु आलस्य के सिद्धांतों का प्रचार किए बिना संसार की विशेष हानि होगी और मेरे भी पेट में बातों के अजीर्ण होने की संभावना है। इस अजीर्ण-जन्य कष्ट के भय से मैंने अपनी जिह्वा को कष्ट देने का साहस किया है।

मनुष्य-शरीर आलस्य के लिए ही बना है। यदि ऐसा न होता, तो मानव-शिशु भी जन्म से मृग-शावक की भांति छलांगें मारने लगता, किंतु प्रकृति की शिक्षा को कौन मानता है। नई-नई आवश्यकताओं को बढ़ाकर मनुष्य ने अपना जीवन अस्वाभाविक बना लिया है। मनुष्य ही को ईश्वर ने पूर्ण आराम के लिए बनाया है। उसी की पीठ खाट के उपयुक्त चौड़ी बनाई है, जो ठीक उसी से मिल जावे। प्रायः अन्य सब जीवधारी पेट के बल आराम करते हैं। मनुष्य चाहे पेट की सीमा से भी अधिक भोजन कर ले, उसके आराम के अर्थ पीठ मौजूद है। ईश्वर ने तो हमारे आराम की पहले ही से व्यवस्था कर दी है। हम ही उसका पूर्ण उपयोग नहीं कर रहे हैं।

निद्रा का सुख समाधि-सुख से अधिक है, किंतु लोग उस सुख को

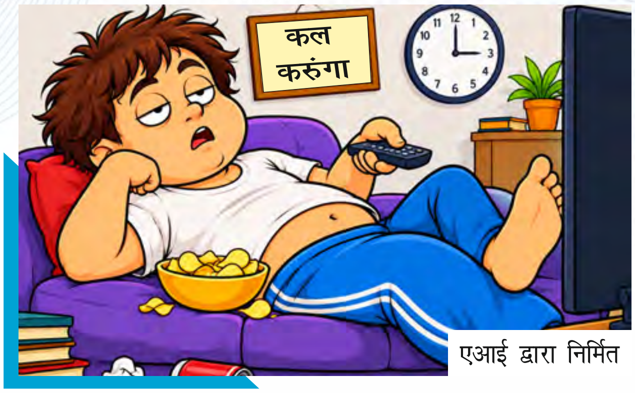

एआई द्वारा निर्मित

अनुभूत करने में बाधा डाला करते हैं। कहते हैं कि सवेरे उठा करो, क्योंकि चिड़ियां और जानवर सवेरे उठते हैं; किंतु यह नहीं जानते कि वे तो जानवर हैं और हम मनुष्य हैं। क्या हमारी इतनी भी विशेषता नहीं कि सुख की नींद सो सकें! कहां शय्या का स्वर्गीय सुख और कहां बाहर की धूप और हवा का असह्य कष्ट! इस बात के ऊपर निर्दयी जगाने वाले तनिक भी ध्यान नहीं देते। यदि उनके भाग्य में सोना नहीं लिखा है, तो क्या सब मनुष्यों का एक-सा ही भाग्य है! सोने के लिए लोग तरसा करते हैं और सहस्रों रुपया डॉक्टरों और दवाइयों में व्यय कर डालते हैं और यह अवैतनिक उपदेशक लोग स्वाभाविक निद्रा को आलस्य और दरिद्रता की निशानी बतलाते हैं। ठीक ही कहा है - 'आए नाग न पूजिए बामी पूजन जाएं।' लोग यह समझते हैं कि हम आलसियों से संसार का कुछ भी उपकार नहीं होता। मैं यह कहता हूं कि यदि मनुष्य में आलस्य न होता, तो वह कदापि उन्नति न करता और जानवरों की भांति संसार में वृक्षों के तले अपना जीवन व्यतीत करता। आलस्य के कारण मनुष्य को गाड़ियों की आवश्यकता पड़ी। यदि गाड़ियां न बनतीं, तो आजकल वाष्प-यान और वायुयान का भी नाम न होता। आलस्य के ही कारण मनुष्य को तार और टेलीफोन का आविष्कार करने की आवश्यकता हुई। अंग्रेजी में एक उक्ति ऐसी है कि Necessity is the mother of invention अर्थात आवश्यकता आविष्कार की जननी है, किंतु वे लोग यह नहीं जानते कि आवश्यकता आलस्य की आत्मजा है। आलस्य में ही आवश्यकताओं का उदय होता है। यदि आप स्वयं जाकर अपने मित्रों से बातचीत कर आवें, तो टेलीफोन की क्या आवश्यकता थी? यदि मनुष्य हाथ से काम करने का आलस्य न करता, तो मशीन को भला कौन पूछता? यदि हम आलसी लोगों के हृदय की आंतरिक इच्छा का मारकोनी साहब को पता चल गया, तो शीघ्र ही ऐसे यंत्र का आविष्कार हो जावेगा, जिसके द्वारा हमारे विचार पत्र पर स्वतः अंकित हो जाया करेंगे। फिर हम लोग बोलने के कष्ट से भी बच जावेंगे। विचार की तरंगों को तो वैज्ञानिक लोगों ने सिद्ध कर ही दिया है। अब कागज पर उनका प्रभाव डालना रह गया। दुनिया के बड़े-बड़े आविष्कार आलस्य और ठलुआ-पंथी में ही हुए हैं। वाट साहब ने (जिन्होंने कि वाष्प शक्ति का आविष्कार किया है) अपने ज्ञान को एक

ठलुआ बालक की स्थिति से ही प्राप्त किया था। न्यूटन ने भी अपना गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत बेकारी में ही पाया था। दुनिया में बहुत बड़ी-बड़ी कल्पनाएं उन्हीं लोगों ने की हैं, जिन्होंने चारपाई पर पड़े-पड़े ही जीवन का लक्ष्य पूर्ण किया है। अस्तु, संसार को लाभ हो या हानि हो, इससे हमको प्रयोजन ही क्या? यह तो सांसारिक लोगों के संतोष के लिए हमने कह दिया, नहीं तो हमको अपने सुख से काम है। यदि हम सुखी हैं, तो संसार सुखी है। ठीक ही कहा है कि 'आप सुखी, तो जग सुखी।' सुख का पूरा-पूरा आदर्श वेदांत में बतलाया है। उस सुख के आदर्श में पलक मारने का भी कष्ट उठाना महान पाप है। अष्टावक्र गीता में कहा है-

व्यापारे खिद्यते यस्तु निमेषोन्मेषयोरपि;
तस्यालस्यधुरीणस्य सुख नान्यस्य कस्यचित (षोडश प्रकरण, श्लोक 4)

अर्थात जो पुरुष नेत्रों के निमेष-उन्मेष के व्यापार (नेत्रों के खोलने-मूंदने) में ही परिश्रम मानकर दुःखित होता है, इस परम आलसी एवं ऐसे निष्क्रिय पुरुष को ही परम सुख मिलता है, अन्य किसी को नहीं।

लोग कहते हैं कि ऐसे ही आलस्य के सिद्धांतों ने भारतवर्ष का नाश कर दिया है। परंतु वे यह नहीं जानते कि भारतवर्ष का नाश इसलिए नहीं हुआ कि वह आलसी है वरन इसलिए कि अन्य देशों में इस आलस्य के स्वर्ण-सिद्धांत का प्रचार नहीं हो पाया है। यदि उन देशों को भी भारत की यह शिक्षा-दीक्षा मिल गई होती, तो वे शय्या-जन्य नैसर्गिक सुख को त्याग यहां आने का कष्ट न उठाते। यदि बिना हाथ-पैर चलाए लेटे रहने में सुख मिल सकता है, तो कष्ट उठाने की आवश्यकता ही क्या? बेचारे अर्जुन ने ठीक ही कहा था कि युद्ध द्वारा रक्त-रंजित राज्य को प्राप्त करके मैं अश्रेय का भागी बनना नहीं चाहता। वे वास्तव में आराम से घर बैठना चाहते थे, किंतु वह भी कृष्ण जी के बढ़ावे में आ गए और 'यशो लभस्व' के आगे उनकी कुछ भी न चल सकी। फिर फल क्या हुआ कि सारे वंश का नाश हो गया। इस युद्ध का कृष्ण भगवान को भी अच्छा फल मिल गया। उनका वंश भी पहले की लड़ाई में नष्ट हो गया।

महाभारत में कहा है कि-

'दुःखादुद्विजते सर्वः सुखं सर्वस्य चेप्सितम्'

अर्थात् दुःख से सब लोग भागते हैं एवं सुख को सब लोग चाहते हैं। हम भी इसी स्वाभाविक नियम का पालन करते हैं। इन सिद्धांतों से तो आपको प्रकट हो गया होगा कि संसार में आलस्य कितना महत्व रखता है। इसमें संसार की हानि ही क्या? मैंने अपने सिद्धांतों के अनुकूल जीवन व्यतीत करने के लिए कई मार्ग सोचे, किंतु अभाग्य-वश वह पूर्णतया सफल न हुए, इसमें मेरा दोष नहीं है। इसमें तो संसार ही का दोष है; क्योंकि वह इन सिद्धांतों के लिए अभी परिपक्व नहीं है। अस्तु, वर्तमान अवस्था में बिना उद्योग के भी बहुत कुछ सुख मिल सकता है। उद्योग करके सुख प्राप्त किया, तो वह किस काम का? आलसी जीवन के लिए सबसे अच्छा स्थान तो शफाखाने की चारपाई है। एक बार मेरा विचार हुआ था कि किसी बहाने से युद्धक्षेत्र में पहुंच जाऊं तथा वहां पर थोड़ी-बहुत चोट खाकर शफाखाने के किसी पलंग में स्थान मिल जाए, किंतु लड़ाई के मैदान तक जाने का कष्ट कौन उठावे और बिना गए तो उन पलंगों का उपभोग करना इतना ही दुर्लभ है, जितना पापी के लिए स्वर्ग।

भाग्य-वश मुझे एक समय आपरेशन कराने की आवश्यकता पड़ गई, और थोड़े दिनों के लिए बिना युद्धक्षेत्र गए ही मेरा मनोरथ सिद्ध हो गया; किंतु पुण्य-क्षीण होने पर शफाखाना छोड़ना पड़ा। मैं बहुत चाहता था कि मुझे जल्दी आराम न हो, किंतु डॉक्टर लोग मानने वाले जीव थोड़े ही हैं; अतिशीघ्र आराम कराके मुझे विदा कर दिया, मानो मेरे आराम से स्पर्धा होती थी। तब से फिर ऐसे सुअवसर की बाट जोह रहा हूं कि मुझे वही पलंग प्राप्त हो, जहां पर कि मल-मूत्र त्याग करने के लिए भी स्थान छोड़ने का कष्ट न उठाना पड़े। खैर, अब भी जहां तक होता है, मैं शय्या की सेवा से अपने को विमुख नहीं रखता। मेरा सब कारबार, भोजन एवं कसरत भी उसी सुख-निधान पलंग पर हो जाती है। कभी-कभी नहाने-धोने के लिए उससे वियोग होता है, तो उसको एक आवश्यक बुराई समझकर जैसे-तैसे स्वीकार कर लेता हूं। धन्य हैं तिब्बत के लोग, जिन्हें नहाने का कष्ट नहीं उठाना पड़ता। ईश्वर ने न जाने मेरा जन्म वहां क्यों नहीं दिया? तिब्बत का प्राचीन नाम त्रिविष्टप था। शायद इसी सुख के कारण वही बैकुंठ कहलाता है। बैकुंठ को लोग क्यों चाहते हैं, क्योंकि वहां आलस्य-धर्म का पूर्णतया पालन हो सकता है। वहां किसी बात का कष्ट ही नहीं उठाना पड़ता। कामधेनु और कल्पवृक्ष को ईश्वर ने हमारे ही निमित्त निर्माण किया है। आजकल कलियुग में और भी सुभीता हो गया है। अब स्वर्ग तक कष्ट करने की भी आवश्यकता नहीं। कल्पवृक्ष बिजली के बटन के रूप में महीतल पर अवतरित हो गया है। बटन दबाइए पंखा चलने लगा, झाड़ू भी लग जावेगा, यहां तक कि पका-पकाया भोजन भी तैयार होकर हाजिर हो जावेगा। बिना परिश्रम के चौथी-पांचवीं मंजिल पर लिफ्ट द्वारा पहुंच जाते हैं। यह सब आलस्य की ही आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए संसार में उन्नति का क्रम चला है; और उन्नति में गौरव मानने वाले लोगों को हम आलसियों का अनुगृहीत होना चाहिए।

उपर्युक्त व्यवस्था से प्रकट हो गया कि आलस्य का इस संसार में इतना महत्व है। अब मैं आप महानुभावों के शिक्षार्थ एक आदर्श आलस्याचार्य का वर्णन कर अपने वक्तव्य को समाप्त करूंगा। क्योंकि मैं समझता हूं

कि आप लोगों की पीठें शय्या के लिए बहुत ही उत्सुक हो रही होंगी।

कहा जाता है कि एक बड़े भारी आलसी थे। वह जहां तक होता था, हाथ क्या अपनी उंगली को भी कष्ट नहीं देना चाहते थे। उनके मित्र वर्ग ने उनसे तंग आकर सोचा कि इनको जीवित ही कब्र की शांतिमयी निद्रा का सुख प्राप्त करा दें। इस इरादे से वह उनको चारपाई पर रख ले चले। रास्ते में एक धनाढ्य महिला मिली। उसने जब यह शव-सा जाता हुआ मनुष्य देखा, तो उसका कुतूहल बहुत बढ़ा और उसने शय्या-वाहकों से सब वृत्तांत पूछा। उस दयामयी स्त्री ने हमारे चरित्र नायक से कहा कि आप मेरे यहां चलने की कृपा कीजिए। मैं आपको बिना कष्ट के ही भोजनादि से संतुष्ट करती रहूंगी। हमारे आलस्याचार्य ने पूछा कि आप मुझे भोजन में क्या-क्या प्रदान करेंगी? उस महिला ने बहुत-से पदार्थों का नाम लिया, उनमें उबले हुए आलू भी थे। इस पर उन्होंने कहा कि आलुओं को छीलेगा कौन? (लंच में कभी-कभी बिना छिले ही आलू देते हैं) इस पर उस स्त्री को बहुत झुंझलाहट आई। हमारे आलस्याचार्य ने कहा कि मैं तो पहले ही से जानता था कि आप मेरी सहायता न कर सकेंगी और आपने वृथा मेरा समय नष्ट किया, नहीं तो मैं अभी तक आर्टयन आनंद-भवन में प्रवेश कर चुका होता। इतना कहकर उन्होंने शय्या-वाहकों को आगे चलने की आज्ञा दी।

इस आदर्श को मूर्खता न समझिए। वेदांत का मोक्ष और बौद्ध-निर्वाण इससे भिन्न नहीं है। भेद केवल इतना ही है कि इस प्रकार के जीवन को दार्शनिक रूप नहीं दिया गया है। इसलिए आप लोग जो इस सभा के सदस्य हैं, मेरे सिद्धांतों से सहमत हो निम्नलिखित प्रस्तावों को स्वीकार करें-

यह सभा प्रस्ताव करती है कि भारत-सरकार के कानून-विभाग से यह प्रार्थना की जावे कि ताजीरात-हिंद में एक धारा बढ़ाकर दिन-रात में दस घंटों से कम सोना दंडनीय बनाया जावे, क्योंकि कम सोने वाला मनुष्य आत्म-हत्या का दोषी होता है।

यह सभा प्रस्ताव करती है कि जो लोग ताश खेलना नहीं जानते हैं अथवा जो लोग तंबाकू न पीते हों, उन लोगों पर आमदनी के 5/- रुपए प्रतिशत के हिसाब से कर लगाने की प्रार्थना की जावे। इससे सरकार की आमदनी बढ़ेगी। इसके सिवा लोगों को ठलुआ-पंथी से अरुचि न होगी।

यह सभा प्रस्ताव करती है कि जो लोग इस सभा में रुपया-पैसा कमाने या और कोई उपयोगी बात जिसकी कीमत आने-पाइयों में हो सकती है, कहेंगे, वे इस सभा से बहिष्कृत कर दिए जावेंगे।

यह सभा प्रस्ताव करती है कि अमेरिका और इंग्लैंड की मोटर-कंपनियों से निवेदन किया जावे कि भविष्य में जो मोटरें बनवाई जावें वे ऐसी हों

एआई द्वारा निर्मित

कि उनमें पैर पसारकर लेटे हुए सफर कर सके। इसके अतिरिक्त ऐसी छोटी-छोटी मोटर-मशीनें तैयार करवाई जावें कि वे हमारी चारपाइयों में लगाई जा सकें और बटन दबाने से हमारी चारपाई एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सके। पहले लोगों की कल्पना शक्ति अच्छी थी। वे वायुयान को उड़नखटोला कहते थे। खटिया नहीं, तो खटोला अवश्य ही था। उड़नखटोला के स्थान में मोटर-पलंगों की आयोजन संसार की उन्नति के लिए परमावश्यक है।

यह सभा प्रस्ताव करती है कि सरकार से यह प्रार्थना की जावे कि संसार में सबसे बड़े शांति-स्थापनकर्ता को जो नोबल प्राइज मिलती है, वह सबसे बड़े आलसी को दिया जावे; क्योंकि आलसियों के बराबर संसार में दूसरा कोई भी शांति-स्थापनकर्ता हो ही नहीं सकता। यदि वह इनाम काम करने वाले शक्तिशाली पुरुष को दिया जावेगा, तो वह कैसर की भांति संसार में युद्ध की ज्वाला को प्रचंड कर पुरस्कार-दाता की आत्मा को दुःख देगा।

-साभार

बाबू गूलाबराय

बाबू गुलाबराय आधुनिक हिंदी साहित्य के एक मूर्धन्य आलोचक, प्रसिद्ध निबंधकार और अद्वितीय व्यंग्यकार थे। उन्होंने हिंदी गद्य साहित्य, विशेष रूप से आलोचना और गंभीर निबंध लेखन को एक नई दिशा प्रदान की। इनका जन्म 17 जनवरी, 1888 को उत्तर प्रदेश के इटावा जनपद में हुआ। इन्होंने आगरा के सेंट जॉन्स कॉलेज में हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में लंबे समय तक अध्यापन कार्य किया। इनकी रचनाओं में 'ठलुआ क्लब', 'मेरी असफलताएं' (प्रसिद्ध आत्मकथात्मक निबंध), 'जीवन-पशु', 'मेरे मानसिक उपादान', 'कुछ उथले-कुछ गहरे' 'नवरस', 'हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास', 'काव्य के रूप', 'सिद्धांत और अध्ययन', 'नाट्य विमर्श' आदि प्रमुख हैं। आगरा विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट् की मानद उपाधि से सम्मानित किया। भारत सरकार ने जून 2002 में उनके सम्मान में 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया।

समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में साहित्यकार की भूमिका

महाकवि रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं कि-

''समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।

जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध ।।''

वर्तमान समय वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, पर्यावरणीय संकट, युद्ध, आर्थिक असमानता तथा सांस्कृतिक बदलावों का समय है। आज विश्व पहले की अपेक्षा अधिक निकट दिखाई देता है, परन्तु साथ ही अनेक चुनौतियों से भी घिरा हुआ है। ऐसे समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में प्रत्येक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

एक साहित्यकार की दृष्टि से देखें तो यह समय केवल विकास और उपलब्धियों का नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों की रक्षा और विश्व-कल्याण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने का भी है। समय-समय पर साहित्य सदैव समस्या के समाधान की बात करता आया है, न कि समस्या को देखकर मात्र विलाप करता रहा है। उदाहरणस्वरूप, वीरगाथा काल के कवि बिहारी अपने सम्राट को सचेत करते हुए लिखते हैं-

''नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।

अली कली ही सौं बंध्यौ, आगैं कौन हवाल॥''

अपने ही नियोक्ता (सनद रहे वीरगाथा काल के अधिकांश कवि राज्याश्रित होते थे) पर प्रश्न उठाने की क्षमता रखना ही सच्चे साहित्य और सच्ची कविता का परिचायक है। आज के समय में साहित्यकारों को आवश्यकता है कि वे समाज में व्याप्त वैमनस्यता को कम करने के उपायों पर विचार करते हुए ऐसे सृजन की ओर अग्रसर हों जो सामाजिक समरसता की अभिव्यक्ति कर सके। साहित्य को कल्पना के आकाश से उतारकर यथार्थ के धरातल पर खड़ा करने की आवश्यकता है।

आज विश्व अनेक प्रकार के वैचारिक, धार्मिक, जातीय और आर्थिक संघर्षों से जूझ रहा है। संचार क्रांति ने दूरियों को तो कम किया है, किन्तु मनुष्यों के बीच भावनात्मक दूरी कई बार बढ़ती हुई दिखाई देती है। सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों ने अभिव्यक्ति को सहज बनाया है, परंतु साथ ही असत्य, घृणा और भ्रम के प्रसार को भी बढ़ावा दिया है। ऐसे समय में साहित्यकार का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। उसे सत्य, विवेक और संवेदना का पक्षधर बनकर समाज को सही दिशा दिखानी होगी। साहित्य केवल शब्दों का संयोजन ही नहीं, बल्कि समाज की आत्मा का स्वर भी होता है। साहित्य की जिम्मेदारी है कि वह वैमनस्यता के रेगिस्तान में समरसता के फूल खिलाए।

पर्यावरणीय संकट भी वर्तमान वैश्विक परिदृश्य की एक बड़ी चुनौती है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जल-संकट तथा प्रदूषण जैसी समस्याएं मानव अस्तित्व के लिए खतरा बनती जा रही हैं। साहित्यकार प्रकृति और मानव के बीच टूटते संबंधों को अपनी रचनाओं में स्थान देकर समाज को जगाने का कार्य कर सकता है। भारतीय साहित्य की परंपरा में प्रकृति को सदैव जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। आज आवश्यकता है कि साहित्य इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन-जागरण का माध्यम बने। वर्तमान भारतीय समाज की सबसे बड़ी समस्या जिम्मेदारी को न समझना दिखाई देता है। हम मूल अधिकारों की प्राप्ति के लिए तो लड़ रहे हैं, पर मूल कर्तव्यों का पाठ पढ़ने से बच भी रहे हैं। अथर्ववेद के द्वादश खंड का सूक्त 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' को भी समझना होगा और उसका अनुसरण भी करना होना। सुविधाओं का दानव प्रकृति की कोमलता को अपना ग्रास न बना लें इस पर साहित्यिक विमर्श और सृजन आवश्यक है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और तकनीकी विकास ने मानव जीवन को अभूतपूर्व सुविधाएं प्रदान की हैं, किंतु इसके साथ अनेक नैतिक प्रश्न भी खड़े हुए हैं। मशीनें मनुष्य का कार्य तो कर सकती हैं, परंतु उसकी संवेदनाओं का स्थान नहीं ले सकतीं। साहित्य का क्षेत्र मानवीय भावनाओं, अनुभूतियों और संबंधों का क्षेत्र है। इसलिए साहित्यकारों को यह सुनिश्चित करना होगा कि तकनीकी प्रगति के इस युग में मानवीय मूल्यों का ह्रास न होने पाए। साहित्य मनुष्य को मशीन बनने से बचाने का सबसे प्रभावी माध्यम है।

आज विश्व के अनेक भाग युद्ध और हिंसा की विभीषिका से प्रभावित हैं। लाखों लोग विस्थापन, भूख और असुरक्षा का जीवन जीने को विवश हैं। ऐसे समय में साहित्यकार का दायित्व केवल घटनाओं का वर्णन करना नहीं, बल्कि शांति, सह-अस्तित्व और मानवता के पक्ष में जनमत तैयार करना भी है। देश को कबीर की साखी का स्वर, निराला का चिंतन, प्रेमचंद के हीरा मोती, महादेवी वर्मा के गिल्लू की

आवश्यकता है। आज के साहित्यकारों को भी उसी परंपरा को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। साहित्यकारों को आवश्यकता है कि वे सृजन में कल्पना और यथार्थ में समन्वय बनाते हुए संस्कृति, संस्कार, विचार को पोषित करें और युद्ध को बुद्ध तक ले जाने की दिशा में आगे बढ़ें।

भारतीय संस्कृति सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को लेकर चलती रही है। यह विचार आज के वैश्विक परिदृश्य में और भी प्रासंगिक हो गया है। जब विश्व विभिन्न प्रकार के विभाजनों से जूझ रहा हो, तब साहित्य को मानवता के साझा मूल्यों को सामने लाने का कार्य करना चाहिए। साहित्य भाषा, क्षेत्र और राष्ट्र की सीमाओं से परे जाकर मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है। यही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में साहित्यकार की भूमिका केवल दर्शक की नहीं, बल्कि सक्रिय परिवर्तनकारी की है। साहित्यकारों को अपने समय की चुनौतियों से मुंह मोड़ने के बजाय उनका साहसपूर्वक सामना करना होगा। उन्हें ऐसी रचनाएं सृजित करनी होंगी जो समाज में संवेदना, न्याय, समानता, पर्यावरण चेतना और विश्वबंधुत्व की भावना को सशक्त करें। जब साहित्य अपने युग की समस्याओं से संवाद करता है और समाधान की दिशा में समाज का मार्गदर्शन करता है, तभी वह अपनी वास्तविक सार्थकता प्राप्त करता है। यही आज के वैश्विक परिदृश्य में हमारी भूमिका है और यही साहित्य का शाश्वत धर्म भी।

अंत में हरिशंकर परसाई की इस विचारधारा के साथ उपसंहार कि "साहित्य-सृजेता को स्वतंत्र होना ही चाहिए, तभी उसका स्वर निर्भय और स्वतंत्र होगा। शासन का पिछलग्गू साहित्य, समाज को पतन की ओर ले जाएगा।"

-साभार
श्री विश्वनाथ तिवारी 'विश्व'

विश्वनाथ तिवारी 'विश्व' हिंदी गीत कविता के समकालीन हस्ताक्षर हैं जो अपनी वीर रस की कविताओं, गीतों एवं प्रभावी संचालन के लिए जाने जाते हैं। आपका जन्म स्थान साहित्य और शौर्य की धरती जनपद उन्नाव है। वर्तमान में आप जनपद उन्नाव में बेसिक शिक्षा विभाग में नौनिहालों के भविष्य संवारने में लगे हुए हैं। आपकी रचनाएं समय-समय पर देश की प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं और साझा संकलनों में प्रकाशित होती रहती हैं।

शर्म की बात

नेपाल की राजधानी काठमांडू की एक व्यस्त सड़क पर एक छोटी-सी बेकरी थी। सुबह होते ही वहां ताजी ब्रेड, केक, पेस्ट्री और गरम-गरम बन की खुशबू पूरे बाजार में फैल जाती थी। दूर-दूर से लोग नाश्ता करने वहां आते थे।

एक ठंडी सुबह लगभग दस वर्ष का एक दुबला-पतला बालक बेकरी के बाहर खड़ा शीशे के भीतर सजे स्वादिष्ट व्यंजनों को बड़े ध्यान से देख रहा था। उसके कपड़े पुराने थे, पैरों में घिसी हुई चप्पलें थी और चेहरे पर भूख साफ झलक रही थी। हां, वह किसी से कुछ मांग नहीं रहा था। पर उन व्यंजनों को देखकर मन ही मन संतोष करने की कोशिश कर रहा था।

बेकरी के मालिक ने उसे देखा और ऊंची आवाज में कहा-

"अरे, यहां क्यों खड़े हो? अगर कुछ खरीदना नहीं है तो आगे बढ़ो।"

बालक चुपचाप सिर झुकाकर वहां से हटने लगा। तभी बेकरी में काम करने वाला तेरह वर्षीय लड़का तेनजिन दौड़कर आया। अपने हिस्से का गरम बन और एक कप दूध उस बालक के हाथ में देते हुए बोला-

"लो दोस्त, उधर बैठकर आराम से खा लो।"

बालक की आंखें भर आईं। उसने धीरे से कहा-

"धन्यवाद।"

मालिक ने यह देखा तो बोला-

"तेनजिन, तुमने अपना नाश्ता दे दिया। अब दोबारा मत मांगना।"

तेनजिन मुस्कराकर बोला-

"कोई बात नहीं मालिक, मैं बाद में खा लूंगा।"

कुछ ग्राहक उस समय वहां बाहर बैठकर चाय पी रहे थे। उनमें से एक हंसते हुए बोला-

"देखो, एक गरीब दूसरे गरीब पर बड़ा उपकार कर रहा है।"

दूसरा ग्राहक बोला-

"ऐसे बच्चे तो भीख मांगने के लिए ही पैदा होते हैं।"

ये सारी बातें सुनकर तेनजिन का चेहरा गंभीर हो गया। उसने पहली बार दृढ़ आवाज में कहा-

"कृपया हमें भिखारी मत कहिए। हम मेहनत करके खाते हैं। मेहनत

करने वाला कभी छोटा नहीं होता।''

दुकान में एकदम सन्नाटा छा गया। फिर एक ग्राहक ने पूछा–

''अगर इतने स्वाभिमानी हो तो इस उम्र में काम क्यों करते हो?''

तेनजिन ने शांत स्वर में उत्तर दिया–

''मेरे पिता पहाड़ों में सामान ढोने का काम करते थे। एक दुर्घटना में उनकी टांग टूट गई। अब वे काम नहीं कर सकते। मां ऊन से कपड़े बुनती हैं, लेकिन उससे घर का खर्च पूरा नहीं चलता। इसलिए मैं सुबह बेकरी में काम करता हूं और दोपहर बाद स्कूल जाता हूं।''

बोलते हुए कुछ रुककर फिर उसने आगे कहा–

''हर महीने जो मजदूरी मिलती है, मैं मां को दे देता हूं। मां बहुत सोच-समझकर घर चलाती हैं। हम कम खाते हैं, लेकिन किसी के सामने हाथ नहीं फैलाते।''

वहीं एक बुजुर्ग ग्राहक ने मुस्कराकर पूछा–

''तुम्हारा कोई सपना भी है?''

तेनजिन की आंखें चमक उठीं–

''हां। मेरी छोटी बहन दीया पढ़ाई में बहुत तेज है। मैं चाहता हूं कि वह डॉक्टर बने। हमारे पहाड़ी गांव में अस्पताल दूर है। कई लोग समय पर इलाज न मिलने से परेशान रहते हैं। मैं चाहता हूं कि एक दिन मेरी बहन अपने गांव के लोगों का इलाज करे।''

सुनते हुए एक युवक हंस पड़ा–

''इतनी गरीबी में डॉक्टर बनने का सपना? यह तो दिन में देखे जाने वाले सपने जैसे हैं।''

तेनजिन मुस्कराया–

''सपने गरीब और अमीर देखकर नहीं आते। सपने तो मेहनत करने वालों के साथी होते हैं। अगर सपना ही न हो, तो मेहनत करने की ताकत भी नहीं मिलती।'' तेनजिन की यह बात सुनकर सभी लोग चुप हो गए।

थोड़ी देर बाद एक अध्यापक, जो वहां नाश्ता कर रहे थे, आगे आए। उन्होंने जेब से कुछ पैसे निकालकर तेनजिन की ओर बढ़ाते हुए कहा–

''इसे रख लो बेटा!''

तेनजिन ने विनम्रता से हाथ जोड़ लिए–

''धन्यवाद सर, लेकिन बिना मेहनत का पैसा मैं नहीं ले सकता। यदि आप सचमुच मेरी मदद करना चाहते हैं, तो मेरी बहन के लिए कुछ किताबें खरीद दीजिए। वही हमारे लिए सबसे बड़ा उपहार होगा।''

अध्यापक उसकी बात सुनकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने उसी समय पास के एक पुस्तक विक्रेता से नई किताबें, कॉपियां और स्कूल का बैग खरीदकर तेनजिन को दे दिया। इसे देख बेकरी के मालिक की आंखें भी नम हो गईं। उन्हें अपने व्यवहार पर पछतावा हुआ। उन्होंने कहा–

''तेनजिन, आज से तुम्हें काम के साथ पढ़ाई के लिए भी समय मिलेगा। तुम्हारी पढ़ाई और तुम्हारी बहन की फीस की चिंता अब मैं करूंगा... तुम नहीं...''

सुनते ही तेनजिन ने कृतज्ञता से उनका धन्यवाद किया।

कुछ वर्षों बाद दीया ने कठिन परिश्रम से चिकित्सा की पढ़ाई पूरी की और अपने पहाड़ी क्षेत्र में एक स्वास्थ्य केंद्र खोल दिया। गांव के लोग गर्व से कहते थे–

''यह उसी भाई की मेहनत का फल है जिसने अपने हिस्से का भोजन बांटना सीखा और अपनी मेहनत की कमाई से अपनी बहन के सपनों को पंख दिए।''

तेनजिन आज भी बच्चों से केवल एक ही बात कहता है–

''गरीबी कभी शर्म की बात नहीं होती। शर्म की बात है मेहनत छोड़ देना। मेहनत की कमाई छोटी हो सकती है, लेकिन उसका सम्मान सबसे बड़ा होता है।'

–साभार
श्री आशीष आनंद आर्य

'शर्म की बात' नामक यह कहानी श्री आशीष आनंद आर्य की पुस्तक 'कदम पर और...' से ली गई है। यह भारतीय नौसेना में वेपन-आर्टिफिशर के रूप में बीस साल सेवा प्रदान करने के उपरांत वर्तमान में विद्युत निर्मात्री नवरत्न कंपनी एनएचपीसी लिमिटेड के राजभाषा विभाग में कार्यरत हैं। कहानी, उपन्यास, कविता, व्यंग्य जैसी विभिन्न विधाओं में इनकी करीब एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। एक मूर्धन्य साहित्यकार होने के साथ-साथ ही यह कुशल चित्रकार भी हैं। देश भर की विभिन्न चित्रकला-दीर्घाओं में 25 से ज्यादा एकल तथा सामूहिक चित्रकला प्रदर्शनियों का हिस्सा रह चुके हैं।

कार्यालयीन टिप्पणियां

Accepted on trial basis	परीक्षण के आधार पर स्वीकृत
According to convenience	सुविधानुसार
Accumulated balance	संचित शेष
Acquisition of target	लक्ष्य प्राप्ति
Address all concerned	सर्वसंबंधित को लिखा जाए
After adequate consideration	समुचित विचार के बाद
As laid down	यथा अधिकथित
Consumption ceiling	अधिकतम उपभोग सीमा
Corrections and alterations	शोधन और परिवर्तन
Ex-post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी
Forbidden zone	निषिद्ध क्षेत्र
In quest of	की खोज में
Pensionary liability	पेंशन संबंधी देयता
Please expedite compliance	शीघ्र अनुपालन कीजिए
Quick-closeout rates	शीघ्र समापन दरें
Under the auspices of	के तत्वावधान में

-हिंदी टंकण प्रशिक्षण- 09 फरवरी से 13 फरवरी 2026

59वें दीक्षान्त समारोह की कुछ झलकियां

संपादक- श्री विजय कुमार पाण्डेय
राजभाषा अधिकारी
officer1_rp@iitk.ac.in

ईमेल: skmisra@iitk.ac.in, hindi_cell@iitk.ac.in
वेब: https://www.iitk/.ac.in/new/antas

संपर्क:
राजभाषा प्रकोष्ठ
प्रथम तल, प्री-इंजीनियरिंग बिल्डिंग
ब्लाक-एफ (कारगिल चौराहे के पास)
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)
पिन- 208016
दूरभाष: 0512-259-7122

फेसबुक | एक्स | राजभाषा प्रकोष्ठ | ई-पत्रिका | लिंक्ड इन | इंस्टाग्राम | यूट्यूब

ISSN : 3107-7757